राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

09 ड्रीम गर्ल 2 के बाद फिर राज शांडिल्य के साथ काम करेंगे ... | जब लात पड़ने वाली हो..., शमी ने संन्यास को लेकर एमएस धोनी की ... 11

वर्ष : 15 | अंक : 101 | नई दिल्ली, सोमवार, 22 जुलाई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

संक्षिप्त खबरें

पीएम मोदी व राहुल गांधी ने खरगे को दी जन्मदिन की बधाई

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को जन्मदिन की बधाई दी और उनके लंबे एवं स्वस्थ जीवन की कामना की। खरगे ने शुभकामनाओं के लिए प्रधानमंत्री का आभार जताया। प्रधानमंत्री ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे को जन्मदिन की शुभकामनाएं। आपके लंबे और स्वस्थ जीवन की कामना है। प्रधानमंत्री के इस पोस्ट पर खरगे ने लिखा, शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद मोदी जी। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के जन्मदिन पर रविवार को उन्हें शुभकामनाएं दीं और कहा कि उनकी अथक सेवा और जनता के हितों के प्रति समर्पण प्रेरणादायी है। खरगे आज 82 वर्ष के हो गए।

जम्मू-कश्मीर: राजौरी सड़क दुर्घटना में दो की मौत, छह घायल

जम्मू। जम्मू-कश्मीर में राजौरी जिले की नौशेरा तहसील में रविवार को एक कैब के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने से कम से कम दो लोगों की मौत हो गई और छह घायल हो गए। पुलिस ने बताया कि यात्रियों को लेकर थंडिकास्सी से लाम की ओर जा रही कैब चलान गांव के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई। चालक की पहचान अरुण कुमार के रूप में की गई जो मौके पर ही मृत पाया गया। जबकि बगलाव के मोहम्मद दीन ने उप-जिला अस्पताल नौशेरा में चोटों के कारण दम तोड़ दिया।

केदारनाथ यात्रा मार्ग पर भूस्खलन, पत्थरों में दबने से तीन श्रद्धालुओं की मौत

देहरादून। उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग जनपद अंतर्गत, भगवान शिव के ग्यारहवें ज्योर्तिलिंग श्री केदारनाथ धाम के पैदल यात्रा मार्ग पर रविवार सुबह करीब साढ़े सात बजे के करीब तीन अलग, अलग स्थानों पर भूस्खलन हो गया। इस दौरान, पहाड़ से गिरे पत्थरों और मलवा की चपेट मे आने से तीन श्रद्धालुओं की मृत्यु हो गई। जबकि पांच अन्य को घायल अवस्था में अस्पताल भेजा गया है। रूद्रप्रयाग के जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि गौरीकुण्ड से लगभग 3 कि.मी. आगे श्री केदारनाथ धाम जाने वाले पैदल मार्ग पर चीरबासा के पास लगभग 50 मीटर के दायरे में तीन अलग-अलग स्थानों पर ऊपर पहाड़ी से मलबा पत्थर आने से राह चल रहे पैदल यात्री इसकी चपेट में आ गए।

आग का गोला बनी वैन, 5 बच्चों सहित 9 झुलसे

बुलंदशहर। यूपी के बुलंदशहर में रविवार सुबह बड़ा हादसा हो गया। यहां गंगा स्नान को जा रहे श्रद्धालुओं से भरी मारुति वैन में अचानक आग लग गई। हादसे में 4 महिलाएं और 5 बच्चे झुलस गए। फिलहाल सभी को इलाज के लिए हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार कार सवार सभी श्रद्धालु जहांगीराबाद के ककरई गांव के रहने वाले थे और गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अनूपशहर में गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। प्राप्त जानकारी के अनुसार मारुति वैन को ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी जिसके बाद वैन में लगे सीएनजी सिलेंडर में से गैस लीक होने लगी और देखते ही देखते वैन ने आग पकड़ ली। घायलों को पहले इलाज के लिए जहांगीराबाद सीएचसी सेंटर में भर्ती कराया गया था लेकिन गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें हायर मेडिकल सेंटर रेफर किया गया। इसके बाद मौके पर पहुंची अग्निशमन विभाग की गाड़ी ने आग का काबू पाया।

संसद के बजट सत्र से पहले सरकार ने बुलाई सर्वदलीय बैठक, सभी ने रखी अपनी बात

सर्वदलीय बैठक में उठी नीट, नेम प्लेट और विशेष राज्य के दर्जे की मांग

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। संसद के बजट सत्र से पहले सरकार द्वारा बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में एनडीए में शामिल सरकार की सहयोगी जदयू से संजय झा और लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) से केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग की। जदयू ने कहा कि अगर विशेष राज्य का दर्जा देने में कोई दिक्कत है तो फिर बिहार को विशेष पैकेज दिया जाए।

विपक्षी पार्टी राजद ने भी बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग की। वहीं, वाईएसआर कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश में कानून-व्यवस्था का मुद्दा उठाते हुए राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग करने के साथ ही राज्य को विशेष राज्य का दर्जा देने की भी मांग की। बीजू जनता दल ने सर्वदलीय बैठक में ओडिशा को भी विशेष राज्य का दर्जा देने का मुद्दा उठाया। जदयू ने बिहार में लगातार आने वाली बाढ़ के मुद्दे को उठाते हुए भारत सरकार से इस पर कदम उठाने और पड़ोसी देश नेपाल से भी बात करने की मांग की। कांग्रेस ने सर्वदलीय बैठक में लोकसभा में डिप्टी स्पीकर बनाने और यह पद विपक्ष को देने की मांग की। कांग्रेस ने इसके साथ ही नीट मामले पर भी सदन में चर्चा की मांग की। कांग्रेस से गौरव गोगोई, आप से संजय सिंह, सपा से रामगोपाल यादव, एआईएमआईएम से असदुद्दीन ओवैसी और लेफ्ट दलों सहित अन्य कई राजनीतिक दलों के नेताओं ने कावंड़ यात्रा के दौरान नेम प्लेट लगाने के योगी सरकार के फैसले को बैठक में उठाया। बीजद ने ओडिशा और वाईएसआर कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश में कानून-व्यवस्था का मुद्दा भी सर्वदलीय बैठक में उठाया।

सर्वदलीय बैठक से बाहर आने के बाद एनसीपी (अजित पवार) गुट के सांसद प्रफुल्ल पटेल ने मीडिया से बात करते हुए उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार से नेम प्लेट को लेकर किए गए फैसले को वापस लेने की मांग की। इस बीच कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने दावा किया है कि सर्वदलीय बैठक में जनता दल-यूनाइटेड ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने का मुद्दा उठाया है। इसी तरह से एक रणनीति के तहत सरकार के घटक तेलुगू देशम पार्टी ने नहीं बल्कि वाईएसआर कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा देने का मामला उठाया है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में रविवार को हुई सर्वदलीय बैठक में जदयू नेता ने बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग की। वाईएसआर कांग्रेस पार्टी नेता ने आंध्र प्रदेश को विशेष राज्य का दर्जा देने की मांग की। हैरानी की बात यह है कि टीडीपी नेता इस मामले पर चुप रहे। कुछ देर बाद एक अन्य पोस्ट में उन्होंने लिखा, राजनीतिक परिदृश्य किस तरह बदल गया है।

विपक्ष को मिले लोकसभा उपाध्यक्ष का पद : कांग्रेस

नई दिल्ली। संसद के मानसून सत्र से एक दिन पहले सरकार की ओर से बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में रविवार को कांग्रेस ने लोकसभा उपाध्यक्ष पद विपक्ष को देने की मांग करते हुए कहा है कि बेरोजगारी, महंगाई, किसानों की समस्या तथा नीट पेपर लीक जैसे मुद्दों पर व्यापक चर्चा होनी चाहिए।

कांग्रेस सूत्रों के अनुसार सर्वदलीय बैठक में कांग्रेस नेता तथा लोकसभा में पार्टी के उपनेता गौरव गोगोई ने लोकसभा में उपाध्यक्ष का पद विपक्ष को देने का मुद्दा उठाया और कहा कि बैसाखियों पर चल रही सरकार में विपक्ष की भूमिका महत्वपूर्ण है इसलिए उपाध्यक्ष पद विपक्षी दलों को दिया जाना चाहिए। उन्होंने सरकार पर सत्ता का दुरुपयोग करने का भी आरोप लगाया और कहा कि वह केंद्रीय एजेंसी का मनमानी तरीके से इस्तेमाल कर रही है। पार्टी के राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी ने बैठक के बाद संसद भवन परिसर में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि परंपरागत तौर पर सर्वदलीय बैठक इसलिए होती है ताकि सदन की कार्यवाही अच्छी चले और विपक्षी दलों को सदन में जनता से जुड़े मुद्दे उठाने का पूरा मौका मिले। उन्होंने कहा, हम सदन में महंगाई, बेरोजगारी, किसानों के मुद्दे, मेडिकल प्रवेश परीक्षा नीट में हुई धांधली जैसे मुद्दों पर चर्चा करना चाहते हैं।

इसके अलावा देश की सुरक्षा और चीन की तरफ से जारी घुसपैठ और सीमा पर बढ़ती सुरक्षा की चुनौती, संसद भवन परिसर में स्थापित महापुरुषों की मूर्तियों को हटाने, किसान, मजदूर, मणिपुर, एनईईटी पर हम चर्चा करने का पूरा प्रयास करेंगे। कांग्रेस नेता ने कहा, सबसे बड़ा मुद्दा यह है कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार संविधान, इसके मूल्यों और परंपरा की हत्या कर रही है। सरकार संविधान विरोधी है और इसीलिए उसने बाबा साहब अंबेडकर की मूर्ति हटाई है क्योंकि वह संविधान निमार्ता थे। संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग हो रहा है, बेरोजगारी और महंगाई सरकार की नीतियों के कारण लगातार बढ़ रही है। जम्मू-कश्मीर, मणिपुर में जारी हिंसा जैसे कई मुद्दे हैं जो लोगों से जुड़े हैं और हम ये सब मुद्दे उठाएंगे।

विशेष अदालत ने तीन अभियुक्तों को हिरासती पूछताछ के लिए आदेश

नीट प्रश्न पत्र लीक मामला : तीन अभियुक्तों की सीबीआई रिमांड

प्रात : किरण

पटना। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से आयोजित राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा 2024 के प्रश्न पत्र लीक मामले में बिहार में पटना की एक विशेष अदालत ने गिरफ्तार किए गए तीन अभियुक्तों को हिरासती पूछताछ के लिए 10 दिनों की पुलिस रिमांड पर केंद्रीय जांच ब्यूरो को सौंपे जाने का आदेश दिया। सीबीआई ने पटना से गिरफ्तार किए गए राजस्थान के भरतपुर मेडिकल कॉलेज के छात्र कुमार मंगलम विश्नोई और दीपेंद्र शर्मा तथा एक सेटर शशिकांत पासवान को रविवार को विशेष प्रभारी न्यायिक दंडाधिकारी धनंजय पांडे के समक्ष उनके आवासीय कार्यालय पर पेश किया, जहां इन तीनों अभियुक्तों को न्यायिक हिरासत में लिया गया। उसके बाद सीबीआई ने अदालत के समक्ष एक आवेदन दाखिल कर इन तीनों अभियुक्तों से हिरासती पूछताछ के लिए पुलिस रिमांड पर दिए जाने की प्रार्थना की।

आवेदन स्वीकार करते हुए अदालत ने इन तीनों अभियुक्तों को 10 दिनों की पुलिस रिमांड पर हिरासती पूछताछ के लिए सीबीआई को सौंपे जाने का आदेश दिया। गौरतलब है कि 05 मई को पूरे देश में नीट 2024 की परीक्षा आयोजित की गई थी। इस परीक्षा के दौरान गड़बड़ी करने के आरोप में पटना के शास्त्रीनगर थाना प्रभारी अमर कुमार ने कुछ लोगों को गिरफ्तार किया और शास्त्रीनगर थाना कांड संख्या 358/2024 के रूप में एक प्राथमिकी दर्ज की। बाद में मामला आर्थिक अपराध ईकाई को सौंप दिया गया। उसके बाद प्रश्न पत्र लीक होने का मामला उजागर हुआ और केंद्र सरकार ने मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी। इसके बाद 23 जून 2024 को सीबीआई अपनी प्राथमिकी आर सी 224/ 2024 के रुप में भारतीय दंड विधान की धारा 120 बी, 406, 407, 408 और 409 के तहत दर्ज करने के बाद अनुसंधान कर रही है। अदालत में यह मामला आर सी 6 ई/ 2024 के रूप में दर्ज है। इस मामले में अभी तक करीब 35 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है और सीबीआई कई लोगों को अदालत की अनुमति से पुलिस रिमांड पर लेकर हिरासती पूछताछ कर रही है।

दो सॉल्वर समेत तीन आरोपी गिरफ्तार : सीबीआई ने बिहार की राजधानी पटना से दो सॉल्वर समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। सीबीआई ने नीट पेपर मामले में अब तक सात सॉल्वर को गिरफ्तार किया है। सीबीआई द्वारा पकड़े गए आरोपी रॉकी ने पूछताछ में कई खुलासे किए हैं। अब तक की पूछताछ में सीबीआई को अहम सुबूत मिले हैं। इसके अलावा एजेंसी की रडार पर कुछ और परीक्षा सेंटर भी हैं। इससे पहले सीबीआई ने सॉल्वर गैंग से जुड़े पटना एम्स के चार मेडिकल छात्रों को बीते गुरुवार गिरफ्तार किया था। साथ ही रांची स्थित मेडिकल कॉलेज रिम्स की फर्स्ट ईयर की छात्रा सुरभि कुमारी को हिरासत में लिया गया था। छात्रा इस सॉल्वर गैंग की सदस्य बताई जा रही है। आरोप है कि लीक हुए प्रश्नपत्र का उत्तर उसने ही तैयार किया था। सीबीआई को अब तक की जांच में बड़े सुराग हाथ लगे हैं। पता चला है कि नीट-यूजी का पेपर झारखंड के हजारीबाग से लीक हुआ था। साथ ही कुछ छात्र-छात्राओं को प्रश्नों के उत्तर भी रटवाए गए थे।

सुप्रीम कोर्ट में 23 जुलाई को होगी ज्ञानवापी मामले पर सुनवाई

वाराणसी/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय मंगलवार को वाराणसी के ज्ञानवापी मामले की अगली सुनवाई करेगा। मामले की सुनवाई उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन सदस्यीय पीठ करेगी, जिसमें दो अन्य पदेन न्यायाधीश जस्टिस जेबी. पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्र भी होंगे। इससे पहले उच्चतम न्यायालय व्यास जी के तहखाने में पूजा के खिलाफ मस्जिद पक्ष की याचिका पर ट्रायल कोर्ट के याचिकाकर्ता शैलेंद्र व्यास को नोटिस जारी कर चुका है।

यह सुनवाई वाराणसी की जिला अदालत द्वारा व्यास जी के तहखाने में पूजा-अर्चना करने की अनुमति दिए जाने के खिलाफ दायर अंजुमन इंतजामिया कमेटी की याचिका पर होगी। वाराणसी की जिला अदालत ने शैलेंद्र व्यास की याचिका पर सुनवाई करते हुए व्यास जी के तहखाने में पूजा-अर्चना करने की अनुमति दी थी। जिसे इलाहाबाद हाईकोर्ट ने अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी के ऐतराज के बावजूद बरकरार रखा था।

केंद्र ने दिये निपाह वायरस पर सतर्कता बरतने के निर्देश

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्र सरकार ने केरल में निपाह वायरस के सामने आने पर सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं और एक केंद्रीय दल के तैनाती की है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने रविवार को यहां बताया कि केरल के मलप्पुरम जिले में निपाह वायरस का एक मामला सामने आया है, जिसमें प्रभावित की बाद में मृत्यु हो गई। केंद्र ने राज्य सरकार को तत्काल सार्वजनिक स्वास्थ्य उपाय करने की सलाह दी है। प्रभावित के परिवार, पड़ोस और क्षेत्र में सक्रिय मामले की खोज की जानी चाहिए। पिछले 12 दिनों के दौरान संपर्क में आने वाले लोगों को सख्ती से पृथक तथा संदिग्धों को अलग रखा जाना चाहिए। सभी के नमूने को प्रयोगशाला परीक्षण के लिए संग्रहण किया जाना चाहिए। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्य में एक बहु विशेषज्ञ दल को मामले की जांच करने, महामारी विज्ञान संबंधों की पहचान करने और तकनीकी सहायता के लिए तैनात किया है। इसके अतिरिक्त, राज्य के अनुरोध पर, आईसीएमआर ने रोगी प्रबंधन के लिए मोनोक्लोनल एंटीबॉडी भेजी है और संपर्कों से अतिरिक्त नमूनों की जांच के लिए एक मोबाइल बीएसएल-3 प्रयोगशाला कोझिकोड में पहुँच गई है। केरल में निपाह वायरस (एनआईवीडी) के प्रकोप की सूचना पहले भी मिल चुकी है, जिसमें सबसे हालिया प्रकोप 2023 में कोझिकोड जिले में हुआ था। चमगादड़ आमतौर पर इस वायरस के वाहक होते हैं और चमगादड़ से दूषित फल खाने से मनुष्य संक्रमित हो सकते हैं।

चुनावी बॉण्ड योजना : जांच संबंधी याचिका पर सुनवाई आज

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उच्चतम न्यायालय चुनावी बॉण्ड योजना की अदालत की निगरानी में जांच का अनुरोध करने वाली जनहित याचिका पर सोमवार को सुनवाई करेगा। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ दो गैर सरकारी संगठनों कॉमन कॉज और सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन की जनहित याचिका पर सोमवार को सुनवाई कर सकती है। दोनों गैर सरकारी संगठनों की जनहित याचिका में राजनीतिक दलों और कंपनियों के बीच स्पष्ट लेन-देन का आरोप लगाया गया है। चुनावी बॉण्ड योजना को एक घोटाला करार देते हुए याचिका में मुखौटा कंपनियों और घाटे में चल रही उन कंपनियों के वित्तपोषण के स्रोत की जांच का अधिकारियों को निर्देश देने का अनुरोध किया गया है, जिन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों को चंदा दिया।

पांच-सदस्यीय संविधान पीठ ने 15 फरवरी को भारतीय जनता पार्टी-नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार द्वारा शुरू की गई गुमनाम राजनीतिक चंदे की चुनावी बॉण्ड योजना रद्द कर दी थी। भारतीय स्टेट बैंक ने शीर्ष अदालत के फैसले के बाद निर्वाचन आयोग के साथ आंकड़े साझा किए थे, जिन्हें आयोग ने बाद में सार्वजनिक किया था।

बांग्लादेश: नहीं थम रही हिंसा, अबतक 114 की मौत

सीमा पर बीएसएफ के जवान हाई अलर्ट पर

प्रात : किरण

ढाका/एजेंसी। व्यापक स्तर पर कर्फ्यू और सख्त प्रावधानों के बावजूद बांग्लादेश में जारी आरक्षण विरोधी आंदोलन की आग फैलती जा रही है। हालत यह है कि राजधानी ढाका में शनिवार को हुए हिंसक टकराव में 10 लोगों की मौत हो गई और कम से कम 90 लोग घायल हो गए। मरने वालों में दो पुलिसकर्मी भी शामिल हैं। देश की राजधानी सहित अलग-अलग हिस्सों में आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान व्यापक स्तर पर हिंसक घटनाओं को देखते हुए शनिवार को पुलिस ने राजधानी के कई हिस्सों में सख्त कर्फ्यू लगा दिया। पुलिस को उपद्रवियों को देखते ही गोली मारने का आदेश दिया गया है। इसके बावजूद हिंसा थमने का नाम नहीं ले रही। बांग्लादेश में आरक्षण विरोधी आंदोलन के दौरान मंगलवार से शुरू हुई हिंसा में अबतक करीब 114 लोगों की मौत हो चुकी है। लगातार बिगड़ती हालत के बाद सरकार ने शुक्रवार आधी रात से कर्फ्यू घोषित कर दिया और देशभर में सेना की तैनाती की। भारत-बांग्लादेश सीमा पर बीएसएफ के जवान हाई अलर्ट पर

अगरतला। बांग्लादेश में गंभीर स्थिति को देखते हुए सीमा सुरक्षा बल के जवान हाई अलर्ट पर हैं। बीएसएफ के त्रिपुरा फ्रंटियर महानिरीक्षक पटेल पीयूष पुरुषोत्तम दास ने कहा कि पड़ोसी देश में आरक्षण विरोधी आंदोलन के कारण सीमा पर कानून-व्यवस्था की स्थिति को लेकर चुनौतियां हैं। आईजी ने मीडिया से कहा, त्रिपुरा में 856 किलोमीटर की सीमा पर सुरक्षा चुनौतियां भी हैं क्योंकि राज्य लगभग पूरी तरह से बांग्लादेश से घिरा हुआ है। इस समय प्रमुख चिंताओं में से एक वहां पढ़ रहे भारतीय छात्रों की सुरक्षित वापसी की है। उन्होंने आगे कहा, वरिष्ठ बीएसएफ कमांडर सीमा पर वर्तमान स्थिति पर कड़ी नजर रख रहे हैं।

नक्सलियों का झारखंड-बिहार बंद 25 को

प्रात : किरण

रांची/एजेंसी। झारखंड में प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के एक करोड़ के इनामी नक्सली नेता विवेक की पत्नी जया की गिरफ्तारी के विरोध में नक्सलियों ने झारखंड-बिहार बंद का ऐलान किया है। इस संबंध में बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी के प्रवक्ता आजाद ने 25 जुलाई को बिहार-झारखंड बंद का ऐलान किया है।प्रेस विज्ञप्ति के जरिये प्रवक्ता आजाद ने झारखंड पुलिस पर कई आरोप भी लगाए हैं। धनबाद शहर एक निजी क्लीनिक में कैंसर का इलाज कर रही बिहार भाकपा माओवादी संगठन की झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी की सदस्य और क्रांतिकारी महिला आंदोलन की नेत्री जया हेंब्रम उर्फ जया दी के साथ और तीन लोगों शांति कुमारी, डॉक्टर पांडे और उनके सहयोगियों को झारखंड पुलिस के द्वारा गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तारी के बाद जया दीदी को पुलिस अपने हिरासत में रखकर मानसिक और शारीरिक यातनाएं दे रही है। जया दीदी के साथ गिरफ्तार शांति कुमारी और डॉक्टर पांडे को पुलिस ने हत्या की नियत से गायब कर दिया है। क्रांतिकारी महिला आंदोलन की नेत्री जया दीदी पिछले कई दिनों से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से ग्रसित हैं। इसकी वजह से धनबाद में वे अपना इलाज करवा रही थीं, लेकिन कुछ गद्दारों की वजह से उनके बारे में सूचना पुलिस को मिल गई। इसके बाद पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।प्रेस रिलीज में यह भी लिखा गया है कि भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की बिहार-झारखंड स्पेशल एरिया कमेटी के क्रांतिकारी महिला आंदोलन की नेत्री जया दीदी और उनके साथ पकड़े गए तीन लोगों को गायब कर दिया गया है।

प्रदर्शन | **भारत ने अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में किया अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन**

भारत ने गणित ओलंपियाड में चार गोल्ड और एक सिल्वर मेडल जीता

प्रात : किरण

पीएम मोदी-प्रधान ने भाग लेने वाले छात्रों को दी बधाई

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक और बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ चौथा स्थान हासिल किया है। 1989 के बाद यह भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इंग्लैण्ड के बाथ में 65 वें अंतर्राष्ट्रीय गणित ओलंपियाड का आयोजन किया गया। इसमें भारत के 6 छात्रों ने भाग लिया था। भारत ने इस गणित ओलंपियाड में चार गोल्ड और एक सिल्वर मेडल जीता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने रविवार को अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में हिस्सा लेने वाले छात्रों को बधाई दी। श्री मोदी ने एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, यह बेहद खुशी और गर्व की बात है कि भारत ने अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन में चौथा स्थान प्राप्त किया है। हमारे दल ने चार स्वर्ण और एक रजत पदक हासिल किया है। यह उपलब्धि कई अन्य युवाओं को प्रेरित करेगी और गणित को और अधिक लोकप्रिय बनाने में मदद करेगी। वहीं श्री प्रधान ने एक्स पर कहा, उच्च विद्यालय के छात्रों की छह सदस्यीय भारतीय टीम को विश्व स्तर पर चौथा स्थान प्राप्त करने और अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में भारत द्वारा अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दर्ज करने के लिए बधाई। गुरुओं और शिक्षकों को बधाई। यह गुरुपूर्णिमा पर हमारे छात्रों की ओर से एक उपहार है। उन्होंने कहा, टीम इंडिया की उपलब्धि बहुत गौरवान्वित और खुश करने वाली है। मुझे यकीन है कि यह अन्य छात्रों को वैश्विक मंच पर उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करेगी। उल्लेखनीय है कि इंग्लैण्ड के बाथ में आयोजित 65वें अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड में भारत के 06 विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इस प्रतियोगिता में भारत ने चार स्वर्ण और एक रजत पदक जीता है। वर्ष 1989 के बाद इस प्रतियोगिता में यह भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।

मच्छरों की वजह से सालाना 7 लाख 25 हजार लोगों की मौत

इंसानों के लिए है यह सबसे खतरनाक जीव

नई दिल्ली/एजेंसी। इंसानों के लिए सबसे खतरनाक जीव की बात की जाए, तो उसका नाम जानकर आपको हैरानी होगी। कुछ महीने पहले ही खतरनाक जीवों की एक लिस्ट जारी की थी। इस लिस्ट में बाघ तो टॉप 10 में भी जगह बनाने से चूक गया। वहीं, शेर, चीता, सांप, बिच्छू ये भी इंसानों की जान लेने में पिछड़ गए। बता दें कि ये एक छोटा सा जीव है, जो हमारे घरों में भी पाया जाता है। इस जीव का नाम मच्छर है, जो न सिर्फ हमारा खून चूसकर खुद जिंदा रहता है, बल्कि वो ऐसा करके हमें मार डालता है। जानकारी के मुताबिक, मच्छरों की वजह से हर साल 7 लाख 25 हजार से ज्यादा लोग दुनियाभर में मारे जाते हैं। इन मच्छरों की वजह से डेंगू से लेकर मलेरिया जैसे रोग होते हैं। अगर सही समय पर इसका इलाज न किया जाए तो ये धीरे-धीरे इंसान को मौत की आगोश में खींच लेते हैं। ऐसे में मच्छर को कम आंकने की गलती बिल्कुल नहीं करना चाहिए। हमें इससे सावधान रहने की जरूरत है। मौत के आंकड़ों के मुताबिक, ये इंसानों के लिए सबसे खतरनाक माना जाता है।वहीं, मच्छरों के बाद अगर कोई दूसरा जीव इंसानों के लिए खतरनाक है तो वह कोई और नहीं, इंसान खुद है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, दुनियाभर में इंसान सालाना लगभग 4 लाख लोगों को मौत के घाट उतार देता है।

संक्षिप्त समाचार

रूड़की में कांग्रेस विधायक पर हिंदू परिवारों को निशाना बनाने का आरोप

रुड़की, एजेंसी। मंगलौर में पिछले दिनों कांग्रेस विधायक काजी निजामुद्दीन के समर्थकों की ओर से कस्बे में हिन्दू परिवारों को निशाना बनाने एवं उपद्रव करने के मामला सामने आया था। अब इसके विरोध में विश्व हिन्दू परिषद एवं बजरंग दल की ओर से महासभा का आयोजन किया जा रहा है। यह महासभा शनिवार दोपहर 12 बजे मंगलौर अब्दुल कलाम चौक पर होगी। इसे लेकर पुलिस प्रशासन भी तैयारियों में जुट गया है। वहीं अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती की गई है। पुलिस की ओर से दावा किया गया है कि इस मामले में अब तक नौ आरोपितों की गिरफ्तारी हो चुकी है। साथ ही पुलिस की ओर से 200 से अधिक आरोपितों को चिह्नित करते हुए उनकी गिरफ्तारी का प्रयास किया जा रहा है। बताते चलें कि रविवार की रात को कांग्रेस विधायक काजी निजा मुद्दीन के समर्थकों ने कस्बे में जमकर बवाल काटा था। महिलाओं से अभद्रता करने के साथ ही हिंदू परिवारों को निशाना बनाया था।

पूजा की आंखें अब भी देखेंगी दुनिया

रुड़की, एजेंसी। नगर में नेत्रदान के प्रति चलाए जा रहे जन जागरूकता अभियान के तहत तिलक मार्ग निवासी पूजा नारंग (40) के निधन पर महेश किंगर ने उनके पति कमल नारंग को नेत्रदान के लिए आग्रह किया। कमल नारंग ने अपनी पत्नी के नेत्रों को जिंदा रखने के लिए नेत्रदान के निर्णय लिया। गोपाल नारंग की सूचना पर आई बैंक एम्स ऋषिकेश की नेत्रदान की रेस्क्यू टीम में डॉ. कामना वर्मा और आलोक के साथ उनके निवास पर पहुंचे जहां टीम ने दोनों कॉर्निया सुरक्षित प्राप्त कर लिए। वहीं, पंजाब केसरी के पूर्व पत्रकार सुनील अग्रवाल के निधन पर उनके पुत्र सुमित अग्रवाल ने नेत्रदान कराया। यह नेत्रदान कार्यकर्ता अनिल कक्कड़ के आग्रह पर संभव हुआ।

आपदा से 133 मकान पूर्ण और आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त

चंपावत, एजेंसी। जिले में एक से 15 जुलाई तक हुई मूसलाधार बारिश से 133 मकान पूर्ण और आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गए हैं। इसमें सात मकान पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गए हैं। पीड़ित परिवारों को अन्य जगह शिफ्ट कर दिया गया है। आपदा विभाग से मिली जानकारी के अनुसार पांचों तहसीलों में अतिवृष्टि से काफी नुकसान हुआ है। चंपावत में 26, लोहाघाट में 56, बाराकोट में 23, पाटी में 20 और पूर्णागिरि में एक मकान आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हो गया है। प्रभावित परिवार के लोगों को 8.19 लाख रुपये की सहायता राशि वितरित की गई है। आवासीय भवनों के 83 आंगन और 43 आंशिक पक्के भवन क्षतिग्रस्त हो गए। चंपावत में दो, लोहाघाट में एक, बाराकोट में चार मकान पूरी तरह ध्वस्त हो गए थे। इन पीड़ित परिवारों को प्रशासन ने 9.10 लाख की धनराशि वितरित की है। इसके अलावा पाटी में एक आंशिक कच्चा मकान क्षतिग्रस्त हो गया। परिवार को चार हजार की सहायता राशि दी गई है। वहीं लोहाघाट, पाटी, पूर्णागिरि में एक-एक गोशाला क्षतिग्रस्त हो गई। इन पीड़ितों को नौ हजार रुपये की राशि वितरित की गई। आपदा के कारण दो महिलाओं मौत हो गई थी। इनके परिवारों को आठ लाख की सहायता राशि दी गई है।

पिंजरे में कैद हुआ हमलावर तेंदुआ

टनकपुर (चंपावत), एजेंसी। चंपावत हाईवे पर सूखीढांग और बस्टिया के बीच एक वर्ष से दहशत का पर्याय बना हमलावर तेंदुआ पिंजरे में कैद हो गया है। तेंदुए के ऊपरी जबड़े का एक दांत टूटा है और निचले जबड़े का एक दांत आधा है। रेंजर का कहना है कि इससे कठिन शिकार करने में दिक्कत होने से वह आसान शिकार ढूंढ रहा होगा। उसके हमलावार होने का एक कारण हो सकता है। चिकित्सक रेस्क्यू सेंटर रानीबाग हल्द्वानी में तेंदुए का मेडिकल परीक्षण करेंगे। इससे स्थिति स्पष्ट होगी। बूम वन रेंजर गुलजार हुसैन ने बताया कि नौ जुलाई को आठवें मील टिफिन टाप के समीप खटीमा के टिगरी चौराहा निवासी बाइक सवार बलवीर सिंह पर तेंदुए ने हमला कर दिया था। 11 जुलाई को आठवें मील के पास दो पिंजरे लगाए गए। शुक्रवार सुबह करीब 6-30 बजे तेंदुआ पिंजरे में कैद हो गया। तेंदुए की उम्र करीब पांच वर्ष बताई गई है। तेंदुए को रेस्क्यू सेंटर रानीबाग हल्द्वानी ले जाया जा रहा है।

उफान पर बह रही काली नदी, अलर्ट

पिथौरागढ़, एजेंसी। सीमांत जिले में काली नदी रौद्र रूप में बह रही है। बढ़ते जलस्तर को देखते हुए प्रशासन ने नदी तट पर रहने वाले लोगों को सावधानी बरतने की सलाह दी है।

काली नदी चेतावनी स्तर 889 मीटर से 889.30 मीटर पर बह रही है। इसे देखते हुए जिलाधिकारी रीना जोशी ने नदी किनारे वाले क्षेत्रों में आवागमन नहीं करने, खतरे के निकट स्थित परिवारों को ऊपरी सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के लिए चेतावनी प्रसारित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने जल स्तर बढ़ने पर धौलीगंगा जलाशय से अतिरिक्त पानी छोड़ने पर परस्पर सूचनाएं साझा करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सिंचाई विभाग को धारचूला, बलुवाकोट, जौलजीबी, बगड़ीहाट, पीपली, झूलाघाट, तालेश्वर आदि तटों पर टीम तैनात करने के भी निर्देश दिए।

मूसलाधार बारिश से थल तहसील के चौंसाला गांव में लक्ष्मण सिंह कार्की के आंगन की दीवार भरभरा कर गिर गई। इससे आठ कमरों के मकान को खतरा हो गया है। पीड़ित ने इसकी सूचना कोटगाड़ी पट्टी के राजस्व उप निरीक्षक प्रमोद सिंह कार्की के साथ आपदा प्रबंधन को दी है। उन्होंने आपदा प्रबंधन विभाग से आंगन की दीवार बनाए जाने की मांग की है।

उधर नाचनी के बेडूमहर गांव में आंगन दरकने से गोमती देवी का मकान खतरे की जद में आ गया है। प्रेम सिंह की गोशाला क्षतिग्रस्त हुई है। सैंणराथी से खेता तक सड़क जगह-जगह मलबा पटने से बंद हो गई है। पंचायत घर का पैदल मार्ग भी क्षतिग्रस्त हुआ है। प्रधान जगदीश मेहता ने क्षति की सूचना तेजम तहसील के आपदा केंद्र में दर्ज करा दी है। गौला गांव के गंगा सिंह मेहता ने बताया कि आबादी से लगे क्षेत्र में लगातार भूस्खलन हो रहा है। थल-मुनस्यारी सड़क

हरड़िया के नया बस्ती में 14 घंटे बंद रहकर शुक्रवार आठ बजे यातायात के लिए खुली। रामगंगा, जाकुला और भुजगड़ नदियों के साथ ही नाले, गधेरे उफान पर चल रहे हैं। थल-मुनस्यारी सड़क बनिक के पास भारी मलबा आने से तीन दिन से बंद है। इसके चलते मुनस्यारी आवागमन करने वाले लोगों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। मुनस्यारी-जौलजीबी सड़क मदकोट, बंगापानी के बीच घिंघरानी में मलबा आने से बंद हुई है। कैंठी में पेड़ सड़क पर गिर गया। मदकोट-बोना सड़क पर स्थित पुल खतरे की जद में आ गया है। सड़क टूटने से आवागमन भी बाधित है।

ग्राम सभा बोना में भूस्खलन के चलते त्रिलोक राम का मकान खतरे की जद में आ गया है। लगातार हो रही बारिश से जमीन धंस रही है। यूथ कांग्रेस के जिलाध्यक्ष विक्रम दानू ने एसडीएम से राजस्व टीम भेजकर प्रभावित परिवार को सुरक्षित स्थान पर शिफ्ट करने की मांग की है। मुनस्यारी ब्लॉक के मदकोट से वल्थी, डोल्मा, निर्तोली, झापुली, तोमिक, बौना धारखेत, रासी, गैला, को जोड़ने वाला मोटर मार्ग देवीबगड़ में क्षतिग्रस्त है। एक माह बीतने के बाद भी अभी तक मलबा नहीं हटाया गया है। यूथ कांग्रेस अध्यक्ष विक्रम दानू ने शीघ्र मलबा नहीं हटाने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। बंगापानी तहसील के वल्थी ग्राम पंचायत के देवीबगड़ तोक में भूस्खलन से 40 से अधिक परिवार खतरे की जद में आ गए हैं। भाजपा के बुनकर प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक विजय सिंह राणा ने डीएम को ज्ञापन भेज कर कहा कि मदकिनी नदी का रुख गांव की ओर हो गया है। उन्होंने नदी का डाइवर्जन किए जाने की मांग की। उधर गोल्फा में भी भूस्खलन से काफी क्षति हुई है। संवाद बारिश से चौंसाला-नौलड़ा की प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क बंद हो गई है। कोटगाड़ी से कुछ दूर चन्याटी के पास सड़क पर बृहस्पतिवार रात काफी मात्रा में मलबे के साथ पेड़ गिर गए। इससे चार किमी आगे छोलगाड़ के पास बनाया गया कलवर्ट क्षतिग्रस्त हो गया।

पवित्र गंगा नदी में अवैध खनन के मामले में मातृ सदन ने खुद की पैरवी, 26 जुलाई को सुनवाई करेगा हाईकोर्ट

नैनीताल, एजेंसी। उत्तराखंड में पवित्र पावन गंगा नदी में अवैध खनन को लेकर शुक्रवार को सुनवाई पूरी नहीं हो पाई है। उत्तराखंड उच्च न्यायालय इस मामले में आगामी 26 जुलाई को पुन- सुनवाई करेगा। हरिद्वार कनखल स्थित मातृ सदन और अन्य की ओर से दायर जनहित याचिकाओं पर न्यायमूर्ति रवीन्द्र मैठाणी और न्यायमूर्ति पकंज पुरोहित की युगलपीठ में सुनवाई हुई।

मातृसदन की ओर से कहा गया कि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) की ओर से गंगा नदी में खनन को पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया है। उच्च न्यायालय भी सीपीसीबी के आदेश का सख्ती से अनुपालन का निर्देश दे चुका है। इसके बावजूद गंगा नदी में अवैध खनन जारी है। रात के अंधेरे में खनन माफिया द्वारा गंगा नदी के सीने को चीरा जा रहा है। रायवाला से भोगपुर तक धड़ल्ले से अवैध खनन हो रहा है। प्रदेश सरकार की ओर से अवैध खनन पर रोक नहीं लगाई जा रही है। सरकार की ओर से कहा गया कि गंगा में अवैध खनन नहीं हो रहा है। इस मामले में मातृ सदन की ओर से स्वयं पैरवी की जा रही है। अदालत ने इसे गंभीरता से लेते हुए याचिकाकर्ता को मामले से जुड़े तथ्यों और साक्ष्यों के संबंध में लिखित नोट अगले शुक्रवार तक उपलब्ध कराने को कहा है। इस मामले में 26 जुलाई को अगली सुनवाई होगी।

अस्थायी पुल बनने से 14 दिन बाद स्कूल पहुंचे बच्चे

धारचूला(पिथौरागढ़), एजेंसी। लोनिवि ने सोबला से तीजम को जोड़ने वाले अस्थायी पुल का निर्माण कार्य पूरा कर लिया है। पुल बनने के बाद पांच जुलाई से स्कूल नहीं जा पा रहे बच्चे भी स्कूल पहुंचने लगे हैं। पांच जुलाई को भारी बारिश के कारण तीजम गाड़ के उफान में आने के कारण पुल बह गया था। इसके बाद से ग्रामीण परेशान थे। पुल के बहने के बाद तीजम के 22 बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे थे। शुक्रवार को लोनिवि ने यहां पर 18 मीटर अस्थायी लकड़ी के पुल का निर्माण कार्य पूरा कर दिया। निर्माण करने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता हरेंद्र सिंह ने लोनिवि का आभार प्रकट किया है। जेई बिरेंद्र कुमार आर्या ने बताया कि पुल का निर्माण कार्य पूरा करने के बाद आवाजाही शुरू कर दी है। दृष्टि से रेलिंग का निर्माण किया जा रहा है जिसे जल्द पूरा कर लिया जाएगा।

एचडीयू और बुजुर्ग वार्ड के खुले दरवाजे

बागेश्वर, एजेंसी। जिला अस्पताल के वार्ड में जल रिसाव होने के कारण चार वार्ड बंद किए गए थे। इनमें से दो वार्ड के दरवाजे मरीजों के लिए खोल दिए गए हैं। बीते दो जुलाई से जिला अस्पताल में जल रिसाव की समस्या बनी हुई है। इस कारण अस्पताल के चार वार्ड में ताला लगा दिया गया था। मरम्मत के बाद शुक्रवार को एचडीयू और बुजुर्ग वार्ड के दरवाजे खोल दिए गए हैं। कक्ष खुलते ही एचडीयू में छह मरीजों को भर्ती किया गया है। बच्चा वार्ड में अभी भी ताला लटका है। आईसीयू में नवजात शिशु स्टेबलाईजेशन यूनिट का संचालन किया जा रहा है। मरीज भर्ती नहीं किए जा रहे हैं। जिला अस्पताल के सीएमएस डॉ. वीके टम्टा ने बताया कि पिछले दो हफ्ते से वार्ड में पानी नहीं आ रहा है। कार्यदायी संस्था ने छत और गैलरी में जल रिसाव को रोकने के इंतजाम कर दिए हैं। दो वार्ड खोल दिए गए हैं। जल रिसाव की समस्या दोबारा होने की आशंका में अस्पताल में वैकल्पिक व्यवस्था की गई है। बच्चा वार्ड में अभी भी जल रिसाव और दीवारों से करंट लगने को खतरा बना हुआ है इसलिए वार्ड को अभी बंद किया है।

टनकपुर में जल्द मल्टी स्टोरी में खड़े हो सकेंगे वाहन

टनकपुर (चंपावत), एजेंसी। नगर में जल्द लोगों को चौपहिया वाहनों के लिए मल्टी स्टोरी पार्किंग की सुविधा मिल जाएगी। टैक्सी स्टैंड के पास 2.96 करोड़ की लागत से 79 कारों के पार्क करने के लिए पार्किंग का निर्माण किया गया है। पालिका को हस्तांतरण की प्रक्रिया शुरू हो गई है। जल्द पालिका की ओर से पार्किंग का संचालन शुरु होने की उम्मीद है।

बता दें कि मां पूर्णागिरि धाम के प्रमुख पड़ाव नगर क्षेत्र में हर समय मां पूर्णागिरि के श्रद्धालुओं का आना जाना लगा रहता है। कुमाऊं के वाहनों का दबाव रहता है। नगर में वाहन पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान की आवश्यकता बनी हुई है। मुख्यमंत्री घोषणा में शामिल योजना पर वर्ष 2021-

22 से कार्य शुरु हुआ। कार्यदायी संस्था उत्तराखंड पेयजल निगम लोहाघाट के परियोजना प्रबंधक गिरीश चंद्र पंत ने बताया कि 2.96 करोड़ की लागत से मल्टी स्टोरी पार्किंग का निर्माण कार्य पूरा होने के बाद हस्तांतरण के लिए पालिका को पत्र भेजा जा चुका है।

पार्किंग में ग्राउंड फ्लोर में 25 कार, प्रथम मंजिल में 27 और दूसरी मंजिल में 27 कार खड़ी की जा सकेंगी। इसका पालिका को हस्तांतरण की प्रकिया जारी है। बहरहाल, नगर में लोगों को जल्द कार पार्किंग की सुविधा मिल सकेगी। इससे यातायात में भी सुधार होगा।

तेजाब डाल चेहरा जला दूंगा, किशोरी की मां की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज

ऊधम सिंह नगर, एजेंसी। खटीमा में छेड़खानी का विरोध करने पर एक मनचले ने किशोरी को तेजाब डालकर चेहरा जलाने की धमकी दे डाली। पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध केस दर्ज कर लिया है। खटीमा में छेड़खानी का विरोध करने पर एक मनचले ने किशोरी को तेजाब डालकर चेहरा जलाने की धमकी दे डाली। पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध केस दर्ज कर लिया है। कोतवाली क्षेत्र महिला ने पुलिस को सौंपी तहरीर में कहा कि उनकी बेटे को एक युवक पिछले छह-सात महीने से परेशान कर रहा है। आरोपी बेटी का पीछा कर अभद्र टिप्पणियां करता है। इस पर बीती 16 फरवरी को उसके खिलाफ कोतवाली में केस दर्ज करवाया था। केस दर्ज होने के कुछ समय तक तो आरोपी शांत रहा लेकिन अब वह दोबारा बेटी को परेशान करने लग गया है। आरोप है कि 16 जुलाई को बाजार से लौटते समय आरोपी ने बेटी के साथ छेड़छाड़ की। विरोध करने पर उसने तेजाब डालकर चेहरा जलाने की धमकी दी। इसके बाद से बेटी सहमी हुई है और घर से बाहर भी नहीं निकल रही है। कहा कि अब आरोपी युवक घर पर आकर धमकी दे रहा है। पुलिस ने पीड़िता की मां की तहरीर पर चारूबेटा निवासी इसराइल के विरुद्ध केस दर्ज कर लिया है।

पछनई में भूकटाव से किसानों को लाखों का नुकसान

चंपावत, एजेंसी। जिला मुख्यालय से लगभग 39 किमी दूर ग्राम पंचायत पछनई में मूसलाधार बारिश से जगह-जगह उपजाऊ भूमि का भूकटाव हो रहा है। ग्राम प्रधान प्रताप सिंह ने बताया कि बारिश से पंचायत में लाखों रुपये का नुकसान हो गया है। लहलहाती खेती बर्बाद हो गई है। अधिकांश लोग अदरक, मिर्च, हल्दी और तेजपात की खेती करते हैं। मलबे में कई पौधे दब गए हैं। क्षेत्र में पहाड़ी से एक बोल्डर भी आवासीय मकान के ऊपर गिरने से काफी नुकसान हुआ। परिवार के लोग बाल-बाल बच गए। उन्होंने प्रशासन से जल्द से जल्द क्षति का आकलन कर मुआवजे की मांग की है।

गौला नदी में चैनलाइजेशन को लेकर सांसद के सामने भिड़े डीएम और विधायक, लंबे समय तक चली बहस

हल्द्वानी, एजेंसी। बीते शुक्रवार हल्द्वानी सर्किट हाउस में सांसद अजय भट्ट की अध्यक्षता में हुई दिशा की बैठक में दिशा उस वक्त दिशाहीन हो गई, जब लालकुआं विधायक डॉ. मोहन सिंह बिष्ट ने गौला नदी में चैनलाइजेशन का काम सिंचाई विभाग को देने पर आपत्ति जताई। इस मामले को लेकर विधायक और डीएम नैनीताल के बीच में जमकर बहस हुई।

पूरा विवाद आपदा के तहत गौला नदी में चैनेलाइजेशन को लेकर था जिसमें सिंचाई विभाग द्वारा वर्तमान में पोकलैंड लगाकर काम किया जा रहा है। जबकि विधायक ने सिंचाई विभाग को काम दिए जाने को लेकर आपत्ति जताई। वहीं डीएम वंदना का कहना था कि उनके द्वारा वन विभाग को या किसी अन्य एजेंसी से काम करवाने को कहा गया था। डीएम ने यह भी कहा कि आप जहां से कहेंगे वहीं

से काम करा देंगे। इस पर विधायक भड़क उठे और कहा कि मैं क्यों चाहूं किसी को, मैं तो काम चाह रहा हूं।

सामने ही काफी लंबे समय तक यह बहस चलती रही। अंत में सांसद को कहना पड़ा कि आखिर जिले में यह चल क्या रहा है इसी के साथ बैठक के बाद सांसद इसे मामूली सी घटना बताते हुए टालते नजर आए।

चंपावत स्थायी निवासी ही करेगा व्यापार संघ चुनाव की दावेदारी

लोहाघाट (चंपावत), एजेंसी। नगर लोहाघाट व्यापार मंडल चुनाव की गतिविधियां तेज हो गई है। व्यापार मंडल चुनाव को लेकर हुई बैठक में चुनाव की रूपरेखा तय की गई। नगर पालिका सभागार में जिला उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष सतीश जोशी की अध्यक्षता में हुई बैठक में चुनाव को लेकर चर्चा की गई।

चंपावत जिले के स्थायी व्यापारी ही व्यापार संघ चुनाव में दावेदारी कर सकते हैं। जुलाई 2018 से पहले से लोहाघाट में व्यापार कर रहे व्यापारी व्यापार संघ की सदस्यता में शामिल होंगे। अध्यक्ष और महामंत्री पद के लिए प्रत्याशी की आयु 35 वर्ष, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष के लिए 30 वर्ष होनी चाहिए। उसके पास व्यापार करने संबंधी छह वर्ष पूर्व का प्रमाण पत्र, जीएसटी रजिस्ट्रेशन, नगर पालिका की ओर से जारी दुकान का लाइसेंस,लिमिट या व्यापार संबंधी अन्य प्रमाण पत्र होने चाहिए। वोट देने या चुनाव लड़ने का अधिकार वोटर लिस्ट में नामित व्यक्ति को ही होगा। बताया कि चुनाव चार अगस्त को सुबह आठ बजे से तीन बजे तक राम लीला मैदान में होगा।

खस्ताहाल स्वास्थ्य सेवाएं बन रही परेशानी का सबब

धौलछीना(अल्मोड़ा), एजेंसी। जिले के दूरदराज के इलाकों में स्वास्थ्य सेवाएं खस्ता हालत में पहुंच गई हैं। हालत इतनी खराब है कि दूरदराज के क्षेत्रों में खोले गए अस्पतालों में प्राथमिक चिकित्सा भी बड़ी मुश्किल से होती है। ऐसे में यह अस्पताल महज रेफर सेंटरों में तब्दील होकर रह गए हैं। लेकिन स्वास्थ्य महकमा इन अस्पतालों की हालत सुधारने के लिए कोई कार्रवाई करना मुनासिब नहीं समझ रहा है।

जिले के भैंसियाछाना विकास खंड की बात करें तो यह क्षेत्र अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जिले का सीमावर्ती क्षेत्र है। सीमांत क्षेत्र के लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जा सके इसके लिए सेराघाट में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र खोला गया है। लेकिन यहां सुविधाएं नाम मात्र की है। इस अस्पताल में अगर कोई प्रसव पीड़िता भर्ती हो जाए तो संसाधनों के अभाव में उसे यहां से रेफर करना चिकित्सकों की मजबूरी बन जाती है। अस्पताल में एक्सरे समेत अन्य सुविधाएं उपलब्ध ही नहीं हैं। कभी कोई सड़क हादसा हो जाए तो उसके प्रभावितों को बमुश्किल प्राथमिक उपचार देकर यहां से रेफर कर दिया जाता है।

478 दिन गुजारने पड़े जेल में: सगे भाई की हत्या का आरोपी दोषमुक्त, 29 मई 2023 में इन धाराओं में हुआ था मुकदमा

नैनीताल, एजेंसी। हल्द्वानी में न्यायालय ने सगे भाई की हत्या के आरोपी को साक्ष्यों के अभाव में दोषमुक्त कर दिया।

हल्द्वानी में न्यायालय ने सगे भाई की हत्या के आरोपी को साक्ष्यों के अभाव में दोषमुक्त कर दिया। अभियोजन पक्ष के अनुसार दमुवाढूंगा काठगोदाम निवासी भूवन चंद आर्य पर उसकी सगी भाभी की ओर से एक मार्च 2023 को उसके पति महेश चंद्र के साथ मारपीट और तोड़फोड़ करने के आरोप में तहरीर दी गई थी। घायल महेश चंद्र को पहले हल्द्वानी के निजी अस्पताल और

फिर बरेली के निजी अस्पताल में ले जाया गया। वहां इलाज के दौरान 25 मार्च 2023 को उनकी मौत हो गई।

इसके बाद पुलिस ने हत्या के आरोप में केस दर्ज कर आरोपी भुवन चंद आर्य को 26 मार्च 2023 को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया था जहां से आरोपी को जेल भेज दिया गया था। विवेचना के बाद पुलिस ने 29 मई 2023 को अभियुक्त के खिलाफ हत्या की धारा 304 भारतीय दंड संहिता एवं 427 भारतीय दंड संहिता के तहत आरोप पत्र दाखिल किया।

अभियुक्त का पैरोकार न होने के कारण उसकी पैरवी करने के लिए न्याय मित्र अधिवक्ता हल्द्वानी बार एसोसिएशन के पूर्व सचिव राजन सिंह मेहरा को नियुक्त किया गया था। अभियोजन की ओर नौ गवाहों को कोर्ट में पेश किया गया। सभी साक्ष्यों का अवलोकन करने के बाद प्रथम अपर जिला जज अमनिंदर सिंह ने आरोपी भूवन चंद्र आर्य को दोष मुक्त कर दिया। भुवन को इस मामले में 478 दिन जेल में रहना पड़ा।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण

नई दिल्ली, सोमवार, 22 जुलाई, 2024

वृक्षारोपण कार्यक्रम शासन के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में शामिल, लापरवाही नही होगी बर्दाश्त : के धनलक्ष्मी

● बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि वृक्षारोपण 2024 को लेकर समाज के सभी लोगों का सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त करते हुए

प्रात : किरण संवाददाता

वर्ष 2024-25 में 24 लाख 54 हजार पौधारोपण के सफल क्रियान्वयन हेतु कलेक्ट्रेट सभागार में नोडल अधिकारी के धनलक्ष्मी सचिव मानवाधिकार आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। वर्ष 2024-25 वृक्षारोपण हेतु पौधारोपित स्थलों की जियो टैगिंग की जैसे विंदुओ पर चर्चा की। नोडल अधिकारी के. धनलक्ष्मी ने समस्त विभागों को वृक्षारोपण हेतु लक्ष्य पूर्ण करने के निर्देश दिये उन्होंने बताया कि वर्ष 2024 में आयोजित पेड़ लगाओ पेड़ बचाओं के अंतर्गत जनपद में 25 विभाग को आवंटित लक्ष्य 24 लाख 54 हजार 507 के सापेक्ष शत प्रतिशत प्राप्ति सुनिश्चित किये जाने हेतु 20 जुलाई को बृहद स्तर पर आयोजित किये जा रहे वृक्षारोपण कार्यक्रम में वृक्षारोपण की मॉनिटरिंग व सूचना के आदान हेतु कंट्रोल रूम की स्थापना की गई है विभागाध्यक्षों को सेक्टर मजिस्टेªट व मॉनिटरिंग करने हेतु विभिन्न जोनल मजिस्टेªट की डयूटी लगाई गई है। उन्होंने कहा कि जो विभाग इस कार्य में लापरवाही बरतेगा उनके विरूद्व आवश्यक कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने डीएफओ को निर्देशित करते हुये कहा कि समस्त विभागों से समन्वय स्थापित करते हुये निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप वृक्षारोपण का कार्य सम्पन्न कराया जाये। डीएफओ को निर्देशित किया गया कि वृक्षारोपण से पूर्व समस्त पौधशाला में पौधों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये तथा नर्सरियों की संख्या, स्थल व उपलब्ध पौधों की संख्या का विवरण उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि वृक्षारोपण 2024 को लेकर समाज के सभी लोगों का सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता प्राप्त करते हुए इसे वृहद जन आंदोलन के रूप में किया जाए। जनपद में ऐसा वातावरण सृजित किया जाए कि आम जनमानस भी स्वयंमेव से जुड़ जाए। उन्होंने डीएफओ को निर्देशित किया जो लक्ष्य विभागों को आवंटित कर दिया गया है लक्ष्य को सम्बन्धित अधिकारी पूर्ण करें। सभी विभाग ससमय पौधों का उठान कराना सुनिश्चित करें। वन एवं वन्य जीव विभाग को 5, 94, 108 संशोधित, पर्यावरण विभाग को 84, 000 ग्राम्य विकास विभाग को 1007780 को, राजस्व विभाग को 82, 000 पंचायतीराज विभाग को 99, 000 आवास विकास विभाग को 9346, औद्योगिक विकास विभाग को 11, 000, नगर विकास को 27005, लोक विभाग को 18475, जल शक्ति विभाग को 16000, कृषि विभाग को 219452, पशुपालन विभाग को 11000 सहकारिता विभाग को 5890, उद्योग विभाग को 19, 539, ऊर्जा विभाग को 8400, माध्यमिक शिक्षा को 9145 बेसिक शिक्षा 12414 प्राविधक शिक्षा को 7964 उच्च शिक्षा को 24, 315, श्रम विभाग को 2300, स्वास्थ्य विभाग को 27374 परिवहन विभाग को 2200 रेलवे विभाग को 19, 000, उद्यान विभाग को 1, 21, 000, गृह विभाग को 10800 रक्षा विभाग को 5000 टोटल लक्ष्य 24, 54, 507 है। नोडल अधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिये जो टारगेट दिये गये उसके सापेक्ष कार्य करें। क्रोस चेकिंग के नोडल अधिकारी बनाये जायें। नोडल अधिकारी ने कहा कि 20 जुलाई को होने वाले वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी तैयारियां पूर्ण करना सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में प्रभारी मंत्री, जनप्रतिनिधियों व नोडल अधिकारियों की भागीदारी भी सुनिश्चित कराएं। बैठक में पुलिस अधीक्षक पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक मुख्य विकास अधिकारी सचिन, अपर जिलाधिकारी राकेश कुमार पटेल, जिला परियोजना निदेशक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिलापंचायत राज अधिकारी, पीडब्ल्यूडी, जिलाविद्यालय निरीक्षक, सहित सम्बंधित अधिकारी एवं समस्त खंड विकास अधिकारी एवं समस्त अधिशाषी अधिकारी नगरीय मौजूद रहे।

बच्चों को पढ़ाने की बजाय क्लासरूम की बेंच पर सो गए गुरुजी, वीडियो वायरल

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा/रहरा। गुरु पूर्णिमा पर एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जिसमें एक प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक क्लासरूम की बेंच पर लेटकर खर्राटे भर रहे हैं। जबकि बच्चे पेड़ के नीचे खुद को पढ़ाते नजर आए। वीडियो वायरल होने के बाद ग्रामीणों ने आला अधिकारियों से कार्रवाई की मांग की है। ये मामला गंगेश्वरी विकास खंड गंगेश्वरी के संविलियन विद्यालय हैदलपुर का है। जानकारी के मुताबिक शनिवार को ग्रामीण अचानक स्कूल पहुंच गए। जहां देखा तो बच्चे खुद ही पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ रहे हैं। बच्चे शोर मचा रहे थे। पूछताछ करने पर बच्चों ने बताया कि मास्टर साहब अपने ऑफिस में आराम फरमा रहे हैं। ग्रामीण कार्यालय में पहुंचे तो गुरुजी मेज पर पैर रखकर बेंच पर सोए हुए थे। उन्हें ग्रामीणों के यहां आने की भनक भी नहीं लगी। इस दौरान दूसरा कोई अध्यापक स्कूल में मौजूद नहीं था। ग्रामीणों ने पढ़ाने के समय में खर्राटे भर रहे गुरु जी की वीडियो बना ली। इसके बाद ग्रामीणों ने बच्चों से मास्टर साहब का नाम पूछा। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि शिक्षा व्यवस्था का मखौल बनाकर रख दिया गया है। पूरे मामले की शिकायत विभागीय अधिकारियों से की गई है। उधर, रविवार को वीडियो वायरल होते ही अधिकारियों में हड़कंप मच गया। खंड शिक्षा अधिकारी आरती गुप्ता ने बताया कि मामले की जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

स्कूल की हालत भी खराब

हसनपुर स्कूल भवन की हालत भी जर्जर बताई जा रही है। फर्श में गड्ढे पड़े हुए हैं। बरसात में छत वह दीवारों पर सीलन है। स्कूल परिसर में साफ सफाई भी नहीं है। बताया जा रहा है कि स्कूल का भवन देखरेख व मरम्मत के अभाव में जर्जर होने की कगार पर पहुंचा है।

25 जुलाई को प्रदेश व्यापी धरना प्रर्दशन करेगा उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। रविवार को उ0 प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रमुख पदाधिकारियों की एक आवश्यक बैठक जिलाध्यक्ष गुरनाम सिंह के जोया स्थित आवास पर सम्पन्न हुई। बैठक को संबोधित करते हुए प्रदेशीय मंत्री डॉ0 जी0 पी0 सिंह ने कहा कि शिक्षकों की विभिन्न मांगों के समर्थन में प्रदेश व्यापी धरना प्रदर्शन पूरे प्रदेश के सभी जनपदों में एक साथ 25 जुलाई को अपरान्ह 1.30 बजे से आयोजित किया जाएगा। धरने पर मुख्य मंत्री को संबोधित 23 सूत्रीय मांग पत्र जिला विद्यालय निरीक्षक को सौंपा जाएगा। जिलाध्यक्ष गुरनाम सिंह ने बताया कि शिक्षक और प्रधानाचार्यो की प्रमुख मांगो, पुरानी पेंशन की बहाली, एन0 पी0 एस0 को अधतन अपडेट किया जाना, तदर्थ शिक्षकों की बहाली, विद्यालय का समय परिवर्तन, निशुल्क चिकित्सा सुविधा, आठवें वेतन आयोग के गठन की मांग, महिला शिक्षकों को उत्पीड़न से मुक्ति, शिक्षकों के स्थानांतरण का सरलीकरण आदि हैं। सरकार से अपनी मांगों को मनवाने को एकजुट होकर धरना प्रदर्शन में प्रत्येक अपनी उपस्थिति धरने पर सुनिश्चित करें। जिलामंत्री बालक राम एवं कोषाध्यक्ष कृष्ण पाल सिंह ने संयुक्त रूप से सभी प्रधानाचार्यों, शिक्षक/शिक्षिकाओं से अपील की है कि जनपद भर की सभी शाखाओं से शत प्रतिशत उपस्थिति देकर अपनी एकता का परिचय दें। आय व्यय निरीक्षक एजाज हसन ने कहा कि 25 जुलाई 2024 को अपरान्ह 1.30 बजे जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय पर विद्यालय की पूरी शाखा के सदस्य सरकार से अपनी मांगों को मनवाने के लिए संगठित होकर धरने पर उपस्थित हों। इस अवसर पर अतुल कुमार शर्मा, आसिम अब्बासी, हसनैन नवाज, रुकने आलम, डॉ0 सिद्धार्थ पांडेय, अनिल कुमार, नरेंद्र पाल सिंह, नरेश सिंह, वीरपाल सिंह, दानिश हबीब खान आदि प्रमुख पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कुख्यात बांग्लादेशी विस्थापित चोर गिरफ्तार

नई दिल्ली। शाहदरा जिले की स्पेशल टास्क फोर्स ने शुक्रवार को एक कुख्यात बांग्लादेशी विस्थापित चोर को गिरफ्तार किया है। इसके पास से चोरी के 50 हजार नकद, एक मोबाइल फोन और घरों का ताला तोड़ने में इस्तेमाल औजार बरामद हुए हैं। पकड़े गए आरोपी के खिलाफ चोरी व आर्म्स एक्ट के 15 से ज्यादा मामले दर्ज मिले हैं। पुलिस उपायुक्त सुरेंद्र चौधरी ने बताया कि 15 जुलाई को पुलिस को एजीसीआर एन्क्लेव, कड़कड़डूमा निवासी कपिल कुमार गुप्ता ने घर में नकद और गहने की चोरी की शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की और सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली। फुटेज में एक व्यक्ति काले और पीले बैग में चोरी का सामान ले जाता दिखा। इसके बाद उसकी पहचान के लिए स्थानीय सूत्रों से मदद ली गई और चोर की पहचान सुंदर नगरी निवासी अब्दुल रहमान के रूप में हुई। इसके बाद 19 जुलाई को गुप्त सूचना के आधार पर एसटीएफ टीम ने सुंदर नगरी इलाके में छापा मारा और चोरी के 50 हजार नकद व मोबाइल फोन समेत आरोपी को दबोच लिया। इसके अलावा चोरी के ताले तोड़ने में इस्तेमाल पेंचकस व अन्य औजार भी पुलिस ने बरामद कर लिया। पूछताछ में पता चला कि बरामद मोबाइल फोन आरोपी ने चोरी के ही रुपयों से खरीदा था।

बिजली कटौती के विरोध में लोगों का प्रदर्शन, एसडीओ को घेरा

प्रात : किरण संवाददाता

अमरोहा। सात दिनों में तीन ट्रांसफार्मर फुंकने और बिजली कटौती को लेकर दो मोहल्लों के लोगों का गुस्सा भड़क उठा। उन्होंने जाम लगाकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। काफी देर बाद मौके पर पहुंचे एसडीएम को भी घेरकर नारेबाजी की। काफी देर बाद एसडीओ के आश्वासन पर लोग शांत हुए। इस दौरान जाम लगने से लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। मोहल्ला चौब व गस्तियां की बिजली पिछले सात दिनों से गुल है। बताया जाता है कि यहां सात दिन से तीन ट्रांसफार्मर फुंक चुके हैं। ऐसे में भीषण गर्मी के बीच बिजली कटौती से लोग परेशान हैं। रविवार को दोनों मोहल्ले के लोगों का गुस्सा भड़क उठा। बड़ी संख्या में लोगों ने मंडी चौब स्थित चौराहे पर जाम लगा दिया और धरना प्रदर्शन किया। लोगों का कहना था कि बीते कई दिनों से मोहल्ले में बिजली न होने के कारण भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कुछ देर बार एसडीओ जीडी प्रजापति मौके पर पहुंचे तो लोगों ने उन्हें अपने बीच बैठाकर नारेबाजी शुरू कर दी। कहा कि बीते सात दिन में तीन ट्रांसफार्मर फुंक जाने के कारण बिजली नहीं आई थी। अधिकारियों का कहना था कि लोड अधिक होने के कारण यह ट्रांसफार्मर फुंक रहा है। ऐसे में अधिक क्षमता वाला ट्रांसफार्मर रखने की मांग की गई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है। इस बीच एसडीओ ने उन्हें समझाकर शांत किया। बाद में विभागीय टीम के साथ नया ट्रांसफार्मर जल्द लगवाने का आश्वासन दिया। जिसके बाद लोग शांत हुए।

एनआर पब्लिक स्कूल में हुआ रेन डांस पार्टी का आयोजन

● कक्षा प्ले ग्रुप से 5 वीं तक के बच्चों ने रेन डांस पार्टी का आनंद लिया।

प्रात : किरण संवाददाता

कासगंज एटा रोड स्थित एनआर. पब्लिक स्कूल में शनिवार को रेन डांस पार्टी का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा प्ले ग्रुप से 5 वीं तक के बच्चों ने रेन डांस पार्टी का आनंद लिया।

कासगंज एटा रोड स्थित एनआर पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के लिए रेन डांस एक्टिविटी का रंगारंग आयोजन किया गया। एक्टिविटी के दौरान विद्यार्थियों ने न केवल शानदार नृत्य प्रस्तुत किए अपितु आर्टिफिशियल स्विमिग पूल में नहाकर विद्यार्थियों ने गर्मी को दूर भगाया। इस मौके पर कक्षा प्ले ग्रुप से पांचवी तक के विद्यार्थियों के लिए विभिन्न मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किये गए। इस दौरान

अभिभावक शिक्षक ने विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को सुदृढ़ बनाने के लिए व्यापक विचार विमर्श प्रस्तुत किये। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक डॉ विवेक कुमार राजपूत ने बताया कि यह केवल नृत्य या मनोरंजन ही नहीं है अपितु हमारी संस्कृति को जीवंतता प्रदान करने का और सभ्यताओं को धरोहर स्वरूप रखने का एक निमित्त है। इस अवसर पर विद्यालय के संचालक कुलदीप शर्मा ने बताया कि हमें बच्चों का सर्वांगीण विकास करने के लिए, शैक्षणिक गतिविधियों के साथ साथ इस तरह की सांस्कृतिक और मनोरंजन की गतिविधियों की भी आवश्यकता पड़ती है। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के शारीरिक शिक्षक कुलदीप शर्मा के नेतृत्व में हुआ। कार्यक्रम में पी सिंह, भूपेंद्र कुमार, अमित उपाध्याय, मोहप्रकाश, अभिषेक, जतिन जोहरी, श्वेता सिंह, चाहत खान, दीपक पाराशर, अंकुर गॉड़, अनामिका, वंदना, भावना, जवाहर सिंह, अवधेश, सोनम दयाल, सपना गौर, चिराग, रिषभ, अनीता, राजीव, सुमन, गीतिका, लायबा, पूनम, कायनात, रिचा, संगीता, वीना, संदीप, खुशबू, भुवनेश, अनीशा, विश्वनाथ, आकांक्षा हरवीर अरुण यादव शिवम नीलम, यशी गोयल, गौरव, फायजा, प्रिया सिंह, अंबिका आदि उपस्थित रहे।

विश्व हिंदू परिषद ने एक दिवसीय जनपदीय अभ्यास वर्ग किया आयोजन

जिलामंत्री नवीन सक्सेना ने संगठन की आचार पद्धति का अभ्यास कराया

प्रात : किरण संवाददाता

कासगंज । विश्व हिंदू परिषद का एक दिवसीय जनपदीय अभ्यास वर्ग सरस्वती शिशु मंदिर के विशाल कक्ष में आयोजित हुआ। जिसमें जनपद के सभी क्षेत्रों से कुल 193 दायित्वान कार्यकर्ता, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। त्रिसत्रीय अभ्यास वर्ग के उद्घाटन सत्र में प्रांतीय कोषाध्यक्ष (गौ रक्षा) एवं विभाग मंत्री विनयराज पन्नू, संस्कृत वेदाचार्य विभागीय प्रमुख जगदीश विरथरे, जिला अध्यक्ष प्रमोद साहू, एवं बजरंग दल के विभाग संयोजक अमरीष वशिष्ट ने दीप प्रजनन कर अभ्यास वर्ग का शुभारंभ किया। प्रांतीय कोषाध्यक्ष (गौरक्षा) ने विहिप की स्थापना एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। उन्होंने हिंदू जीवन मूल्य की पुनर्स्थापना एवं सामाजिक समरसता व संगठित हिंदू पद्धति को परिभाषित किया। जिलामंत्री नवीन सक्सेना ने संगठन की आचार पद्धति का अभ्यास कराया। उन्होंने कार्यकताओं को निर्देशित किया कि दिनांक 23 अगस्त से 1 सितंबर के बीच जनपद के प्रत्येक ग्राम तक विहिप के 60 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में षष्ठी पूर्ति वर्ष व स्थापना दिवस को भव्यता के साथ कार्यक्रमों को आयोजित करें। द्वितीय व तृतीय सत्र को प्रात सह मंत्री मुकेश शुक्ला ने संगठन के विभिन्न आयाम बजरंग दल, गौरक्षा, धर्म प्रसार, मातृशक्ति, दुर्गा वाहिनी, सेवा सामाजिक समरसता, सत्संग, साप्ताहिक मिलन आदि के विस्तार एवं उनके क्रियान्वयन के संदर्भ में प्रशिक्षण दिया। उन्होंने ग्राम स्तर तक समितियों को पूर्ण करने का दिशा निर्देश दिया। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष प्रदीप काबरा, नगर अध्यक्ष जय प्रकाश गुप्ता, नगर उपाध्यक्ष संजय गौड़, नगर संयोजक मातृशक्ति आशा सिसोदिया, जिला गौरक्षा प्रमुख अभय प्रिय, राजेंद्र मौर्य, गोविंद मेहरे, नरेंद्र सिंह, अवधेश सोनी, नगर संयोजक आदित्य गुप्ता, गीतेश बघेल, सत्येंद्र, लखन प्रताप, बृजभान, लक्ष्मण शर्मा, भगवान देवी, आशा सक्सैना, संगीता वर्मा आदि उपस्थित रहे।

शिवताल कुंड में मिला लापता व्यापारी का शव

प्रात : किरण संवाददाता

मथुरा। लापता आढ़तियां का शव देर रात शिवताल कुंड में मिल गया। शव की सूचना पर परिजन व आलाधिकारी मौके पर पहुंच गये। शव को कुंड से बाहर निकालकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है। गुरुवार रात्रि लगभग 10 बजे महानगर कोतवाली अंतर्गत शंकर विहार बैंक कॉलोनी निवासी मंडी समिति के आढ़तिया योगेन्द्र गर्ग पुत्र निरंजन प्रसाद गर्ग घर से यह कहकर निकले थे कि वह किसी काम से गुरु नानक नगर में रहने वाले अपने मित्र कलुआ के पास जा रहे हैं। देर रात तक जब वह घर वापस नहीं लौटे तो परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। जहां उन्होंने पुलिस को उनके अचानक गुम हो जाने की रिपोर्ट दर्ज कराई। परिजनों का कहना था कि उन्हें कलुआ व दीपक पर शक है। गुम हुये अढ़तिया की स्कूटी व मोबाइल फोन की लोकेशन मिल रही थी। इसलिये पुलिस ने गोताखोरों को कुंड में उतार दिया। तभी उसका शव तैरता हुआ ऊपर आता दिखायी दिया। इस घटना के बारे में नगर पुलिस अधीक्षक डा. अरविन्द कुमार ने कहा है कि अभी कुछ कहा नहीं जा सकता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चल सकेगा कि यह हत्या या आत्महत्या है। पुलिस हर एंगल से जांच कर रही है।

एसपी ने किया पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ महाअभियान का शुभारम्भ

कासगंज। उत्तर प्रदेश में शासन के निर्देश और एक पेड़ मां के नाम बृक्षारोपण अभियान चलाया जा रहा है। और इस अभियान के तहत यूपी के प्रत्येक जिले को पेड़ लगाने के लिए एक निर्धारित लक्ष्य भी दिया गया है। और शासन की तरफ से कासगंज जिले को 25 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य दिया गया है। और इस लक्ष्य के तहत जिले के सभी विभाग जादा से जादा लोगों के सहयोग से बृक्षा रोपण कराने में लगे हुए है। और शनिवार को सोरों में स्थित पुलिस लाइन में जिले की एसपी अपर्णा रजत कौशिक ने एक पेड़ मां के नाम व पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ बृक्षारोपण महाअभियान का शुभारम्भ किया। और पुलिस अधिकारी और कर्मचारी के साथ मिलकर बृक्षारोपण किया। और इस अभियान में शामिल होकर अधिक से अधिक पेड लगाने तथा उनकी सही से देखभाल करने का सभी से आह्वान भी किया। और अभियान के दौरान एसपी अपर्णा रजत कौशिक ने जिले के सभी पुलिसकर्मियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुक होने और वृहद स्तर पर पेड-पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया गया। एसपी ने कहा कि प्रकृति में संतुलन तथा अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड-पौधे लगाना बहुत जरुरी है। और इस अभियान का उद्देश्य पर्यावरण सरंक्षण और हरित वातावरण को बढावा देना है।

दो वांछितों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कासगंज । पुलिस अधीक्षक कासगंज अपर्णा रजत कौशिक के निर्देश पर जनपद भर में वांछितों के विरूद्ध अभियान चलाया जा रहा है। इसी अभियान के क्रम में थाना कासगंज पुलिस द्वारा वांछित अभियुक्त लटूरी पुत्र किशोरी लाल निवासी वरी खेडा थाना व जनपद कासगंज को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। इसी क्रम में थाना पटियाली पुलिस द्वारा वांछित अभियुक्त धर्मेन्द्र पुत्र रामौतार निवासी नगला किशोरी थाना पटियाली को गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। वहीं पुलिस ने दोनों वांछितों को न्यायालय के समझ पेश करने की कार्यवाही की है।

उमर खालिद की जमानत याचिका पर सुनवाई आज

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय सोमवार को फरवरी 2020 में उत्तर-पूर्वी दिल्ली में हुई हिंसा के पीछे कथित बड़ी साजिश से संबंधित मामले में जेएनयू के पूर्व छात्र उमर खालिद की जमानत याचिका पर सुनवाई करेगा। याचिका में खालिद को जमानत देने से इनकार करने वाले विशेष अदालत के आदेश को चुनौती गई है। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह एवं अमित शर्मा की पीठ उमर खालिद के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधि रोकथाम अधिनियम के तहत दर्ज मामले में दायर जमानत याचिका पर सुनवाई करेगी।

भारतीय किसान यूनियन संपूर्ण भारत ने विद्युत समस्या को लेकर बिजली घर पर किया अनिश्चितकालीन धरना शुरू

बुलंदशहर। भारतीय किसान यूनियन संपूर्ण भारत के प्रदेश अध्यक्ष पवन तेवतिया ने अपने दर्जनों कार्यकताओं के साथ गुलावठी कस्बे में हो रही विद्युत आपूर्ति की समस्या को लेकर बिजली घर पर धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया। वही प्रदेश अध्यक्ष पवन तेवतिया ने बताया कि क्षेत्रीय नेता और विधायक लोगों की समस्याओं को अनदेखा कर रहे हैं और सिर्फ खानापूर्ति कर रहे हैं। जहां गुलावठी बिजली घर पर भारतीय किसान यूनियन संपूर्ण भारत के कार्यकताओं ने जमकर हंगामा किया और विद्युत अधिकारियों के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी। जहां धरना स्थल पर पहुंचे विद्युत विभाग के एसडीओ ने कस्बे में 800 केवीए का ट्रांसफार्मर जल्द लगाकर लोगों को हो रही समस्या से निजात दिलाने का आश्वासन दिया। जिनके आश्वासन के बाद प्रदेश अध्यक्ष पवन तेवतिया ने फिलहाल धरना प्रदर्शन समाप्त कर दिया है वहीं विद्युत विभाग के अधिकारियों को चेतावनी दी है कि यदि गुलावठी कस्बे में हो रही विद्युत आपूर्ति का समाधान नहीं किया गया तो जिला स्तर पर जोरदार प्रदर्शन किया जाएगा। वहीं भारतीय किसान यूनियन संपूर्ण भारत के प्रवक्ता मोहम्मद आसिम ने कहा कि गुलावठी कस्बे की बिजली आपूर्ति बदहाल हो चुकी है जहां कस्बे में लगे ट्रांसफार्मर अधिक लौट के चलते लगातार फूंक रहे हैं जिन्हंय बदला नहीं जा रहा है और ना ही कस्बे का लोड बढ़ाया जा रहा है जिसकी वजह से लोगों को समस्या झेलनी पड़ रही है। धरना प्रदर्शन के दौरान प्रदेश अध्यक्ष चौधरी पवन तेवतिया, जिला प्रवक्ता मोहम्मद आसिम, आसिफ सैफी, हैप्पी वर्मा, मोहित सिंगला, इकरामुद्दीन, असीम, जीशान, मुशर्रफ, अश्वनी यादव, पप्पू चौधरी, राहुल अग्रवाल, पिंटू, राकेश आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रोजगार मेले का आयोजन 22 जुलाई से 26 जुलाई तक

कासगंज। जिला सेवायोजन कार्यालय द्वारा निम्नांकित तिथि/स्थान पर प्रातः 10 बजे से रोजगार मेले का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें 05 कम्पनियां लगभग 310 रिक्त पदों पर 18 से 30 वर्ष आयु के इंटर /स्नातक/आईटीआई उत्तीर्ण अभ्यर्थियों का चयन करेंगी। रोजगार मेले में सम्मिलित होने हेतु अभ्यर्थी पोर्टल बेव पर अपना ऑनलाईन पंजीकरण कर निर्धारित तिथि/स्थान पर अभ्यर्थी अपने साथ रिज्यूम, पंजीयन कार्ड एक्स 10 समस्त शैक्षिक प्रमाणपत्रों की फोटोप्रति व मूलप्रति, आधार कार्ड एवं दो फोटो अवश्य साथ लेकर आयें। ऑनलाईन पंजीयन/आवेदन करने में समस्या होने पर किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय में 155330 पर सम्पर्क कर सकते है। जिला सेवायोजन अधिकारी एस मित्तल ने जानकारी देते हुये बताया है कि 22 जुलाई को राजकीय आईटीआई किसरौली में, 23 जुलाई को श्री दान सहाय मैमोरियल महाविद्यालय रामपुर मोहनपुरा में, 24 जुलाई को कार्यालय नगर पंचायत बिलराम में, 25 जुलाई को कार्यालय खण्ड विकास अधिकारी अमांपुर में, 26 जुलाई को कार्यालय खंड विकास अधिकारी सहावर में रोजगार मेले का आयोजन किया जायेगा।

मुड़िया पूर्णिमा मेले में उमड़े श्रद्धालु, दिखाई देने लगे असंख्य नरमुंड

● गिरिराज परिक्रमा कर रहे श्रद्धालुओं में दिखा उत्साह

प्रात : किरण संवाददाता

मुड़िया पूर्णिमा मेला की पूर्व संध्या पर आज गोवर्धन में आस्था का जनसैलाब उमड़ पड़ा। श्रद्धालु भक्त गिरिराज महाराज की जय एवं राधे-राधे श्याम मिला दे का उद्घोष कर परिक्रमा लगा रहे हैं। गिरिराज परिक्रमा में शाम होते ही असंख्य नरमुंड दिखाई देने लगे। सांय ढलते ही इन्द्रदेव की मेहरबानी से मौसम सुहावना होते ही श्रद्धालुओं की जयकारों में दो गुना उत्साह हो रहा है। आस्था और श्रद्धा के समागम के बीच बने जनसैलाब ने मन की मुराद और भक्ति की कामना लिये श्रद्धालु आगे बढ़ रहे थे। श्रद्धालुओं के मन में आस्था का इस कदर जुनून सवार था कि परिक्रमा मार्ग अव्यवस्थाएं हावी होने के बाद किंचित भी परेशानी नहीं हो रही थी। सैलाब का नजारा बस वहीं से शुरू और वहीं आता हुआ दिखाई दिखाई दिया।

परिक्रमा में श्रद्धालुओं के बढ़ते हुए कदम तो दिखाई नहीं दे रहे थे तेज गति से सैलाब को चलता देख जरूर लगने लगा कि भक्ति की प्रबल धारा अपने धर्म सीमा पर है। मंदिरों में पूजा करने के लिए खचाखच भीड़ रही। भीड़ का सैलाब गिरिराज दानघाटी मंदिर, परिक्रमा मार्ग में आन्यौर, पुछरी, जतीपुरा, राधाकुंड के अलावा रेलवे स्टेशन, बस स्टैंड और पार्किंग स्थलों पर दिखाई दिया। परिक्रमा मार्ग में धार्मिक कार्यक्रम हो या सेवा शिविर और भजनों पर थिरकते श्रद्धालु मेले की शोभा बढ़ा रहे थे। मुड़िया मेला में चहुंओर भक्ति का वातावरण दिखाई दिया। शनिवार को चौदस की रात श्रद्धालुओं की भीड़ में इजाफा होकर जन सैलाब उमड पड़ा। परिक्रमा में उत्तर प्रदेश के अलावा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पश्चिम बंगाल आदि प्रांतों से भक्त पहुंच रहे हैं। राजकीय मुड़िया पूर्णिमा मेला में शनिवार को तेज धूप और उमस के वावजूद श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। मुड़िया संतों ने मुंडन कराया एवं शोभायात्रा की तैयारी में भी जुट गए हैं। पुलिस और प्रशासन के अधिकारी नियंत्रण कक्ष से और परिक्रमा मार्ग पर जाकर जायजा लेते रहे। श्रद्धालुओं के जत्थे पहुंचते रहे और राधे-राधे करते हुए परिक्रमा मार्ग पर बढ़े जा रहे थे। रात होने तक भीड़ और बढ़ गई और परिक्रमा मार्ग पर मानव श्रृंखला नजर आने लगी।

परिक्रमा मार्ग पर मानव श्रृंखला बन गई। इसके बाद भक्त मंदिरों में मंगला आरती दर्शन के लिए उमड़ पड़े। इससे पहले दिन में आस्था के मिनी कुंभ के नाम विख्यात मुड़िया मेले में भक्ति और प्रकृति के अनूठे नजारे दिखाई दिए। पूर्णिमा पर कान्हा की नगरी में लगातार उमड़ रही भीड़ के साथ साथ प्रत्येक वीकेंड पर मथुरा आकर दर्शन करने वालों की भारी भीड़ आज सुबह से ही सड़कों पर दिखाई दे रही थी। वाहनों की लम्बी लम्बी कतारें ने महानगर की सड़कों पर भारी शोर मचा रखा था तो वहीं मंदिरों में भी पहले से अधिक श्रद्धालुओं का लगातार आगमन हो रहा था। मंदिर परिसर भगवान के जयघोष दिनभर गूंजते रहे। मन में तमाम मनोकामना संजोए श्रद्धालु गिरिराज महाराज की शरण में पहुंचे।

भाजपा-एलजी मिलकर सीएम केजरीवाल को जेल में जान से मारने की साजिश रच रहे- संजय सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के स्वास्थ्य को लेकर झूठ फैला रही भाजपा, केंद्र सरकार और एलजी पर आम आदमी पार्टी ने रविवार को सबूतों के साथ पलटवार किया। आप के वरिष्ठ नेता संजय सिंह ने कहा कि केजरीवाल को जेल में जान से मारने की साजिश रची जा रही है। क्योंकि पहले भाजपा, एलजी और जेल प्रशासन ने कहा कि केजरीवाल पूड़ी-मिठाई खाकर अपनी शुगर बढ़ा रहे हैं। इन्होंने उन्हें इंसुलिन तक नहीं दी। वहीं, अब कह रहे हैं कि वो भूखे रहकर अपनी शुगर घटा रहे हैं। क्या कोई व्यक्ति अपनी शुगर कम करके खुद को मारने का प्रयास करेगा? उन्होंने कहा कि मेडिकल रिपोर्ट से साफ है कि केजरीवाल को वेट लॉस, कमजोरी, हाइपोग्लाइसिमिया की शिकायत है। 3 जून से अब तक 26 बार से ज्यादा उनका शुगर लेवल 50 के आसपास पहुंचा है। यह जानकर भी एलजी और जेल प्रशासन बार-बार उनके स्वास्थ्य को लेकर झूठ बोल रहे हैं। यह हत्या के प्रयास का मामला हो सकता है और आप इस साजिश में शामिल लोगों के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज करा सकती है।आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्य सभा सदस्य संजय सिंह ने रविवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर कहा कि भाजपा, केंद्र सरकार और दिल्ली के एलजी मिलकर अरविंद केजरीवाल की जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। जेल में उनको मारने की साजिश की जा रही है। उन्होंने कहा कि तिहाड़ जेल प्रशासन ने जो कागजात कानूनी रूप से अरविंद केजरीवाल के वकील को उपलब्ध कराए हैं, उससे इस साजिश का पता चलता है। एम्स के डॉक्टर्स की मेडिकल रिपोर्ट ये बताने के लिए काफी है कि अरविंद केजरीवाल के साथ जेल में किसी भी दिन कोई अनहोनी घटना हो सकती है। एलजी और पूरी भाजपा जिस तरह से अरविंद केजरीवाल के स्वास्थ्य पर गलत बयानबाजी कर रही है, गलत रिपोर्ट जारी कर रही है और केंद्र सरकार के साथ मिलीभगत करके केजरीवाल की जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, उससे ये शक और पुख्ता होता है। संजय सिंह ने कहा कि पहले इन लोगों ने कहा कि अरविंद केजरीवाल डाइट चार्ट फॉलो नहीं कर रहे हैं, वो पूड़ी और मिठाई खा रहे हैं। अपनी कैलोरी और शुगर बढ़ा रहे हैं। उनको इंसुलिन की जरूरत नहीं है, हम इंसुलिन नहीं देंगे। फिर कोर्ट के आदेश पर डॉक्टर्स ने जांच की और उनकी इंसुलिन शुरू हुई। अब ये नई कहानी ले कर आ रहे हैं कि अरविंद केजरीवाल कुछ नहीं खा रहे हैं, वो बिल्कुल भूखे रहकर अपना शुगर कम कर रहे हैं। ये क्या मजाक बनाकर रखा है? इन लोगों ने अरविंद केजरीवाल को मारने की गहरी साजिश रची है। ये कभी कहते हैं कि मिठाई खाकर शुगर बढ़ा लिया और कभी कहते हैं कि भूखे रहकर शुगर घटा लिया।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें
पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें

@Pratahkiran
www.pratahkiran.com

प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री के द्वारा चलाई गई थीम एक पेड़ मां के नाम महा अभियान वृक्षारोपण 2024 आज सफल हो रहा : प्रभारी मंत्री

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बेसिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश प्रदेश सरकार/जनपद के प्रभारी मंत्री संदीप सिंह, विधान परिषद सदस्य रजनीकांत माहेश्वरी, विधायक सदर देवेन्द्र सिंह राजपूत, विधायक अमांपुर हरीओम वर्मा, जिला अध्यक्ष केपी सोलंकी, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि बॉबी कश्यप व अन्य जनप्रतिनिधियों, शासन से नामित नोडल अधिकारी के. धनलक्ष्मी सचिव मानवाधिकार आयोग उत्तर प्रदेश तथा जिलाधिकारी मेधा रूपम व पुलिस अधीक्षक अर्पणा रजत कौशिक ने तहसील कासगंज क्षेत्र के राजकीय पालीटेक्निक सोरों में वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम में प्रतिभाग कर एक पेड़ मां के नाम का पौधारोपण कर जनसामान्य को अधिक से अधिक पौधे रोपित करने का दिया सन्देश। प्रभारी मंत्री ने वृक्षारोपण महाभियान के दौरान कहा कि उत्तर प्रदेश में 36 करोड़ 50 लाख वृक्षारोपण के सापेक्ष जनपद में 24 लाख 54 हजार से वृक्षारोपण कराया जा रहा है। पौधों को लगाने के साथ ही पूरी जिम्मेदारी के साथ पौधों को बचाने पर भी पूरा ध्यान दिया जाये। जनपद कासगंज में जिला स्तर के साथ ही समस्त तहसील व विकास खण्ड क्षेत्रों, ग्राम पंचायतों, स्कूल, कालेजों, शिक्षण संस्थानों सहित समस्त क्षेत्रों में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों, ग्राम प्रधानों तथा ग्रामवासियों द्वारा वृहद स्तर पर पौधे लगाये गये। वृहद वृक्षारोपण अभियान के तहत जनपद की प्रत्येक न्याय पंचायत में ग्राम तथा नगर पालिका क्षेत्र में भी वृक्षारोपण किया जा रहा है व स्कूलों व शिक्षण संस्थाओं में पौधे लगवाये गये हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि सभी विभाग अपने लक्ष्य के सापेक्ष वृक्षारोपण कराकर लगाये गये सभी पौधों का संरक्षण कराना सुनिश्चित करें। पर्यावरण को बेहतर बनाने हेतु वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने के साथ ही साथ रोपित पौधों को जीवित रखना भी हमारी जिम्मेदारी है, इसका सभी विभाग जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन करें। इस अवसर पर कासगंज चेयरमैन मीना माहेश्वरी, मुख्य विकास अधिकारी सचिन, अपर जिलाधिकारी राकेश कुमार पटेल, अपर पुलिस अधीक्षक, डीएफओ सुन्दरेशा, डीपीआरओ, बीएसए एवं अन्य जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

बांसुरी स्वराज की जीत में चुनाव आयोग के भ्रष्ट अधिकारियों का हाथ : सोमनाथ भारती

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली में आप बनाम भाजपा की राजनीति जोरों पर चल रही है। आम आदमी पार्टी के नेता सोमनाथ भारती ने भाजपा सांसद बांसुरी स्वराज के निर्वाचन को चुनौती देते हुए दिल्ली उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने बांसुरी स्वराज को जिताने के लिए सिस्टम का दुरुपयोग किया है।

उन्होंने कहा कि हमने हाईकोर्ट के सामने कई मुद्दे उठाए हैं। मुख्य मुद्दा चुनावी खर्च का है। दरअसल, हर भाजपा उम्मीदवार ने करोड़ों खर्च किए हैं। बांसुरी स्वराज ने चुनावी खर्च पर 95 लाख रुपए से अधिक खर्च किए। चुनाव के दिन हर मतदान केंद्र पर बांसुरी स्वराज के पोस्टर पाए गए। भाजपा का पोलिंग एजेंट पोस्टर के साथ बूथ पर प्रचार कर रहा था।

सोमनाथ भारती ने कहा कि जब उन्होंने इस कृत्य को अपने मोबाइल फोन से रिकॉर्ड किया तो चुनाव आयोग और प्रशासन ने उनका मोबाइल जब्त कर लिया और आज तक वापस नहीं किया। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी के मंत्री रहे राजकुमार आनंद को भाजपा के लोगों ने जबरन इस्तीफा दिलवाया और वे बसपा में शामिल होकर चुनाव लड़े। चुनाव के ठीक बाद उन्हें भाजपा में शामिल करा लिया गया।

उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग धर्म के आधार पर वोट मांगते हैं। धर्म के आधार पर वोट मांगना अपने आप में अपराध है। भाजपा के लोग बुजुर्गों के घर गए और उन्हें वोट डालने के लिए मजबूर किया। इन सभी मुद्दों को लेकर हमने अदालत में चुनौती दी है और मांग की है कि बांसुरी के चुनाव के परिणाम पर पुनर्विचार किया जाए और उन पर छह साल का प्रतिबंध लगाया जाए।

जस्टिस मनमीत पीएस अरोड़ा 22 जुलाई को मामले में सुनवाई करेंगे। हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव 2024 में आप उम्मीदवार सोमनाथ भारती को नई दिल्ली सीट से हार का सामना करना पड़ा था। भाजपा उम्मीदवार बांसुरी स्वराज ने जीत दर्ज की थी।

दिल्ली: राज्य स्तरीय मुक्केबाज संपत्ति विवाद में रिश्तेदारों को गोली मारने के आरोप में गिरफ्तार

● महीने आजाद ने राजन की मां को गालियां दी थी और अपमानित किया था, जिसके बाद राजन ने बदला लेने की ठानी।

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली पुलिस ने राज्य स्तरीय एक मुक्केबाज को संपत्ति विवाद में अपने चाचा को गोली मारने के आरोप में गिरफ्तार किया है। अधिकारियों ने रविवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आरोपी को शनिवार को गिरफ्तार किया गया और उसकी पहचान राजन के रूप में हुई है।

अधिकारियों ने बताया कि पुलिस को पता चला कि वह पहले भी चार आपराधिक मामलों में शामिल रहा है, जिनमें हरियाणा में हत्या के प्रयास, अपहरण और अन्य जघन्य मामले हैं। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, राजन फौर (30) का हरियाणा के पानीपत के नंगला पार गांव में रहने वाले अपने चाचा आजाद के साथ संपत्ति विवाद था। पिछले महीने आजाद ने राजन की मां को गालियां दी थी और अपमानित किया था, जिसके बाद राजन ने बदला लेने की ठानी।

आजाद 23 जून को अपनी कार से अपने गांव जा रहा था तभी राजन और उसके साथियों ने उस पर गोलियां चला दीं। पुलिस ने बताया कि एक गोली कार को भेदती हुई आजाद की कमर में जा लगी। पुलिस ने बताया कि हालांकि आजाद ने कार चलाना जारी रखा और उसका पीछा कर रहे राजन को चकमा देते हुए घर पहुंच गया। आजाद को उसके परिजन अस्पताल ले गए, जहां उसका इलाज किया गया।

अधिकारी ने कहा, हरियाणा पुलिस ने हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर जांच शुरू की। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा को रोहिणी इलाके में राजन की मौजूदगी की सूचना मिली, जिसके बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि मामले की जांच जारी है।

संजय सिंह ने सर्वदलीय बैठक में उठाया दिल्ली-पंजाब के बजट का मुद्दा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

संसद के बजट सत्र के शुरू होने से पहले रविवार को आयोजित सर्वदलीय बैठक में आम आदमी पार्टी के नेता एवं राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने केंद्र सरकार के सामने दिल्ली और पंजाब को मिलने वाले केंद्रीय सहयोग समेत कई गंभीर मुद्दे उठाए। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि पिछले 9 सालों की तरह इस बार भी केंद्र सरकार दिल्ली को 350 करोड़ रुपये से अधिक नहीं देने वाली है। साथ ही, उन्होंने विपक्षी दलों के खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसियों का दुरुपयोग बंद करने, छोटे दलों को भी संसद में बोलने का मौका देने और परम्परा के अनुसार डिप्टी स्पीकर विपक्ष का बनाने की मांग की।

उन्होंने कहा कि पिछले 9 वर्षों से यह देखा जा रहा है कि दिल्ली की जनता लाखों-करोड़ों रुपये टैक्स के रूप में देती है, लेकिन उसे बजट में मात्र 350 करोड़ दिए जाते हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पारित उस आदेश के मुद्दे को भी उठाया, जिसमें कांवड़ मार्गों के किनारे भोजनालयों को अपने मालिकों के नाम और पहचान का खुलासा करना अनिवार्य किया गया है। संजय सिंह ने कहा कि एक आदेश जारी किया गया है कि (दुकानों में) नेम प्लेट लगाना होगा। यह दलितों, आदिवासियों और मुसलमानों के व्यवसाय को बंद करने का एक प्रयास है। ये वे लोग हैं जो भेदभाव में विश्वास करते हैं। उन्होंने मांग की कि छोटे दलों के सदस्यों को भी संसद में बोलने के लिए उचित समय दिया जाए और शून्य काल पर कार्यवाही हो। डिप्टी स्पीकर के मुद्दे पर कांग्रेस का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा डिप्टी स्पीकर विपक्ष का होना चाहिए, यही परंपरा रही है।

आप सांसद संजय सिंह सर्वदलीय बैठक में हुए शामिल, दिल्ली-पंजाब के बजट का मुद्दा उठाया

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

संसद के बजट सत्र की शुरूआत से पहले आयोजित सर्वदलीय बैठक में आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने हिस्सा लिया। इस दौरान उन्होंने केंद्र सरकार के सामने दिल्ली और पंजाब को मिलने वाले केंद्रीय सहयोग समेत कई गंभीर मुद्दे उठाए। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि पिछले 9 सालों की तरह इस बार भी केंद्र सरकार दिल्ली को 350 करोड़ रुपए से अधिक नहीं देने वाली है। साथ ही, उन्होंने विपक्षी दलों के खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसियों का दुरुपयोग बंद करने, छोटे दलों को भी संसद में बोलने का मौका देने और परम्परा के अनुसार डिप्टी स्पीकर विपक्ष का बनाने की मांग की।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने संसद के बजट सत्र से पहले आयोजित सर्वदलीय बैठक में कई गंभीर मुद्दे उठाए। खासकर विपक्षी नेताओं पर जांच एजेंसियों के दुरुपयोग का मुद्दा छाया रहा, जिसकी सबसे बड़ी शिकार आम आदमी पार्टी है। संजय सिंह ने जांच एजेंसियों का दुरुपयोग रोकने की मांग की। इस दौरान उन्होंने कहा कि मैंने आने वाले बजट में दिल्ली और पंजाब के बजट का मुद्दा भी उठाया है। मैं दिल्ली के मामले में बजट पेश होने से पहले बजट लीक कर सकता हूं और कह सकता हूं कि दिल्ली को 350 करोड़ रुपए से ज्यादा नहीं मिलेंगे।

उन्होंने कहा कि पिछले 9 वर्षों से यह देखा जा रहा है कि दिल्ली की जनता लाखों-करोड़ों रुपए टैक्स के रूप में देती है, लेकिन उसे बजट में मात्र 350 करोड़ दिए जाते हैं। सर्वदलीय बैठक में सांसद संजय सिंह ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पारित उस आदेश को उठाया, जिसमें कांवड़ मार्गों के किनारे भोजनालयों को अपने मालिकों के नाम और पहचान का खुलासा करना अनिवार्य किया गया है। संजय सिंह ने कहा कि एक आदेश जारी किया गया है कि (दुकानों में) नेम प्लेट लगाना होगा, यह दलितों, आदिवासियों और मुसलमानो के व्यवसाय को बंद करने का एक प्रयास है। ये वे लोग हैं जो भेदभाव में विश्वास करते हैं। उन्होंने मांग किया कि छोटे दलों के सदस्यों को भी संसद में बोलने के लिए उचित समय दिया जाए और शून्य काल पर कार्यवाही हो। डिप्टी स्पीकर के मुद्दे पर कांग्रेस का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा डिप्टी स्पीकर विपक्ष का होना चाहिए, यही परंपरा रही है।

सावन के पहले सोमवार को कई रास्तों पर रहेगा दबाव

नई दिल्ली। सावन के पहले सोमवार पर एक तरफ जहां श्रद्धालु मंदिरों में दर्शन करेंगे तो वहीं दूसरी तरफ कांवड़ियों के हरिद्वार से लौटने का सिलसिला भी शुरू होगा। इसे ध्यान में रखते हुए सोमवार को यातायात पुलिस द्वारा व्यावक बंदोबस्त किए जाएंगे। ट्रैफिक पुलिस ने लोगों से भी अपील की है कि वह कांवडियों के रास्तों से दूर रहें। ऐसी जगहों पर उन्हें जाम का सामना करना पड़ सकता है। ट्रैफिक पुलिस के अनुसार गौमुख, गंगोत्री धाम और हरिद्वार से गंगाजल से लाकर श्रद्धालु शिवरात्रि के मौके पर गंगाजल भगवान शिव पर चढ़ाएंगे। सोमवार को सावन का पहला सोमवार है। इसके साथ ही कांवड़ियों के लौटने का सिलसिला शुरू हो जाएगा। सोमवार से शुरू होने वाली कांवड़ यात्रा आगामी दो अगस्त तक चलेगी। काफी संख्या में जहां श्रद्धालु दिल्ली में अपनी यात्रा समाप्त करेंगे तो वहीं लाखों कांवड़िये दिल्ली होते हुए गुरुग्राम, फरीदाबाद, रोहतक तरफ प्रस्थान करेंगे। इस वर्ष दिल्ली के रास्ते कांवड़ लाने वाले श्रद्धालुओं की संख्या लगभग 20 लाख रहने की संभावना है। ट्रैफिक पुलिस द्वारा कांवड़ियों के सभी रूट चिन्हित कर उन्हें यातायात से अलग रखने का बंदोबस्त किया गया है।

खाता डीफ्रिज कराने को पुलिसकर्मी बन भेजा ई-मेल, गिरफ्तार

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

इंटेलीजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटजिक ऑपरेशन यूनिट (इफ्सो) ने ठगी में फ्रीज बैंक खाता डीफ्रीज कराने के लिए पुलिस अधिकारी बन बैंक को ई-मेल भेजने वाले गिरोह को पकड़ा है। पुलिस ने गिरोह के सरगना समेत सात लोगों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों में एसबीआई की शाखा में कार्यरत कर्मचारी भी है। इफ्सो के डीसीपी हेमंत तिवारी ने रविवार को बताया कि सचिन बंसल से शेयर ट्रेडिंग के नाम पर 91 लाख रुपये की ठगी हो गई थी। ठगी के पैसे 19 बैंक खातों में गए थे। इन सभी बैंक खातों को फ्रीज करा दिया गया था, जिसमें गौरव ट्रेडर्स के नाम से भी एसबीआई में एक खाता था। इस खाते में ठगी के 46 लाख रुपये जमा किए गए थे। डीसीपी हेमंत तिवारी ने बताया कि इस बैंक खाते को डीफ्रीज कराने के लिए एसबीआई को ई-मेल भेजा गया था। ई-मेल को भेजने वाले ने खुद को पुलिस अधिकारी बताया था, लेकिन बैंक मैनेजर को शक हो गया और उसने इफ्सो को घटनाक्रम की सूचना दी। डीसीपी ने बताया कि इंस्पेक्टर उदय सिंह की टीम ने जांच शुरू की और पहले अजय एवं मोहित को दिल्ली से गिरफ्तार किया। फिर शंकर, प्रत्यक्ष कोशर, मनीष ज्वाला, श्रेयांश पंडित और दिनेश को गिरफ्तार किया। इनके कब्जे से 5.5 लाख रुपये नगद और बैंक खातों में 80 लाख फ्रीज कराए गए। जांच में मालूम हुआ कि दिनेश इस गिरोह का सरगना है। वह सभी सदस्यों के बीच मध्यस्थता करता था और इसके लिए अलग-अलग नंबरों पर सक्रिय व्हाट्सऐप ग्रुप का इस्तेमाल किया जाता था। वह सहयोगियों के माध्यम से बैंक खातों को नियंत्रित करता था। वहीं मनीष, श्रेयांश और प्रत्यक्ष कोशर फर्जी ई-मेल आईडी बनाते थे। साथ ही ई-मेल की विषय वस्तु तैयार करते थे और श्रेयांश पुलिस अधिकारी बनकर बैंक कर्मी से बात करता था। पुलिस ने एसबीआई की कमला नगर शाखा में संविदा पर कार्यरत शंकर को भी गिरफ्तार किया है। दरअसल, शंकर का काम बैंक खाता खुलने में सहायता करना और मौके का निरीक्षण करना था। खाली दुकान के पते पर अजय और मोहित पहले बैंक में खाता खुलवाते। फिर खाली दुकान का निरीक्षण करने के लिए शंकर जाता और रिपोर्ट सकारात्मक बनाता था। इस शाखा से गिरोह ने नौ बैंक खाते खुलवाए थे।

संस्कार भारती कला संकुल में हुआ गुरु पूर्णिमा के अवसर पर नटराज पूजन

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सांस्कृतिक कला केंद्र के रूप में उभरते संस्कार भारती कला संकुल में गुरु पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्कार भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री अभिजीत गोखले, संस्कार भारती के दिल्ली प्रान्त अध्यक्ष प्रभात कुमार, बिहार दरभंगा से राज्यसभा सदस्य एवं महिला मोर्चा अध्यक्ष धर्मशीला गुप्ता, संस्कार भारती के अखिल भारतीय सह कोषाध्यक्ष सुबोध शर्मा, कलाकार अवतार साहनी सहित कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए संस्कार भारती के अखिल भारतीय संगठन मंत्री अभिजीत गोखले ने आज दिल्ली के संस्कार भारती के प्रांगण में नटराज पूजन कर गुरु पूजन के अर्थ की व्याख्या करते हुए बताया कि कठोर परिश्रम, शुद्ध आचरण और समर्पण भाव ये तीन ऐसे घटक हैं, जो गुरु शिष्य परंपरा के लिए सर्वोपरि हैं। इसके माध्यम से शक्ति शील एवं ज्ञान अर्जित होता है। गुरु की आवश्यकता कला के मर्म को समझाने की होती है। विशेष रूप से कला के क्षेत्र में सभी विधाओं में गुरु शिष्य की परंपरा को और अधिक प्रसार करने की आवश्यकता है। कलासाधक निरंतर सक्रिय रहे इसके लिए गुरु का मार्गदर्शन सर्वोपरि है क्योंकि साधना की आदत लगाने का काम गुरु का ही है। नटराज पूजन की महत्ता पर अभिजीत गोखले ने उल्लेख किया कि साधना से सृजन तक की यात्रा को तय करना ही गुरु पूजन के वास्तविक अर्थ को चरितार्थ करता है। उन्होंने कार्यक्रम में एकत्र हुए कार्यकर्ता और प्रशिक्षकों को न केवल गुरु पूजन के लाभ बताए, वरन उन्होंने कई सफल उदाहरण भी दिए। इनमें आचार्य चाणक्य और चंद्रगुप्त मौर्य, छत्रपति शिवाजी महाराज व संत तुकाराम एवं संत रामदास जैसे नाम शामिल हैं। उन्होंने बताया कि किस प्रकार साधना के दौरान समर्पण भाव और काम करने की अदम्य इच्छाशक्ति भी मायने रखती है। उन्होंने गुरु पूजन के अवसर पर सभी को शुभकामनाएं भी दी और भावी भविष्य के लिए सभी उपस्थित कार्यकर्ताओं से कठिन परिश्रम करने के लिए भी कहा।

कार सवार कारोबारी का अपहरण कर लूट

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

सुभाष प्लेस इलाके में कारोबारी का अपहरण कर लूट का मामला सामने आया है। पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। कोहाट एन्क्लेव निवासी मृगेश गर्ग ने बताया कि उनकी खारी बावली में सूखे मेवे की दुकान है। वह शनिवार को ड्राइवर के साथ कार से दुकान पर जा रहा था। रास्ते में सुभाष प्लेस डिपो के पास कबूतरों को दाना खिलाने के लिए रुका। वापस आकर देखा तो कार में तीन युवक बैठे थे। आरोपियों ने कारोबारी का अपहरण कर लिया। इसके बाद शालीमार बाग में पीड़ित से सोने के आभूषण, आई फोन, नकदी और कार चालक से मोबाइल फोन लूट कर फरार हो गए। वारदात के बाद पीड़ित अपने ड्राइवर के साथ घर पहुंचा और पिता धर्मेश गर्ग को घटना के बारे में बताया। फिलहाल, पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है।

जानलेवा हमला करने के मामले में राज्य स्तर का बॉक्सर गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने पानीपत के गांव नगला पार में अपने चाचा पर गोली चलाकर जानलेवा हमला करने वाले राज्य स्तर के बॉक्सर को गिरफ्तार किया है। आरोपित की पहचान गांव नगला पार, सनौली, पानीपत, हरियाणा निवासी राजन फोड़ उर्फ मंत्री (30) के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपित के पास से एक पिस्टल, तमंचा, तीन कारतूस और एक स्कोर्पियो कार बरामद की है। आरोपित विकास लगरपुरिया का करीबी है। उसको देश से फरार कराते समय राजन उर्फ मंत्री ने ही नकली कागजात के आधार पर उसका पासपोर्ट तैयार करवाया था। इसके अलावा कई दूसरे गैंगस्टरों के भी यह पासपोर्ट बनवा चुका है।

क्राइम ब्रांच पुलिस ने बताया कि स्कूल के समय यह हरियाणा चैंपियन था। बीमार होने की वजह से इसने बॉक्सिंग छोड़ दी थी। फिलहाल इसका फाइनेंस का धंधा था। एक शराब की दुकान में भी इसकी पार्टनरशिप थी। इसके खिलाफ हत्या के प्रयास, अपहरण समेत कुल चार मामले पहले से दर्ज हैं। पुलिस इससे पूछताछ कर मामले की छानबीन कर रही है। क्राइम ब्रांच के डीसीपी सतीश कुमार ने बताया कि एसीपी विवेक त्यागी, इंस्पेक्टर पंकज ठकरान व अन्यों की टीम को सूचना मिली थी कि सनौली, पानीपत में हत्या के प्रयास में शामिल बदमाश दिल्ली के रोहिणी इलाके में अवैध हथियारों के साथ आने वाला है। सूचना मिलने के बाद एक टीम का गठन किया गया। इस बीच टीम ने जापानी पार्क, रोहिणी में स्कोर्पियो सवार युवक को छानबीन के लिए रोका। मुखबिर के इशारे पर उसकी कार की तलाशी लेने पर पिस्टल व दो कारतूस मिले। ड्राइवर सीट के नीचे एक तमंचा और कारतूस बरामद हुआ। आरोपित ने अपने चाचा पर हमला करने की बात कबूल की।

नई दिल्ली से आप प्रत्याशी रहे सोमनाथ भारती ने चुनाव परिणाम को दी चुनौती, चुनाव आयोग को बताया भाजपा का एजेंट

अपने आकाओं के आदेश पर चुनाव आयोग ने बांसुरी स्वराज के अतिरिक्त 16 लाख रुपए को भाजपा के खाते में दिखा दिया- सोमनाथ भारती

नई दिल्ली लोकसभा सीट से प्रत्याशी रहे आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता सोमनाथ भारती ने अपने चुनाव परिणाम को हाईकोर्ट में चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग भाजपा का एजेंट के रूप में काम कर रहा है। नॉर्थ-वेस्ट दिल्ली को छोड़ दें तो बाकी छह सीटों पर भाजपा को 52-53 और इंडिया गठबंधन को 42-43 फीसद वोट मिलना कोई इत्तेफाक की बात नहीं है। इसलिए उन्होंने कई आधार पर चुनाव परिणाम को चुनौती है। मसलन, चुनाव आयोग ने प्रत्याशी की खर्च सीमा 95 लाख तय की थी, लेकिन भाजपा प्रत्याशी बांसुरी स्वराज ने 16 लाख रुपए अधिक खर्च कर डाले और चुनाव आयोग इस पैसे को भाजपा के खाते में दिखा दिया। इसी तरह, मतदान के दिन हर पोलिंग बूथ पर भाजपा के एजेंट बांसुरी स्वराज का पम्पलेट लेकर बैठे थे और मतदाताओं को प्रभावित कर रहे थे। मेरी शिकायत के बाद भी रिटर्निंग ऑफिसर ने कोई कार्रवाई नहीं की। भाजपा ने सभी सीटों पर चुनावी प्रक्रिया में जमकर धांधलेबाजी की और धोखे से परिणाम अपने पक्ष में करा लिया।

नई दिल्ली लोकसभा सीट प्रत्याशी रहे आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता सोमनाथ भारती ने रविवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर कहा कि 4 जून को लोकसभा चुनाव के नतीजे आए। इसमें दिल्ली की सातों लोकसभा सीटें भाजपा जीत गई, जबकि पूरे देश में वो मात्र 240 सीटों पर सिमट कर रह गई। यानि जनता ने भाजपा को 272 का पूर्ण बहुमत नहीं दिया। सबको लगा कि केवल चुनिंदा जगहों पर मोदी जी अलोकप्रिय हुए हैं। दिल्ली में वो अभी भी लोकप्रिय हैं, जबकि उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र समेत कई राज्यों में उनकी लोकप्रियता घटी है। दिल्ली की सातों लोकसभा सीटों पर भाजपा का वोट प्रतिशत देखा जाए तो ये चांदनी चौक में 53.46 फीसद, उत्तर पूर्वी दिल्ली में 53.10 फीसद, पूर्वी दिल्ली में 52.59 फीसद, नई दिल्ली में 53.48 फीसद, उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में 58.26 फीसद, पश्चिमी दिल्ली में 55.27 फीसद और दक्षिणी दिल्ली में 53.46 फीसद रहा। इसी तरह से इन सीटों पर इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों का वोट प्रतिशत चांदनी चौक में 44.22 फीसद, उत्तर पूर्वी दिल्ली में 44.16 फीसद, पूर्वी दिल्ली में 45.18 फीसद, नई दिल्ली में 44.23 फीसद, उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में 38.71 फीसद, पश्चिमी दिल्ली में 42.22 फीसद और दक्षिणी दिल्ली में 43.87 फीसद था। सोमनात भारती ने आगे कहा कि इसमें उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के अलावा बाकी सभी सीटों पर भाजपा को 52 से 53 फीसद वोट ही मिले। वहीं, इंडिया गठबंधन के प्रत्याशियों को 43 से 44 फीसद वोट मिले। इन सभी 6 सीटों का वोट प्रतिशत लगभग एक जैसा ही है, जो कि बड़ी असामान्य बात है। इससे कई सवाल खड़े हो रहे हैं।

इसलिए मैंने 11 जून को सारी जानकारी मांगते हुए चुनाव आयोग को पत्र लिखा। लेकिन आयोग का कोई जवाब नहीं आया। जब मैंने आयोग को दोबारा याद दिलाया कि चुनाव याचिका की 45 दिन की अवधि धीरे-धीरे खत्म हो रही है, आपने अभी तक मेरा जवाब नहीं दिया है। इसके बाद 18 जुलाई को चुनाव आयोग का जवाब आता है कि हम आपको की जवाब नहीं देंगे। अगर आपको जवाब चाहिए तो आप कोर्ट से ऑर्डर लेकर आओ।

सोमनाथ भारती ने कहा कि एक इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी जिसे 3 लाख 74 हजार 815 लोगों ने वोट दिया, चुनाव आयोग उसे साफ कह रहा है कि हम जवाब नहीं देंगे। इसके बाद हमारे पास कोर्ट में चुनाव याचिका दाखिल करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था, हमने याचिका दाखिल कर दी। चुनाव आयोग कितना पक्षपात कर रही है। उसका सबसे बड़ा सबूत है कि 11 जून को लिखे मेरे पत्र का जवाब उसने 18 जुलाई को दिया, जबकि 19 जुलाई चुनाव याचिका दाखिल करने का आखिरी दिन था। चुनाव आयोग आज पूरी तरह से भाजपा की एजेंट बन गई है। जबकि यह उसकी ड्यूटी थी कि वो मेरे सारे सवालों के जवाब दें। सोमनाथ भारती ने चुनावी याचिका दाखिल करने के आधार बताते हुए कहा कि मैं जमीन से जुड़ा हुआ व्यक्ति हूं। और चुनाव के नजीतों से पहले से लोगों के बीच जाता रहा हूं। आज हर तरफ लोग यहीं चर्चा करते हैं कि ऐसे नतीजे कैसे आ सकते है? जबकि भाजपा और इंडिया गठबंधन का हर सीट पर एक जैसा वोट प्रतिशत कोई इत्तेफाक नहीं हो सकता है। सोमवार को इस याचिका पर सुनवाई होनी है। सोमनाथ भारती ने याचिका का पहला आधार बताते हुए कहा कि चुनाव के बाद आयोग हर प्रत्याशी को 30 दिन का समय देता है ताकि वो अपने चुनावी लेखे-जोखे का अकाउंट क्लोज करके खत्म कर सके

भाजपा अपने रेलवे विभाग से केस वापस कराकर बरार स्क्वायर की झुग्गियां बचाने का ले श्रेय- दुर्गेश पाठक

● भाजपा इन झुग्गियों में रह रहे परिवारों का साथ दे और रेलवे विभाग से केस वापस कराकर मामले को यही खत्म करा दे- दुर्गेश पाठक

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

पटेल नगर से बरार स्क्वायर तक रेलवे लाइन के किनारे बनी झुग्गियों को तोड़ने पर कोर्ट से लगी रोक का श्रेय ले रही भाजपा को आम आदमी पार्टी ने एक सुझाव दिया है। आप के वरिष्ठ नेता दुर्गेश पाठक ने कहा कि भाजपा शासित केंद्र सरकार के अधीन रेलवे आता है। इसलिए भाजपा अपने रेलवे विभाग से यह केस वापस कराए और बरार स्क्वायर की झुग्गियां बचाने का श्रेय ले ले। भाजपा के लिए यह एक अच्छा अवसर है कि वो इन झुग्गियों में रह रहे परिवारों का साथ दे और रेलवे से केस वापस कराकर इस मामले को यही पर खत्म करा दे। सोमवार को इस मामले की कोर्ट में सुनवाई होनी है। भाजपा को रेलवे विभाग से कहना चाहिए कि वो अपना वकील ही न भेजे। बता दें कि 22 जुलाई को रेलवे विभाग बरार स्क्वायर की झुग्गियां तोड़ने वाला था, लेकिन कोर्ट ने रोक लगा दी है।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं विधायक दुर्गेश पाठक ने कहा कि पिछले 10 दिनों से केंद्र की भाजपा सरकार का रेलवे विभाग ने पटेल नगर से बरार स्क्वायर तक रेलवे लाइन के पास बने घरों को नोटिस दिया था कि वो 22 जुलाई को उनके घर तोड़ देंगे। मैं कोर्ट का धन्यवाद करूंगा कि उन्होंने इस पर स्टे लगाया। अब भाजपा के कई नेता इसका श्रेय लेने में लगे हुए हैं। हम इस पर कोई तर्क- वितर्क नहीं करना चाहते हैं। मैंने पहले भी नई दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज और भाजपा के अन्य नेताओं से अपील की थी कि चूंकि रेलवे विभाग आपकी केंद्र सरकार के तहत आता है, आप उन्हें बोलकर इस नोटिस को रद्द कराएं और इस तोड़ फोड़ को रुकवाएं। लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया। बाद में कोर्ट ने इस पर स्टे लगाया। लेकिन फिर भी मैं उनसे एक अपील करना चाहता हूं।

दुर्गेश पाठक ने आगे कहा कि सोमवार को इस मामले में कोर्ट में सुनवाई है। भारतीय रेलवे और हमारे वकील दोनों अपनी दलीलें रखेंगे। कोर्ट दोनों का पक्ष सुनेगा। मैं बांसुरी स्वराज और सभी भाजपा के नेताओं से ये अपील करता हूं कि आप लोग कृपया अपने अधीन आने वाली रेलवे एजेंसी से कहें कि वो अपना केस वापस ले ले। वो उन सैकड़ों परिवारों का साथ दें और कहें कि उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। ताकि ये मामला यहीं खत्म हो जाए। सोमवार 11 बजे कोर्ट में इस केस की सुनवाई है। भाजपा के नेता रेलवे विभाग से कहे कि वो अपने वकील न भेजे, अगर उनके वकील आएं भी तो वो लोगों के खिलाफ कुछ न बोलें। मैं वहां एक-एक चीज नोट करूंगा और आपको दिखाउंगा। मैं भाजपा नेताओं से ये भरोसा चाहता हूं कि वो अपने रेलवे विभाग को फोन करके कहें कि उसके वकील झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले परिवारों का साथ दें।

संक्षिप्त खबरें

महिला ने खा ली कीटनाशक दवा

जमुई [झाझा] घरेलू विवाद में एक महिला ने कीटनाशक दवा खा ली जिससे उसकी तबीयत अचनाक बिगड़ गई जिसे आनन फानन में इलाज के लिए परिजनों की मदद से रेफरल अस्पताल झाझा लाया गया जहां चिकित्सक के द्वारा तबीयत बिगड़ी महिला का प्राथमिक उपचार किया लेकिन स्थिति नाजुक देख डॉक्टर ने उसे बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। रेफर हुई महिला की पहचान सोनो थानाक्षेत्र के बटिया गांव के रहने वाले नागेश्वर मंडल की पत्नी रूना देवी के रूप में हुई है। परिजनों ने बताया कि घरेलू विवाद में आकर रूना ने कीटनाशक दवा खा ली।

तीन लोगों के साथ एक युवक ने कि मारपीट

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के बैजलपुरा गांव में बच्ची के द्वारा गिटटी का छोटा टुकड़ा फेंक दिए जाने की मामूली विवाद को लेकर एक युवक ने तीन लोगों के साथ बिजली की मोटा तार से मारपीट करते घायल कर दिया। सभी घायलों का इलाज हेतु रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया गया जहां सभी का इलाज चिकित्सक के द्वारा किया गया। घायल की पहचान मो.इलियास उसकी पत्नी चुनिया खातुन और उसका बेटा इश्तियाक के रूप में हुई है। घायल मो. इलियास ने बताया कि मेरी बेटी पढ़ने के लिए स्कूल जा रही थी कि तभी एक गिटटी का छोटा टुकड़ा फेंका जो मेरे भाई जहांगीर के घर में जा गिरा तो इसी बात को लेकर जहांगीर की पत्नी गाली गलौज करने लगी और जबहमलोगों ने गाली गलौज दिए जाने का विरोध किया तो उसका बेटा सोहिल अंसारी ने हमलोगों के साथ बिजली की तार से बेरहमी से मारते हुए मारपीट किया।

दो भाईयों के बीच हुए पत्थरबाजी में एक महिला हुई घायल

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के बैजलपुरा गांव में दो भाईयों के बीच हो रहे झगड़े के दौरान जमकर कि जा रही पत्थरबाजी में एक महिला घायल हो गई। जिसे परिजनों की मदद से इलाज हेतु रेफरल अस्पताल लाया गया जहां घायल महिला का इलाज किया गया। घायल महिला की पहचान मो. जसीम की पत्नी नजमा खातुन के रूप में हुई है। घायल महिला के पति ने बताया कि मै अपने घर पर बैठकर छाता बना रहा था कि तभी बगलगीर इलियास और जहांगीर दोनो भाई किसी बात पर आपस में झगड़ा कर रहा था और दोनो तरफ से चलाए जा रहे ईट पत्थर में मेरी पत्नी को ईट लगने से वह घायल हो गई।

सरसा मोड़ भौराटांड़ के समीप स्कूटी सवार महिला को ट्रक ने रौंदा, हुई मौत

भागने के क्रम में गिद्धौर बाजार में जाम रहने के वजह से ट्रक छोड़ ड्राइवर हुए फरार

- गुस्साये परिजनों व स्थानीये लोगो ने एक घंटा तक किया सड़क जाम
- युवा समाजसेवी व स्थानीये पुलिस प्रशासन ने समझा-बुझा कर जाम को हटाया

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर(जमुई)रविवार दोपहर गिद्धौर-जमुई 333 अ मुख्यमार्ग के सरसा मोड़, भौराटांड़ के समीप एक तेज गति में आ रहे एक अनियंत्रित ट्रक जिसका नंबर हइ 37ए 5619 ने पीछे से स्कूटी सवार महिला को रौंद दिया।जिससे उसकी मौत घटनास्थल पर ही हो गई। इधर इस घटना की सूचना स्थानीय लोगों के द्वारा गिद्धौर थाने पुलिस को दी गई। सूचना मिलने के उपरांत पुलिस ने भाग रहे ट्रक को गिद्धौर बाजार के पास पकड़ लिया।वही बाजार जाम रहने के कारण ट्रक ड्राइवर मौके से फरार हो गया।पुलिस ने ट्रक को कब्जे में ले लिया। वही सड़क हादसे में महिला की मौत के बाद मृतक के परिजनों व स्थानीय ग्रामीणों ने एक घंटे तक सड़क जाम कर दिया और मौके पर वरीय पदाधिकारियो को बुलाने की जिद पर अड़ गए। गिद्धौर पुलिस व राष्ट्रीय सहारा अखबार के रिपोर्टर अजीत कुमार यादव के पहल से परिजनों व स्थानीये ग्रामीणें को समझा बूझा कर सड़क जाम को हटाया और मृतक के परिवार को हर संभव मदद का आश्वासन दिए। मृतक महिला की पहचान रीता देवी उम्र 40 पति विजय राम कन्हैया टोला खड़कपुर गांव के रूप में हुई है। जानकारी के अनुसार मृतक रीता देवी अपने दामाद मिथुन कुमार के साथ स्कूटी पर सवार होकर अपने बहन के घर गिद्धौर आ रही थी। तभी गिद्धौर थाना क्षेत्र के सरसा मोड़ के पास स्कूटी अनियंत्रित हो गया जिससे पीछे बैठी रीता देवी बीच सड़क पर गिर गई। इसी दौरान एक तेज गति से आ रहे ट्रक ने महिला को कुचलते हुए भाग निकला। जिससे उक्त महिला की मौत घटनास्थल पर ही हो गई। हालांकि इस घटना में स्कूटी चला रहे उसके दामाद मिथुन कुमार बाल-बाल बच गये। वहीं इस घटना के बारे में थानाध्यक्ष रीता कुमारी ने बताया कि सड़क दुर्धटना में एक महिला की मौत हो गई है।वही सड़क दुर्धटना के उपरांत भाग रहें ट्रक को पकड़ लिया गया है।महिला के शव को कब्जें में लें पोस्टमार्टम हेतु जमुई सदर अस्पताल भेज दिया है।वही पुलिस मामले की को ले आगे की कार्रवाई कर रही है।

गायत्री ज्ञान मंदिर में गुरू पूर्णिमा पर हुआ हवन पूजन और कार्यशाला

आचार्य ने बताया कि गुरू शिष्य के बीच के पावन बंधन होता है

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] नगर क्षेत्र के रेलवे कॉलौनी में स्थित गायत्री ज्ञान मंदिर में रविवार को गुरू पूर्णिमा श्रद्धालुओं के द्वारा मनाई गई। मंदिर में सुबह से ही गायत्री परिवार के सभी सदस्य सहित आसपास के रहने वाले श्रद्धालु मंदिर परिसर में पहुंचे और माता गायत्री की विशेष पूजा में शामिल हुए। मंदिर में उपस्थित श्रद्धालु के बीच विशेष हवनपूजन हुआ जिसमें उपस्थित श्रद्धालुओं ने माता गायत्री का स्मरण करते हुए गायत्री महामंत्र का जाप दुहराकर अपने जीवन से नकारत्मक को खत्मकर सकरात्मक शक्ति प्राप्ति की मंगल कामना किया और उसके बाद संस्कारशाला का आयोजन किया गया जिसमें लोगों को गुरू- शिष्य के बीच पवित्र रिश्तों के बारे में मंदिर के आचार्य ज्ञान प्रकाश ने प्रमुख ज्ञान देते हुए बताया कि गुरू पूर्णिमा गुरू और शिष्य के पवित्र बंधन का पर्व है जिसमें अनुशासन और समीक्षा के महत्व को लोगों के बीच लाना मुख्य उद्धेश्य है। उन्होनें बताया कि गुरू के द्वारा हमेशा अपने शिष्य को सही दिशा में आगे बढ़ाने को लेकर शिक्षा दिया जाता है ताकि वे हमेशा सत्य की राह पर चले। एक शिष्य का कर्तव्य होता है कि गुरू ने उसे जो ज्ञान समाज के कल्याण के लिए दिया है उसे हमेशा समाज में एक अच्छे तरीके से प्रस्तुत करे। आगे उन्होनें बताया कि गुरू शिष्य के बीच के पावन बंधन अटूट होता है जो संसार में एक अलग ही स्थान रखता है। मौके पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

कोल्हुआ के धोबघट माँ काली मंदिर में अखंड राम धुन यज्ञ का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। (जमुई)प्रखंड के कोल्हुआ पंचायत के धोबघट गांव में एक दिवसीय श्री श्री 1008 अखंड सीताराम धुन सह महायज्ञ शनिवार की संध्या नियम निष्ठा के साथ भक्तिमय माहौल में प्रारंभ हुआ। बताते चलें कि धोबघट गांव के ग्रामीणों द्वारा समस्त पंचायत वासियों के जन कल्याण व समाज के उत्थान के लिये एक दिवसीय सीताराम धुन महायज्ञ अष्टयाम का आयोजन करवाया गया। इस सीताराम महायज्ञ के प्रारंभ होते ही पूरे गांव का माहौल भक्तिमय हो गया। धोबघट गांव के मां काली मंदिर प्रांगण में हो रहे इस अष्टयाम में गिद्धौर, प्रधानचक, गेरूआडीह, सिमरीया, कोल्हुआ गांव सहित पंचायत भर के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने यज्ञ पूजन के अवसर पर माता सीता व भगवान राम की पूजा अर्चना की। साथ ही अपने परिजनों की सुख शांति की कामना की एवं मन्नते मांगी। श्री श्री 1008 अखंड सीताराम धुन महायज्ञ संपन्न कराने हेतु पू क्षेत्र के विद्वान पंडितों द्वारा पंचायत सहित प्रखंड भर के लोगों के अष्टयाम के दौरान लोक कल्याण हेतु अखंड हवन का आयोजन किया। इस मौके पर आयोजन समिति के सदस्य सत्येंद्र प्रसाद सिंह, राम जी सिंह, गिरीश प्रसाद, लड्डू साह, नीरज सिंह, शालीग्राम सिंह, ओंकार सिंह, रोहित सिंह, चंद्रभूषण सिंह, सोनू सिंह, पंकज सिंह, राजीव सिंह, राजेश सिंह, रघुनंदन सिंह, केदार सिंह, मुरारी सिंह मांगोबंदर के कीर्तन मंडली से गणेश यादव,लखन यादव,इंद्रदेव यादव सहित दर्जनों श्रद्धालु भक्त उत्साह पूर्वक अखंड रामधुन हरि कीर्तन धार्मिक आयोजन में मौजूद थे।

भूतपूर्व भाकपा नेता सह आयुर्वेदिक वैध दिवंगत कामरेड तिलो महतो की मूर्ति का हुआ अनावरण

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः-प्रखंड के पुरसंडा पंचायत के गहलौर गांव में रविवार को दिवंगत कॉमरेड तिलो महतो की मूर्ति अनावरण किया गया । कामरेड स्वर्गीय तिलो महतो के 8 वीं पुण्यतिथि के मौके पर इस्लामनगर पूर्वी क्षेत्र के जिला परिषद प्रतिनिधि सुनील व्यास एवं कामरेड नेता सुनील सिंह, जदयू नेता नीतीश कुमार एवं पुत्र कौशल कुमार ,राजेश कुमार,बालमुकुंद कुमार ने संयुक्त रूप से विधिवत फीता काट कर मूर्ति का अनावरण किया। इस मौके पर उपस्थित नेता एवं गांव के दर्जनों महिला पुरुष कामरेड दिवंगत तिलो महतो के मूर्ति पे पुष्प अर्पित किया। वहीं दिवंगत तिलो महतो के पुत्र कौशल कुमार ने जानकारी देते हुए बताया की मेरे पिता का 16 मार्च 2016 को नवादा सिकंदरा मुख्य मार्ग माहना पुल के समीप रोड ऐक्सिडेंट में मौत हो गई थी।तभी हमलोगों ने यह प्रण लिया था की उनका मूर्ति का अनावरण करेंगे ।आज वह शुभ दिन आया और अपने पिता का मूर्ति अनावरण कर सपना पूरा किया।वहीं मेरे पिता जी एक आयुर्वेद डॉक्टर भी थे । जो पूरा क्षेत्र उनको वैध जी के नाम से जानते थे।दूर दूर से इनके पास मरीज आते थे,वहीं जिला परिषद प्रतिनिधि सुनील व्यास ने कहा की दिवंगत तिलो महतो जी एक संघर्षशील व्यक्ति थे । सत्य के राह पर चलने वाले को हमेशा साथ देते थे। वे जमीनी एवं किसानी नेता थे।वे हमेशा गरीबी,मजलूमों की आवाज उठाते थे और हक के लिए लड़ते थे। बहुत स्वभावशील, मृदभाषी व्यक्ति थे। वहीं भाकपा नेता कामरेड सुनील सिंह ने कहा की दिवंगत तिलो महतो मृत्यु के तत्पश्चात गांव एवं समाज के लिए बहुत कार्य किए है, कॉमरेड स्वर्गीय तीलो महतो की लगन एवं समाज के प्रति हमेशा आगे आकर बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे तभी 1990 के दशक के प्रारंभ में ही भाकपा झ माले से आ जुड़े थे तब सन 2000 में भाकपा के पुरसंडा पंचायत सचिव बनाया गया था, और पार्टी से जुड़ने के बाद अपनी पार्टी के मजबूत करते हुए गरीब, किसान,मजदूर की समस्याओं के लिए हमेसा आवाज उठाने का काम किए थे, वे कर्मठ व ईमानदार नेता के रूप में स्थापित रहे। वहीं अन्य लोगो ने उनके व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाले, वहीं मौके पर सरपंच प्रतिनिधि अजित कुशवाहा,धर्मेंद्र यादव,प्रकाश यादव, लाटो महतो,मसुदन महतो सहित गहलौर ग्रामवासी मौजूद थे

पंप चालकों ने एकजुट होकर किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रविवार को प्रखंड क्षेत्र के सर्किल नंबर एक दुहरपहड़ी हाई स्कूल प्रागंण में हर घर नल जल योजना के तहत पेयजल आपूर्ति के लिए लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग द्वारा नियमित संवेदकों के द्वारा नियुक्त पंप चालकों की एक बैठक पंप चालक कल्याण मंच बिहार के बैनर तले कि गई। बैठक की अध्यक्षता जिला परिषद सह शिक्षा समिति के अध्यक्ष धर्मदेव यादव के द्वारा किया गया। बैठक में हर घर नलजल योजना के तहत लगे सभी वार्डो में फ्लोराइड ट्रीटमेंट संयत्र पाइप, मोटर की नियमित रख रखाव कराई जाए, पंप चालकों को नियमित मानदेय भुगतान कराने, पंप चालकों को ठेकेदारों के चंगुल से छुड़ाकर पंपचालकों की सेवा विभाग को सौंपने, पंप चालको की हर माह नियमित बैठक का प्रस्ताव पारित करने, अधूरे पड़े योजनाओं को उच्च स्तरीय जांच का प्रस्ताव पारित करने सहित अन्य कई महत्वपूर्ण बिंदुओं बैठक में रखते हुए पारित किया गया। बैठक में उपस्थित सभी पंप चालकों ने ठेकेदार के खिलाफ पुरजोर विरोध करते हुए सर्वसहमति से प्रस्ताव पारित किया कि पंप चालक कल्याण मंच बिहार के अध्यक्ष पंकज कुमार को ठेकेदार के द्वारा झूठे मुकदमा में फंसा दिया गया है उसे ठेकेदार वापस ले अन्यथासड़क से लेकर न्यायलय तक संघर्ष करेगे। बैठक में संघ के सचिव सुरेश मंडल, इंद्रजीत कुमार यादव, सुरेंद्र यादव, अर्जून रजक, गिरिधारी यादव, गोपाल यादव, कर्म टुडु, सकलदेव हेम्ब्रम सहित बड़ी संख्या में पंप चालक मौजूद थे।

सदस्यता अभियान को लेकर जिला कार्यशाला का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रविवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई झाझा के तत्वाधान में सदस्यता अभियान को लेकर जिला कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में जिले भर के कार्यकताओं ने भाग लिया। प्रदेश मंत्री नीतीश कुमार पटेल, प्रांत एसएफडी सहसंयोजक सूरज बरनवाल, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य रूपेश भारती, नगर मंत्री हरिनंदन प्रजापति ने सम्मिलित रूप से दीप प्रज्वलित कर विद्या की देवी मां सरस्वती व युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी विवेकानंद के तेल चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। मौके पर जमुई नगर मंत्री अमन सिंह चंदेल ने अभाविप के प्रदेश मंत्री नीतीश पटेल को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। मौके पर अभाविप प्रदेश मंत्री नीतीश पटेल ने कहा कि विद्यार्थी परिषद विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन होने का कीर्तिमान स्थापित किया है, वर्तमान में 50 लाख से अधिक के सदस्यता वाले छात्र संगठन है, आगामी 22 जुलाई से सदस्यता अभियान प्रारंभ होने जा रही है जिसमें कार्यकर्ता तीन चरणों में सदस्यता को पूरा करेंगे तथा नए कार्यकर्ता बनाएंगे।विद्यार्थी परिषद देशव्यापी कार्यों के लिए जाने जाते हैं, 2015 में विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता विधान सभा के खिलाफ आंदोलन किया था, परिणाम स्वरूप सरकार को हार मानकर विद्यार्थियों की समस्या को मंजूरी देना पड़ा। यह विद्यार्थी परिषद कार्यकताओं का कुशल नेतृत्व को दशार्ता है। उन्होंने बृहद पैमाने पर कार्यकताओं को परिषद से जुड़कर कार्य करने का आवाहन किया। इस उपलक्ष्य पर अभाविप प्रान्त एसएफडी सह संयोजक सूरज बरनवाल ने कहा कि विद्यार्थी परिषद करोड़ों युवाओं के पथ प्रदर्शक है, ऐसे संगठन के कार्यकर्ता होना अपने आप में गर्व की बात है। आगामी दिनों में विद्यार्थी परिषद का सदस्य अभियान होना है, जिसमें कार्यकर्ता परिसर में जाकर नए कार्यकर्ता को संगठन से जोड़ेंगे। परिषद के कार्यकर्ता वर्ष भर विद्यार्थियों के लिए चिंतन करती है तथा समाज से जुड़ी समस्याओं का समाधान करती है। कोरोना जैसे महामारी में परिषद के कार्यकर्ता अपनी जान के चिंता किए बिना समाज की सेवा के लिए आगे थे। मौके पर अभाविप नगर मंत्री हरिनंदन प्रजापति ने कहा कि 22 जुलाई से अभाविप का सदस्यता अभियान प्रारंभ हो रहा है, हम सबों में सदस्यता को लेकर काफी उत्साह है। आज जिला कार्यशाला बड़े जोश - खरोश से मनाया गया। इस कार्यशाला में जिले भर के कार्यकताओं ने भाग लिया सबों का आभार व्यक्त करते हैं तथा प्रांत के प्रांत मंत्री का झाझा की धरती पर आगमन होना हम सबों के लिए गौरव का विषय है। मौके पर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य कृष्ण कुमार , जमुई नगर मंत्री अमन सिंह चंदेल, राजेश यदुवंशी, अखिलेश सिंह, सत्यम सिंह, नीतिश केशरी, साजन कुमार दास, गुड़िया शर्मा, प्रिंस कुमार, आदि दर्जनों मौजूद रहे।

सहकारिता मंत्री ने ग्यारह पैक्स गोदाम का किया शिलान्यास

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई बिहार के सहकारिता मंत्री डॉ० प्रेम कुमार ने शनिवार को जमुई जिला के ई. अलीगंज प्रखंड अंतर्गत सहोड़ा और दीननगर , लक्ष्मीपुर प्रखंड अंतर्गत लक्ष्मीपुर , चकाई प्रखंड अंतर्गत परांची , बोंगी , पोझा और रामचंद्रडीह , झाझा प्रखंड अंतर्गत बोड़वा और केशोपुर , सोनो प्रखंड अंतर्गत दहियारी तथा बरहट प्रखंड अंतर्गत कटौना पैक्स के लिए गोदाम का शिलान्यास किया। सरकारी अतिथि गृह परिसर में आयोजित कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री रत्नेश सदा , विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री सुमित कुमार सिंह , बीजेपी जिलाध्यक्ष कन्हैया कुमार सिंह , जदयू जिलाध्यक्ष शैलेन्द्र महतों समेत कई गणमान्य लोग मौजूद थे। शिलान्यास किए गए गोदामों में चार गोदाम 1000 मिट्रिक टन एवं सात गोदाम 500 मिट्रिक टन का शामिल है। सहकारिता मंत्री ने इस अवसर पर चकाई प्रखंड अंतर्गत नवाडीह शिल्फरी पैक्स के लिए 1000 मिट्रिक टन के नव निर्मित गोदाम का उद्घाटन भी किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि जमुई जिला के शेष अन्य पैक्स और व्यापार मंडल जहां गोदाम नहीं है उन सभी पैक्स और व्यापार मंडलों में भूमि की उपलब्धता के अनुसार गोदाम का निर्माण कराया जाएगा। जिला सहकारिता पदाधिकारी आकिब जावेद के अलावे संबंधित पैक्सों के अध्यक्ष इस अवसर पर उपस्थित थे।

गुरु ज्ञान मानव जीवन का आधार: प्रो. गौरीशंकर

प्रात : किरण संवाददाता

जमुईः-बिहार राज्य के कुलाधिपति सह राज्यपाल एवं मुंगेर विश्वविद्यालय की कुलपति के निर्देश पर केकेएम कॉलेज कि सेमिनार हॉल में गुरु-शिष्य परंपरा पर लघु गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य डॉ. गौरी शंकर पासवान ने की। अपने अध्यक्षीय प्रबोधन में के.के.एम कॉलेज के स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष सह प्रभारी प्राचार्य डॉ गौरी शंकर पासवान ने कहा कि गुरु शिष्य परंपरा नूतन नहीं, बल्कि पुरातन है। आज ही गुरु पूर्णिमा के दिन महर्षि वेद व्यास का जन्म करीब 3000 वर्ष पहले हुआ था। अतः गुरु पूर्णिमा को व्यास दिवस भी कहा जाता है। प्रो पासवान ने कहा कि गुरु ज्ञान मानव जीवन का आधार है। गुरु के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। गुरु एक जीवंत रोड मैप की तरह होते हैं, जो खुद रोड मैप के साथ चलते हैं और शिष्यों को भी प्रेरित करते हैं। गुरु शिष्य परंपरा को कायम रखना तथा भारत को पुनः विश्व गुरु बनाना वर्तमान समय की मांग है। गुरु उस मोमबत्ती की तरह होते हैं, जो स्वयं जलकर दूसरों को भी प्रकाशित करते हैं। प्रो पासवान ने कहा कि एक आदर्श गुरु वह है जो अपने शिष्य को ज्ञानवर्धन,शिक्षा दीक्षा के साथ-साथ उसके अंदर चरित्र का निर्माण करें, उसमें सुसंस्कार विकसित करें एवं सही मार्गदर्शन करें। मंच संचालन जंतु विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. दीपक कुमार ने कहा कि गुरु का महत्व भगवान से भी बड़ा है। शिष्यों को ईश्वर का दर्शन और इंट्रोडक्शन कोई दूसरा नहीं गुरु ही कराता है। हम गुरुकुल से निकालकर विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय होते हुए कंप्यूटर, सुपर कंप्यूटर तथा इंटरनेट की दुनिया में प्रवेश कर चुके हैं। उन्होंने गुरु और गुरु पूर्णिमा के महत्व पर बच्चों को अवगत कराया। मनोविज्ञान के विभागाध्यक्ष प्रो. रणविजय कुमार सिंह ने लघु संगोष्ठी कार्यक्रम का समापन करते हुए कहा कि गुरु की महिमा अपरंपार है। इनके संबंध में बखान करना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। कुल मिलाकर गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश का दर्जा दिया गया है,जो पूरे विश्व को शिरोधार्य है। उन्होंने छात्र-छात्राओं से अपील की कि आगामी 4 सितंबर को हीरा जयंती के अवसर पर भव्य कार्यक्रम होगा,जिसमें प्रतिभागी के रूप में आपकी उपस्थिति आवश्यक है। मौके पर डॉ. अनिंदो सुंदर पोले,डॉ सत्यार्थ प्रकाश, प्रो सरदार राय, डॉ श्वेता कुमारी सिंह, डॉ अजीत कुमार भारती, डॉ. प्रीति कुमारी एवं कार्यालय सहायक रवीश कुमार सिंह, सहायक सुशील कुमार आदि ने गुरु शिष्य परंपरा पर अपने-अपने विचार रखें। लघु गोष्ठी में दर्जनों छात्र-छात्राओं ने गुरु शिष्य परंपरा पर अपना व्याख्यान दिया। काफी संख्या में कार्यक्रम में छात्र और छात्राएं उपस्थित थे।

खाना में पानी गिर जाने की शिकायत पर मां बेटी के साथ हुई मारपीट

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] खाना बनाने के दौरान खाना में छत का पानी गिर जाने की शिकायत करने पर एक मां बेटी के साथ उसकी गोतनी के द्वारा मारपीट कि गई। मामला थानाक्षेत्र के बैजलपुरा गांव की है। घायल महिला सलमा खातुन और उसकी बेटी आशिया प्रवीण रेफरल अस्पताल पहुंचकर इलाज करवाया। घायल महिला ने बताया कि मेरे घर के बगल में गोतनी चुनिया खातुन का दो मंजिला मकान है। मै अपने घर के बाहर चूल्हा पर खाना बना रही थी कि तभी वह अपने छत से मेरे चूल्हा पर पानी गिरा दिया जिससे चूल्हा पर बन रहा खाना बर्बाद हो गया जिसकी शिकायत करने पर गोतनी ने मारपीट की घटना को अंजाम दिया।

रास्ता के विवाद पर दंपति के साथ कि गई मारपीट

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रास्ता के विवाद को लेकर एक दंपति के साथ गांव के ही रहने वाले एक पिता पुत्र ने मारपीट करते हुए घायल कर दिया। मामला थानाक्षेत्र के औरैया गांव की है। घायल दंपति की पहचान अजय यादव और उसकी पत्नी कविता देवी के रूप में हुई है। जिसका इलाज लोगों की मदद से रेफरल अस्पताल में डॉक्टर के द्वारा किया गया। इलाज के दौरान घायल अजय यादव ने बताया कि रास्ता के विवाद को लेकर दिनेश यादव और उसका पुत्र रामप्रवेश यादव मेरे साथ विवाद कर रहा था जिसके बाद वे दोनो लोहे के सब्बल से मेरे साथ मारपीट करते हुए मुझे घायल कर दिया और जब मेरी पत्नी मुझको बचाने के लिए आई तो वे दोनो मेरी पत्नी के साथ भी मारपीट की घटना को अंजाम देते हुए घायल कर दिया।

टयूशन पढ़कर अपने घर जा रहे इंटर के छात्र के साथ कुछ युवकों ने मारपीट कर किया घायल

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] मुख्य बाजार से कोचिंग संस्थान से टयूशन से पढ़कर घर जा रहे इंटर के एक छात्र के साथ कुछ युवकों ने रास्ता रोककर उसके साथ मारपीट की घटना को अंजाम दिया है। मारपीट की घटना महापुर जाने वाली मांग स्थित गढ़ी गांव के समीप हुई है। घायल छात्र की पहचान गढ़ी गांव के रहने वाले मनोज यादव का पुत्र नीतीश कुमार के रूप में हुई है। परिजनों को घटना की जानकारी मिलने पर परिजन घटना स्थल पर पहुंचा तो नीतीश घायल अवस्था में पड़ा हुआ था जिसको उठाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया जहां घायल नीतीश का इलाज चिकित्सक के द्वारा किया गया। घायल छात्र के पिता ने बताया कि गांव में ही पुराना झगड़ा हुआ था जिसमें मेरा बेटा उस झगड़ा में था ही नही लेकिन गांव के कुछ युवकों को मेरे बेटे के उपर झगड़ा का संदेह था। उसी बात की रंजिश को लेकर जब मेरा टयूशन पढ़कर साइकिल से अपने घर जा रहा था तभी कुछ युवकों ने मेरे बेटे का रास्ता रोकर उसके साथ पीतल के बने पंजा से मारपीट कर घायल कर दिया।

सम्पादकीय

व्यवस्था को विकृत करती कांवड राजनीति

देश की संवैधानिक व्यवस्था के तहत समय-समय पर समसामयिक परिस्थितियों के अनुरूप कानून बनाने का प्राविधान रखा गया है। भारतीय प्रशासनिक सेवा सहित अनेक सरकारी अधिनियमों में सेवारत जनसेवक को नेम प्लेट लगाना आवश्यक किया गया है जिसमें जनसेवक का नाम, पद एवं पदस्थापना का स्थान अंकित होना चाहिए। इस कानून का अनुपालन अतिविशिष्ट व्यक्ति के आगमन के दौरान देखने को मिलता है। बाकी सामान्य कार्यकाल के दौरान इस दिशा में अनुशासनहीनता ही दिखती है। इसी तरह खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम 2006 के तहत होटल, रेस्टोरेन्ट, ढाबों और ठेलों सहित भोजनालयों के मालिकों आदि को अपना नाम, फर्म का नाम, पंजीकृत पता, लाइसेन्स नम्बर आदि लिखना अनिवार्य है। जागो ग्राहक जागो, योजना के अन्तर्गत नोटिस बोर्ड पर सामग्री की मूल्य सूची लगाना भी जरूरी है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश में कांवड यात्रा के दौरान मार्ग की दुकानों पर इसे कडाई से लागू करने की पहल होते ही अनेक राजनैतिक दलों ने हास्यास्पद दलीलों के आधार पर विरोध करना शुरू कर दिया। व्यवस्था को विकृत करती कांवड राजनीति। सरकार की प्रत्येक पहल पर विरोध करने की मानसिकता से ग्रसित हो चुके विपक्ष का लक्ष्य अब केवल और केवल नकारात्मकता फैलाकर एक पक्ष को प्रसन्न करना रह गया है ताकि वोट बैंक में इजाफा हो सके, समर्थकों की भीड बढ सके और निर्मित की जा सके एक इशारे पर आन्तरिक युध्द का वातावरण। राज्यों की पुलिस तथा भारतीय रेल के कर्मचारियों के अलावा शायद ही किसी अन्य महकमे के सेवाकर्मी अपने परिधान पर नेम प्लेट लगाते हों। वरिष्ठ अधिकारियों से तो यदि नाम-पद पूछ लिया जाये तो फिर उनके प्रतिशोध का शिकार होने से बचना ही मुश्किल हो जाता है। बडे साहब की कौन कहे उनके अधीनस्थ भी यही रवैया अपनाते हैं। गुड खाने वाला व्यक्ति गुड न खाने की सीख कैसे दे सकता है। सरकारी तंत्र की मनमानियों पर चलते हुए अनेक संगठनों ने तो खुल्लम खुल्ला लोक स्वीकृति के नाम पर असंवैधानिक कृत्यों को सही ठहराने की बेशर्मी भी दिखाना शुरू कर दी है। विगत दिनों चिकित्सकों के डाक्टर लिखने का मुद्दा गमार्या। नियमतः चिकित्सक अपने नाम के आगे डाक्टर नहीं लिख सकता है। वह नाम के बाद अपनी योग्यता लिखने के लिए अधिकृत है। इस मुद्दे पर आईएमए ने अपने इस मनमानी को लोक स्वीकृति का नाम देकर संवैधानिक व्यवस्था को सरेआम मुखौल उडा। स्वयं-भू कानून निमार्ताओं की बाढ ने देश की संवैधानिक व्यवस्था को तार-तार करना शुरू कर दिया है। दुकानों पर नाम, पता, संपर्क नम्बर, मूल्य सूची आदि लिखने की व्यवस्था को तोडने के पीछे छदम्म भेष में धोखाधडी करने की मंशा स्पष्ट रूप से दिखती है। कानून के तहत यह एक दण्डनीय अपराध है। व्यक्ति की नियत ही महात्वपूर्ण होती है। आत्मरक्षा में चलाई गई गोली या हत्या के लिए चलाई गई गोली में बहुत अन्तर होता है। पहचान छुपाने के पीछे जालसाजी, धोखाधडी, सोची समझी साजिश, क्षति पहुंचाने की मंशा, धार्मिक भावनाओं पर आघात, सामाजिक वैमनुष्यता के लिये वातावरण निर्मित करके दंगा फैलाने का षडयंत्र जैसे अनेक अपराध स्थापित होते हैं। केवल कांवड यात्रा मार्ग पर ही नहीं बल्कि समूचे देश में यह नियम कडाई से लागू होना चाहिए ताकि संविधान की वास्तविक रक्षा हो सके। सरकारी सेवाओं के लाभ लेने के लिए नाम के साथ-साथ जाति, वर्ग और सम्प्रदाय आदि का शोर मचाया जाता है परन्तु जब सरकारी नियमों के अनुपालन की समय आता है तो विरोध में आसमान सिर पर उठाने की पहल शुरू हो जाती है। अनेक राजनैतिक दल केवल विरोध करने को ही अपना आदर्श मानते हैं। उपलब्धियों पर प्रमाण चाहते हैं। विकास पर नकारात्मकता परोसते हैं। ऐसे दलों के मुखिया अपने घर की बातों को मनमाने तर्कों, प्रमाणों और साक्ष्यों के आधार पर बवन्डर बनाकर दुनिया के सामने पेश करते हैं। देश की बढती साख में बट्टा लगाने वाले सत्ता पर काबिज होने के लिए जायज से अधिक नाजायज संसाधनों का खुलकर उपयोग करने लगे हैं। धर्म की आड में जब हलाल जैसे टैग वस्तुओं की पैकिंग पर लगाये जा रहे हैं तब किसी ने कोई आवाज नहीं उठायी। थूक और मूत में सने उत्पादनों की धडल्ले से हो रही बिक्री के अनेक सबूत सामने आने के बाद भी कार्यवाही न होने से ऐसे कृत्य करने वालों के मंसूबे दिन दुगने-रात चौगुने होकर बढने लगे हैं। वर्तमान में संविधान की धारायें केवल और केवल निरीह, लाचार और राष्ट्रभक्तों पर ही लागू हो रहीं है जबकि अनेक जनसेवक, जनप्रतिनिधि, जनसेवक जैसे दमगेधारी अपनी मर्जी से कानून बनाते हैं, उन्हें लागू करते है

मप्र में आखिर कितने गोविंद सिंह

राकेश अचल

मप्र विधानसभा के लिए 7 बार चुने जा चुके आठवीं बार चुनाव क्या हारे उनकी शामत आ गयी। प्रदेश सरकार के इशारे पर जिला प्रशासन 73 साल के गोविंद सिंह को बेघर करने पर आमादा है। डॉ गोविंद सिंह के गृह गांव लहार में नगरपालिका डॉ गोविंद सिंह कीकोठी को तोड़ने पर आमादा है। नगरपालिका का कहना है कि डॉ गोविंद सिंह ने सरकारी जमीन पार अतिक्रमण कर कोठी बनाई है। डॉ गोविंद सिंह के साथ कोई सहानुभूति न बरतते हुए अब सवाल ये है कि प्रदेश में और कितने डॉ गोविंद सिंह हैं जिन्होंने कथित तौर पर सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर लिया है।

विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता डॉ गोविंद सिंह के खिलाफ आज जो कार्रवाई हो रही है उसके बीचे अदावत साफ झलकती है और ये अदावत है मौजूदा स्थानीय विधायक की। विधायक जी ने चूंकि डॉ गोविंद सिंह जैसे कांग्रेस के दिग्गज को हराया है इसलिए राज्य सरकार को उनकी हर बात मानना पड़ रही है। डॉ गोविंद सिंह जिस नगरपालिका के 40 साल पहले अध्यक्ष रह चुके हैं वो ही नगर पालिका डॉ गोविंद सिंह को सरकारी जमीन का अतिक्रमणकर्ता बताकर उनके घर के सामने बुलडोजर लिए खड़ी है।

मुमकिन है कि डॉ गोविंद सिंह ने आम नेताओं की तरह सरकारी जमीन पर अतिक्रमण किया हो, लेकिन सवाल ये है की प्रदेश में 19 महीने को छोड़ 2003 से भाजपा की सरकार है, ऐसे में सरकार को डॉ गोविंद सिंह द्वारा किया गया अतिक्रमण क्यों नहीं दिखा? या तो डॉ गोविंद सिंह से सरकार का गठजोड़ रहा होगा, या सरकार उनसे डरती होगी? इसमें कोई संदेह नहीं की डॉ गोविंद सिंह ने अपने 34 साल के राजनीतिक कैरियर में सिर्फ घास नहीं छिली होगी। कुछ कमाया-धमाया होगा। हर विधायक ऐसा करता है। दल कोई भी हो। लेकिन सवाल ये है कि सरकार के निशाने पर अकेले डॉ गोविंद सिंह ही क्यों हों?

सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण करना एक आम प्रवृत्ति है। ये प्रवृत्ति खास लोगों में ज्यादा होती है। पार्षद से लेकर केंद्रीय मंत्री तक इस बीमारी से मुक्त नहीं है। वे भी जो अत्यंत साधारण परिवारों से राजनीती में आये हैं और वे भी जो चांदी की चम्मचें मुंह में रखकर पैदा हुए, यानि राजा -महाराजा। राज्य सरकार में यदि साहस है तो उसे अकेले एक डॉ गोविंद सिंह पार हाथ डालने के बजाय 2003 के बाद विधायक, सांसद, और मंत्री बने तमाम लोगों की सम्पत्तियों की जांच करने के लिए विधानसभा की एक समिति गठित करना चाहिए। मेरा विश्वास है कि यदि सही तरिके से जाँच की जाये तो निवर्तमानऔर वर्तमान मुख्यमंत्री से लेकर पहली बार मंत्री बने विधायक तक इस जद में आ जायेंगे।

एक पत्रकार के नाते मै अपने चार दशक से ज्यादा के कैरियर में ऐसे तमाम गोविंद सिंहों को जानता हूँ जो आरम्भ में लूना पर या टूटे स्कूटर पर चलते थे और आज उनकेपास हजारों करोड़ की चल और अचल सम्पत्ति है। इसमें सरकारी जमीने भी शामिल हैं। कुछ को तो सरकारी जमीने हड़पने की कोशिश में हत्या के अपराध जैसे आरोपों का समान करना पड़ा। मंत्री पद छोड़ने पड़े। लेकिन न किसी का मकान टूटा और न काम्प्लेक्स। हमारे अपने शहर में एक पूर्व मंत्री के संरक्षण में बने एक पंचतारा होटल के लिए सरकारी फुटपाथ पर कब्जा कर लिया गया, लेकिन मजाल है कि कोई नगर निगम उनके होटल की तरफ देखे भी '। आखिर वे सरकारी पार्टी के टीनोपाल से धुले नेता जो है।

डॉ गोविंद सिंह को भी मै दूध से धुला नहीं मानता। लेकिन इतना जनता हूँ कि वे दूसरे जन प्रतिनिधियों के मुकाबले कम लालची और दागदार हैं। उन्होंने बीहड़ की जमीन हड़पी या कस्बे की इसकी जांच यदि हो रही है तो खूब हो, लेकिन फिर एक डॉ गोविंद सिंह की नहीं सभी दलों के गोविंद सिंहों की हो। जांच और कार्रवाई का आधार अदावत नहीं होना चाहिए। मेरा दावा है कि प्रदेश के हरजिले में, हर दल में एक नहीं अनेक डॉ गोविंद सिंह मिल जायेंगे। जो एक बार विधायक या मंत्री बना उसने सरकारी सम्पत्ति को हड़पा है। उसके खिलाफ पिछले दो दशक में खासतौर पर मोदी युग में कोई ईडी या सीबीआई छापा मारने नहीं निकली। लोगों ने व्हाइट हॉउस जैसे महल तक बना लिये। शहरों में फुटपाथ तक हड़प लिए लेकिन उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं, क्योंकि वे या तो सरकारी दल के जन्मजात कार्यकर्ता हैं या फिर दल-बदल कर भाजपाई हो गए हैं। गोविंद सिंह का बुढ़ापा खुले में कटेगा या जेल में ये कोई नहीं जानता, लेकिन इतना तय है कि अदावत की ये राजनीति देश की तरह, उत्तर प्रदेश की तरह प्रदेश के राजनीतिक सौहार्द को भी चौपट कर देगी । राजनीतिक सौहार्द का अर्थ मिलकर प्रदेश को लूटने से बिलकुल नहीं। ये तो 2003 से लगातार मप्र में हो ही रहा है। मजेदार बात ये है कि माननीय अदालत ने भी अदावत की इस राजनीति कि पचड़े में पड़ने से इंकार करते हुए डॉ गोविंद सिंह कि परिजनों की याचिका को खारिज कर दिया है। यानि गेंद अब सरकार कि पाले में है।

भारत में तेजी से हो रहा है वित्तीय समावेशन

दरअसल, भारत में विभिन्न क्षेत्रों में हो रही अतुलनीय प्रगति को दशार्ने के लिए अब अपने सूचकांक विकसित करने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है क्योंकि वैश्विक स्तर पर वित्तीय एवं आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत विदेशी संस्थानों द्वारा विकसित किए गए सूचकांकों के आधार पर किए जाने वाले सर्वे में तो विभिन्न क्षेत्रों में भारत की प्रभावशाली प्रगति की सही तस्वीर पेश नहीं की जा रही है। इन सूचकांकों के आधार पर किए गए कई सर्वे में तो आश्चर्यजनक परिणाम दिखाई देते हैं। जैसे, एक सर्वे में भुखमरी के क्षेत्र में भारत की स्थिति को अफ्रीकी देशों, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश से भी बदतर बताया गया था। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विकसित किए गए वित्तीय समावेशन सूचकांक के आधार पर मार्च 2024 के परिणाम हाल ही में जारी किए गए हैं। इन परिणामों के अनुसार, भारत में वित्तीय समावेशन मार्च 2017 में 43 .4, मार्च 2021 में 53 .9 एवं मार्च 2023 में 60 .1 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2024 में 64 .2 प्रतिशत हो गया है। यह सूचकांक भारत में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में हुई अतुलनीय एवं स्थिर प्रगति को दशार्ता है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विकसित किया गया यह सूचकांक वित्तीय समावेशन के विभिन्न आयामों (नागरिकों की वित्तीय संस्थानों पर बढ़ती पहुंच, वित्तीय उत्पादों का बढ़ता उपयोग एवं वित्तीय सेवाओं की गुणवत्ता) पर देश में वित्तीय समावेशन के संदर्भ में जानकारी को 0 से 100 तक के मान में बताता है।

प्रहलाद सबनानी

लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं

भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकिंग, निवेश, बीमा, डाक एवं पेन्शन क्षेत्र के हितधारकों को शामिल करते हुए वित्तीय समावेशन सूचकांक विकसित किया है। दरअसल, भारत में विभिन्न क्षेत्रों में हो रही अतुलनीय प्रगति को दशार्ने के लिए अब अपने सूचकांक विकसित करने की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है क्योंकि वैश्विक स्तर पर वित्तीय एवं आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत विदेशी संस्थानों द्वारा विकसित किए गए सूचकांकों के आधार पर किए जाने वाले सर्वे में तो विभिन्न क्षेत्रों में भारत की प्रभावशाली प्रगति की सही तस्वीर पेश नहीं की जा रही है। इन सूचकांकों के आधार पर किए गए कई सर्वे में तो आश्चर्यजनक परिणाम दिखाई देते हैं। जैसे, एक सर्वे में भुखमरी के क्षेत्र में भारत की स्थिति को अफ्रीकी देशों, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, बंगलादेश से भी बदतर बताया गया था।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विकसित किए गए वित्तीय समावेशन सूचकांक के आधार पर मार्च 2024 के परिणाम हाल ही में जारी किए गए हैं। इन परिणामों के अनुसार, भारत में वित्तीय समावेशन मार्च 2017 में 43.4, मार्च 2021 में 53.9 एवं मार्च 2023 में 60.1 प्रतिशत से बढ़कर मार्च 2024 में 64.2 प्रतिशत हो गया है। यह सूचकांक भारत में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में हुई अतुलनीय एवं स्थिर प्रगति को दशार्ता है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विकसित किया गया यह सूचकांक वित्तीय समावेशन के विभिन्न आयामों (नागरिकों की वित्तीय संस्थानों पर बढ़ती पहुंच, वित्तीय उत्पादों का बढ़ता उपयोग एवं वित्तीय सेवाओं की गुणवत्ता) पर देश में वित्तीय समावेशन के संदर्भ में जानकारी को 0 से 100 तक के मान में बताता है। यदि मान कम है तो देश में वित्तीय समावेशन भी कम है और इसके विपरीत यदि मान अधिक है तो देश में वित्तीय समावेशन भी अधिक है। भारत में यह मान मार्च 2024 में बढ़कर 64.2 प्रतिशत हो गया है। उक्त वर्णित तीन आयामों में कई पैरामीटर शामिल हैं, इनका मूल्यांकन 97 संकेतकों के आधार पर किया जाता है। इस कार्यप्रणाली के कारण ही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा विकसित किया गया यह सूचकांक वित्तीय समावेशन का एक व्यापक संकेतक बन गया है। वित्तीय समावेशन सूचकांक प्रत्येक वर्ष के जुलाई माह में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी किया जाता है।

किसी भी देश में वित्तीय समावेशन के बढ़ने का आशय यह है कि उस देश के नागरिकों की उस देश के बैंकिंग संस्थानों तक पहुंच बढ़ रही है और यह उस देश की अर्थव्यवस्था के औपचारीकरण में मुख्य भूमिका निभाता है। वर्ष 2014 में भारत में प्रधानमंत्री जनधन योजना को लागू किया गया था और इस योजना के अंतर्गत विभिन्न बैकों में गरीब वर्ग के जमा खाते खोलकर उन्हें वित्तीय समावेशन का हिस्सा बना लिया गया था। आज प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत लगभग 52 करोड़ बैंक खाते खोले जा चुके हैं एवं इन जमा खातों में लगभग 2.35 लाख करोड़ रुपए की राशि जमा है। केंद्र एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा देश के गरीब वर्ग को दी जाने वाली सहायता/प्रोत्साहन राशि को भी इन खातों में आज सीधे ही जमा कर दिया जाता है, इसे प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण योजना के रूप में भी जाना जाता है, जिससे इस क्षेत्र में भ्रष्टाचार लगभग समाप्त हो गया है क्योंकि इससे अंततः लीकेज कम हुए है और यह सुनिश्चित हुआ है कि योजनाओं का लाभ अंतिम लाभार्थी तक सीधे ही पहुंचे। प्रधानमंत्री जनधन योजना को लागू करने का मुख्य उद्देश्य भारत के दूर दराज के इलाकों में निवासरत नागरिकों को बैंकिंग, बचत और जमा खाते, राशि हस्तांतरण, ऋण, बीमा और पेंशन जैसी वित्तीय सेवाओं को उपलब्ध कराना था। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने में प्रधानमंत्री जनधन योजना पूर्ण रूप से सफल रही है और भारत में वित्तीय समावेशन को अगले स्तर पर ले जाने में भी सहायक रही है। साथ ही, प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत खोले गए जमा खातों को भारत की विशिष्ट पहचान प्रणाली (आधार कार्ड) से जोड़कर, केंद्र सरकार ने देश में वित्तीय लेन देन प्रणाली को सुव्यवस्थित कर लिया है एवं बैंकिंग व्यवहारों में धोखाधड़ी की सम्भावना को कम करने में भी सफलता अर्जित की है। आज भारत की प्रधानमंत्री जनधन योजना को पूरे विश्व में सबसे बड़ी वित्तीय समावेशन योजना के रूप में पहिचान मिली है।

देश में प्रधानमंत्री जनधन योजना को आज भी वित्तीय समावेशन के मुख्य उपकरण के रूप में माना जा रहा है और इस योजना के अंतर्गत देश के नागरिकों के खाते विभिन्न बैंकों में उसी उत्साह से लगातार खोले जा रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 में भी भारत के विभिन्न बैकों में प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत लगभग 3.3 करोड़ नए जमा खाते खोले गए हैं इससे इस योजना के अंतर्गत खोले गए कुल खातों की संख्या बढ़कर 51.95 करोड़ हो गई है एवं इन जमा खातों में 234, 997 करोड़ रुपए की राशि जमा हो गई है। अब देश का एक गरीब नागरिक भी भारत की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान करता हुआ दिखाई दे रहा है। वित्तीय समावेशन के दायरे में लाए गए नागरिक वित्तीय क्षेत्र में साक्षर होने के पश्चात अब तो भारत के पूंजी बाजार (शेयर बाजार) में भी अपना निवेश करने लगे हैं एवं उनकी विभिन्न ऋण योजनाओं एवं बीमा उत्पादों तक पहुंच भी बढ़ गई है। वित्तीय सेवाओं तक इस पहुंच ने देश के नागरिकों को आर्थिक रूप से बहुत सशक्त बना दिया है, इससे अंततः यह नागरिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं छोटे व्यवसायों में निवेश करने में सक्षम हुए हैं और इस प्रकार इन नागरिकों के जीवन की समग्र गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

भारत में वित्तीय समावेशन के क्षेत्र में हुई उक्त वर्णित अतुलनीय प्रगति की जानकारी हम आम नागरिकों को तभी मिल पा रही है जब भारतीय रिजर्व बैंक ने भारत में ही एक सूचकांक विकसित किया है। यदि वित्तीय समावेशन का सूचकांक किसी विदेशी संस्थान द्वारा तैयार किया जाता तो सम्भव है कि भारत की इस महान उपलब्धि को जानने से हम वंचित रह जाते। अब समय आ गया है कि इसी प्रकार के सूचकांक अन्य क्षेत्रों में भी भारतीय वित्तीय एवं आर्थिक संस्थानों द्वारा ही तैयार किए जाने चाहिए, ताकि हम आम नागरिकों को विभिन्न क्षेत्रों में भारत की अतुलनीय प्रगति की वास्तविक जानकारी प्राप्त हो सके।

फिर आतंकी हमलें, सैनिकों का बलिदान व्यर्थ न जाये

लगातार जम्मू-कश्मीर में बढ़ रही आतंकी घटनाएं चिन्ता का कारण बन रही है। डोडा जिले में एक आतंकी हमले में कैप्टन समेत सेना के चार जवानों और जम्मू कश्मीर के एक पुलिसकर्मी का बलिदान अब यही दर्शा रहा है कि शांति एवं अमन की ओर लौटा जम्मू-कश्मीर एक बार फिर आतंकवादी आघातकारी घटनाओं की भेंट चढ़ रहा है, इन घटनाओं का माकुल जबाव नहीं दिया गया तो यह घाटी एक बार फिर खूनी घाटी बन जायेगी। क्योंकि कुछ ही दिनों पहले कठुआ में एक सैन्य अफसर सहित पांच जवान आतंकियों का निशाना बन गए थे। इसके पहले भी जम्मू संभाग में ही सेना के कई जवान आतंकियों से लोहा लेते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दे चुके हैं। ये बहुत चिंतित करने वाले त्रासद एवं घिनौने घटनाक्रम हैं कि पिछले कुछ समय से कश्मीर घाटी के साथ-साथ जम्मू संभाग में भी आतंकियों की गतिविधियां बढ़ती जा रही हैं। हाल की कुछ घटनाओं से तो यह भी लगता है कि आतंकियों ने जम्मू संभाग को अपनी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बना लिया है। एक ऐसे समय जब जम्मू कश्मीर में विधानसभा चुनाव कराने की तैयारी हो रही है, तब आतंकियों का सक्रिय होना और सफलतापूर्वक अपने मनसूबों को कामयाब करना गंभीर चिंता का विषय है। ज्यादा चिन्ताजनक यह है कि पाकिस्तान प्रशिक्षित आतंकी न केवल घुसपैठ कर रहे हैं, बल्कि अपनी गतिविधियों को अंजाम देने और इस क्रम में सेना को निशाना बनाने में भी सफल हो रहे हैं। सरकार को उन खूनी हाथों को खोजना होगा अन्यथा खूनी हाथों में फिर खुजली आने लगेगी। हमें इस काम में पूरी शक्ति और कौशल लगाना होगा। आदमखोरों की मांद तक जाना होगा। अन्यथा हमारी खोजी एजेंसियों एवं सेना की काबिलीयत पर प्रश्नचिन्ह लग जाएगा कि कोई दो-चार व्यक्ति कभी भी पूरे प्रांत की शांति और जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर सकते हैं, हमारी संवेदनाओं को झकझोर सकते हैं। संवेदनाओं एवं भावनाओं को झकझोर भी रहे हैं, जब आतंकवादी हमलों में शहीद जवानों के पार्थिव शरीर तिरंगे में लिपटे घर की ड्योढ़ी पर आते हैं तब कारुणिक माहौल को देखकर दिल दहल उठता है क्योंकि देश के लिए अपना सर्वोच्च लुटा देने वाला जवान किसी का बेटा, किसी का पति और किसी का पिता होता है। हर आंख में आंसू होते हैं। किसी की गोद, किसी की मांग सूनी हो जाती है। देशवासी सोचने को विवश हैं कि वे शोक संत्पत परिवार के साथ करुणा और पीड़ा को कैसे बांटें।

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

डोडा वारदात की जिम्मेदारी लेने वाले कश्मीर टाइगर्स जैसे आतंकी संगठनों की ताजा बौखलाहट की एक बड़ी वजह जम्मू-कश्मीर में राजनीतिक प्रक्रिया की बहाली को लेकर बढ़ी सरगर्मी है। राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन के लिए अगले चंद महीनों में ही विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में, आतंकियों की बेचैनी समझी जा सकती है कि जिस तरह लोकसभा चुनाव में घाटी में लोग मतदान केंद्रों पर उमड़ पड़े और दशकों पुराना रिकॉर्ड टूटा, अगर विधानसभा चुनाव में लोगों का उत्साह और बढ़ा, तो जिन ह्यस्लीपर सेल्सह्न की बदौलत वे दहशत का अपना पूरा कारोबार चलाते हैं, वे भी मुख्यधारा के प्रति आकर्षित होकर, उनके खिलाफ हो सकते हैं। इसलिए उन्होंने घाटी के बजाय जम्मू संभाग में अपनी सक्रियता बढ़ाई है, ताकि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को बाधित किया जा सके और सीमा पार के आकाओं से मदद हासिल करने का सिलसिला जारी रहे। जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद हुए पहले लोकसभा चुनाव में रिकॉर्ड मतदान से पाकिस्तान बौखलाया है। इसी का परिणाम है लगातार हो रहे आतंकी हमलें। इन हमलों ने आंतरिक सुरक्षा के लिये नये सिरे से चुनौती पैदा की है। जम्मू में रियासी, कठुआ और डोडा के आतंकी हमले चिन्ता का बड़ा कारण बने है। जम्मू-कश्मीर का माहौल सुधरने के बाद वहां के बाजार, पर्यटक स्थल गुलजार हुए हैं और राज्य की अर्थव्यवस्था सुधर रही है। इसलिए देशद्रोही नहीं चाहते कि कश्मीर में शांति आए और वहां पर निर्वाचित सरकार काम करे। केन्द्र में गठबंधन वाली मोदी सरकार के सामने यह एक बड़ी चुनौती है। क्या इन आतंकी घटनाओं को केन्द्र सरकार ने गंभीरता से नहीं लिया है? जो सरकार पाकिस्तान में घूस कर बदला ले सकती है, वह सरकार अब तक शांत क्यों है? ऐसा क्यों हो रहा है, इसकी तह तक जाने की जरूरत है। आतंकी जिस तरह अपनी रणनीति बदलकर सुरक्षा बलों को कहीं अधिक क्षति पहुंचाने में समर्थ दिखने लगे हैं, वह किसी बड़ी साजिश का संकेत है। एक ओर सीमा पार से होने वाली आतंकियों की घुसपैठ पर प्रभावी नियंत्रण करना होगा, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान को नए सिरे से सबक भी सिखाना होगा। यह इसलिए अनिवार्य हो गया है, क्योंकि पिछले कुछ समय में आतंकी हमलों में बलिदान होने वाले सैनिकों की संख्या कहीं अधिक बढ़ी है।

पाकिस्तान सत्ता प्रतिष्ठानों की मदद से यह आतंक का खेल फिर शुरू कर रहा है। कहीं न कहीं दिल्ली में बनी गठबंधन सरकार को यह संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि पाक पोषित आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में शांति एवं अमन को कायम नहीं रहने देंगे। एक आंकड़े के अनुसार पिछले तीन वर्ष में करीब 50 जवानों को अपना बलिदान देना पड़ा है। यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं। आतंक को करारा जवाब केवल तभी नहीं दिया जाना चाहिए, जब एक साथ बड़ी संख्या में सुरक्षा बलों के जवानों को बलिदान देना पड़े। वास्तव में हमारे एक भी सैनिक का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। डोडा की घटना के बाद यह जो कहा जा रहा है कि सैनिकों के बलिदान का बदला लिया जाएगा, उसे न केवल पूरा करके दिखाया जाना चाहिए, बल्कि आतंकियों, उनके आकाओं और उन्हें सहयोग-समर्थन देने वालों पर ऐसा करारा प्रहार किया जाना चाहिए, जिससे वे अपनी हरकतों से हमेशा के लिए बाज आएं। पाकिस्तान भले ही आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता से जूझ रहा हो, लेकिन वह जम्मू कश्मीर में पहले की तरह ही आतंकवाद को बढ़ावा देने में लगा हुआ है। उसकी घरेलू व विदेश नीति कश्मीर पर ही आधारित है। चूंकि इसकी भरी-पूरी आशंका है कि चीन उसे उकसाने में लगा हुआ होगा, इसलिए भारत को कहीं अधिक सतर्क रहना होगा। केन्द्र सरकार ने कश्मीर में विकास कार्यों को तीव्रता से साकार किया है, न केवल विकास की बहुआयामी योजनाएं वहां चल रही है, बल्कि पिछले 10 सालों में कश्मीर में आतंकमुक्त करने में भी बड़ी सफलता मिली है।

गुरु कृपा के बिना जीवन की सार्थकता संभव नहीं

कृष्णमोहन झा

आज गुरु -शिष्य परंपरा का पुनीत पर्व गुरु पूर्णिमा है। गुरु के समक्ष विनयावनत होकर उनके प्रति अटूट श्रद्धा और आदर की अभिव्यक्ति का यह पुनीत पर्व आज सारे देश में मनाया जा रहा है। धर्मग्रंथों के अनुसार गुरु पूर्णिमा को ही भगवान शिव ने दक्षिणामूर्ति के रूप में ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों को वेदों का ज्ञान प्रदान किया था। महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास का जन्म भी गुरु पूर्णिमा को हुआ था। बौद्ध धर्म की मान्यताओं के अनुसार गुरु पूर्णिमा के दिन ही सारनाथ में अपने शिष्यों को प्रथम उपदेश दिया था। गुरु पूर्णिमा को धर्मचक्र का प्रवर्तन हुआ। धर्मग्रंथों में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, शिव और परब्रह्म कहा गया है। ध्यान का मूल गुरु की मूर्ति में है, पूजा का मूल गुरु के चरणों में है, मंत्र का मूल गुरु के शब्दों में है और गुरु की कृपा हो जाए तो मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सकता। गुरु ही अपने शिष्य को ईश्वर का ज्ञान कराता है। गुरु की कृपा के बिना जीवन की सार्थकता अकल्पनीय है। किसी शिष्य के पास सब कुछ होने के बाद भी अगर उसे गुरु कृपा की आकांक्षा नहीं है तो उसे अपने जीवन में पूर्णता की अनुभूति नहीं हो सकती। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय गुरु को दिया है। सम्राट चंद्रगुप्त ने आचार्य चाणक्य, शिवाजी महाराज ने समर्थ गुरु रामदास, और स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण परमहंस का शिष्य बन कर ही अखिल विश्व में अपार यश और कीर्ति अर्जित की। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। गुरु के अंदर मनुष्य को ईश्वर से जोड़ने की सामर्थ्य होती है। गुरु ही अपने शिष्य का ईश्वर से साक्षात्कार कराता है इसीलिए कहा गया है कि गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय, बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो बताय। गुरु जीवन भर मनुष्य को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। गुरु के बिना मनुष्य अपने जीवन में पूर्णता की अनुभूति नहीं कर सकता। गुरु अपने शिष्यों को गलत मार्ग पर चलने से रोकता है। गुरु अपने शिष्य पर आई विपत्ति को अपने ऊपर लेकर उसके जीवन को निरापद बना देता है लेकिन शर्त केवल यही है कि गुरु के प्रति शिष्य की श्रद्धा और विश्वास अटूट होना चाहिए। शिष्य का गुरु के प्रति सम्पूर्ण समर्पण और शिष्य के लिए गुरु के सर्वस्व त्याग से गुरु शिष्य परंपरा का निर्वाह होता है। अपने शिष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिष्य को शिक्षा के साथ जो उत्तम संस्कार प्रदान करते हैं वे जीवन भर उसके काम आते हैं। गुरु से प्राप्त शिक्षा और संस्कार शिष्य की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। गुरु की महिमा को शब्दों की सीमा में बांधना असंभव है।

सात समुंद की मसि करूं लेखनि सब बनराइ, धरती सब कागद करूं गुरु गुण लिखा न जाइ। गुरु की महिमा अपार है। अगर सातों समुद्रों के जल की स्याही बना ली जाए, वन की सभी टहनियों की कलम बना ली जाए और सारी धरती को कागज का रूप दे दिया जाए तब भी गुरु की महिमा का बखान करना संभव नहीं है। कबीर दास कहते हैं कि कबिरा ते नर अंध हैं गुरु को कहते और, हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर। अर्थात अगर ईश्वर रूठ जाए तो आप गुरु की शरण में जाकर अपनी भूल सुधार सकते हैं लेकिन अगर गुरु रूठ जाएं तो आपको कहीं शरण नहीं मिल सकती। गुरु को नाराज करने के बाद मनुष्य जिस मुश्किल का सामना करने के लिए विवश हो जाता है उससे बाहर निकलने का रास्ता और कोई नहीं बता सकता। गुरु पूर्णिमा अपने उस गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का दिन है जिसके ऋण से कोई शिष्य कभी मुक्त नहीं हो सकता। शिष्य अपने जीवन में जो सम्मान, शोहरत और यश अर्जित करता है उसमें सबसे बड़ी भूमिका गुरु की दी हुई शिक्षा और उत्तम संस्कारों की होती है। गुरु अपने शिष्य से इसके बदले में कोई अपेक्षा नहीं रखते। वे केवल इतना चाहते हैं कि उनका शिष्य कभी उनके बताए रास्ते से विमुख न हो।

संक्षिप्त खबरें

सैकड़ो व्यक्तियों के नेत्र की हुई जांच

दृष्टि आई केयर के संस्थापक स्वर्गीय विमल कुमार सिन्हा की चौथी पुण्यतिथि पर रविवार को निशुल्क कुशल डॉक्टरों द्वारा नेत्र की जांच की गई। अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल के कुशल डॉक्टरों द्वारा 370 रोगियों की नेत्र की जांच की गई एवं दवा का भी वितरण किया गया ।

कारगिल विजय दिवस के 25 वें वर्ष पर भाजयुमो द्वारा मनाया जायेगा दीपोत्सव

रक्सौल। स्थानीय भारती पब्लिक स्कूल, नागा रोड रक्सौल में युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष पिंटू गिरी के नेतृत्व में आगामी 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के 25 वॉ वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक दिन पूर्व संध्या को दीप उत्सव व नगर में मशाल जुलूस निकालने की योजना तैयार की गई, जिसमें भारतीय जनता पार्टी के जिला मंत्री प्रो. मनीष दुबे, युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष पिन्टू गिरी, जिला उपाध्यक्ष प्रशांत सूर्यवंशी, प्रिंस चौबे, विजय कुशवाहा, राम शर्मा,जिला महामंत्री मदन पटेल, चितरंजन यादव, जिला मंत्री अभिषेक कुमार, राहुल कुमार, रंजीत दास, पदाधिकारीगण एवं मंडल अध्यक्षगण उपस्थित रहें।

व्याहुत जायसवाल कलवार महासभा की बैठक सम्पन्न

छपरा कार्यालय।रविवार को एक बैठक ब्याहुत जयसवाल कलवार महासभा के तत्वाधान में शहर के शिव बजार स्थित मुन्ना जी के अवाश पर बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता विजय प्रसाद ब्याहुत ने किये। बैठक में मुख्य रूप से बलभद्र पुजा एवं जयंती समारोह में केवल पुजा करने का निर्णय लिया गया। इसका कारन है कि अध्यक्ष की पत्नी, एवं पूर्व ब्याहुत सभा के सचिव स्व. ललन प्रसाद की पत्नी , एवं महाराजगंज के पूर्व विधायक समाजसेवी श्रीमती अनसूया जयसवाल जी का भी निधन हो गया है ।इसी कारन केवल बलभद्र पूजा होगा । अगली बैठक के बाद निर्णय लिया जाएगा। इस बैठक में तारकेश्वर प्रसाद, अनिल कुमार, शिवनाथ प्रसाद, संजय कुमार, मुनो कुमार, सचिन कुमार, राजु कुमार ,चंदन कुमार ब्याहुत, सुनील कुमार ब्याहुत, कार्यक्रम संचालक शिव कुमार ब्याहुत , ब्याहुत जायसवाल कलवार धरहोर नही रही ।ईश्वर से उनकी आत्मा शांति प्रदान करे हेतु पुष्पांजली अर्पित किया गया। ब्याहुत जायसवाल कलवार महासभा की ओर से विनती है कि अपने-अपने प्रखंड, और पंचायत में भी ब्याहुत बलभद्र पूजा करने की कृपा करें। अगर यह भी नहीं होता है तो आप लोग बलभद्र भगवान का छोटा फोटो लेकर भी अपने-अपने घर में भी पूजा करने की कृपा करेंगे ।

जनसुराज के आयोजित होने वाले राज्यस्तरीय बैठक से पहले बिहार के सभी पार्टियों में मची खलबली : ई. सिकंदर चंद्रा

चनपटिया(ए के सिंह) रविवार को चनपटिया प्रखंड के जनसूराजी कार्यकताओं की बैठक प्रखंड अध्यक्ष कमलेश कुमार के अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमे चनपटिया प्रखंड के जिला स्तर पर प्रतिनिधित्व कर रहे जिला उपाध्यक्ष राजकिशोर चौधरी, जिला प्रवक्ता ई.सिकंदर चंद्रा और तरुण बिहारी, जिला संगठन संरक्षक गोरख महतो, प्रखंड कार्यकर्ताओ में संगठन महासचिव चंद्रमोहन तिवारी,सभापति राजेंद्र राम, उपाध्यक्ष सुनीत कुमार शर्मा, सचिव उमेश ठाकुर महिला अध्यक्ष दीपमाला देवी, युवा अध्यक्ष अंशु चौबे, दिनेश शर्मा, सभी 24 पंचायतों के अध्यक्ष , उपाध्यक्ष, संयोजक और प्रखंड संस्थापक सदस्यों की उपस्थित भारी संख्या में रही ।

चोरों ने नगदी समेत लाखों के आभूषण की चोरी

प्रात :किरण संवाददाता

मुफ्फसिल थानाक्षेत्र के पुर्वी तेलपा तथा माला गांव मे अज्ञात चोरों ने नगदी तथा लाखों रुपए मुल्य के गहने ले उरे। घटना बीती रात की। तकनीकी विकास के इस दौर में अब चोरों ने भी हाईटेक तकनीक ईजाद कर ली है अब चोर घरों के अन्दर दाखिल हो सोए अवस्था में घरवालों के चेहरे पर बेहोशी का स्प्रे मारकर ऐसी घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं। ताजा मामला मुफ्फसिल थाना से महज एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित माला गांव की है जहां चोरों ने पूर्वी तेलपा पंचायत के माला गांव निवासी भाजपा नेता निशांत राज एवं माला शेरपुर निवासी भीम कुमार दो घरों को निशाना बनाया जहां पहली घटना निशांत राज के घर में देर रात छत के रास्ते चोर दाखिल हुए व सोए अवस्था मे घरवालों के चेहरे पर बेहोशी का केमिकल स्प्रे कर घर के अन्दर तीन कमरों से आलमीरा व बक्से का ताला तोड़ नकदी तीन लाख समेत सोने और चांदी के कुल 103 थान आभूषण चोरी कर फरार हो गए। घटना की जानकारी परिवार के लोगों को सुबह हुई जब गृहस्वामी की नींद खुली तो देखा कि बाहर से कमरे झिटकिनी लगा हुआ है तब मां को आवाज लगाई बाहर निकलकर देखा तो तीन कमरों के दरवाजे खुले और फर्श पर समान छिन्न-भिन्न परे मिले और आलमीरा से कीमती आभूषण और नकद गायब है। गृहस्वामी ने बताया कि वह जब सुबह उठा तो उसके कदम लड़खड़ा रहे थे, और सिर में हल्का चक्कर जैसा महशूस हो रहा था और ऐसी ही हालत मां की भी थी घर के बाहर निकलना चाहा तो देखा कि मेन गेट के दरवाजे भी खुले पड़े हैं और बाहर आलमीरा की दराज जमीन पर पड़ी हुई। जिसमें रखें सभी आभूषण गायब केवल खाली डिब्बे फर्स पर थे गृहस्वामी ने बताया कि घटना को अंजाम देने से पूर्व चोरों ने बेहोशी के केमिकल स्प्रे का इस्तेमाल किया है जिसकी गंध सुबह तक महशूस की जा रही थी वहीं कमरों के पर्दे और दरवाजे की हैंडिल पर कोई सफेद पदार्थ लगा हुआ पाया गया जिसके जरिए चोरों ने इस वारदात को अंजाम दिया पीड़ित के अनुसार एक आकलन के मुताबिक लगभग 25 से तीस लाख के आभूषण थे जिसकी सूचना मुफ्फसिल थाना पुलिस को दी जिसके बाद मौके पर डांग स्क्वायड टीम के साथ पहुंच पुलिस मामले की जांच-पड़ताल एवं छानबीन में जुट गई है वहीं दूसरी घटना चोरों ने शेरपुर माला गांव निवासी भीम कुमार के घर मे छत के रास्ते अन्दर दाखिल हुए व बक्से व आलमीरा तोड़ करीब ढाई लाख रुपए के आभूषण समेत नकद 90 हजार रुपए चोरी की घटना को अंजाम दिया जिसकी जानकारी घरवालों को सुबह हुई जिसकी सूचना थाने को दी वहीं चोरो के द्वारा इस्तेमाल इस नई तकनीक को लेकर लोगों में भय व दहशत का माहौल देखा जा रहा है हाट बाजार से लेकर गांव के चौक चौराहे पर चोरी की ये दो घटनाएं लोगों के बीच खास चर्चा का केंद्र रही लोग यह कहते हुए भी दिखाई पड़े कि केमिकल स्प्रे के जरिए चोरी की ये घटनाएं सिर्फ ट्रेनों तक ही सीमित थी किन्तु इसके सहारे अब चोर घरो के अन्दर सो रहे लोगों को भी निशाना बना रहे है।

एसएसबी द्वारा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम का किया गया आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

रक्सौल। उच्च माध्यमिक विद्यालय, हरपुर में एसएसबी 47 वीं वाहिनी सी समवाय महादेवा के द्वारा ह्लबेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्व कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन इंस्पेक्टर, जीडी कोमल सिंह के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाध्यापक निशी कुमार गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। उन्होंने अपने संबोधन में बेटियों के महत्व और उनके शिक्षा के अधिकार पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि बेटियों को समान अवसर प्रदान करके ही समाज का समुचित विकास संभव है। इंस्पेक्टर कोमल सिंह ने ह्लबेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओह्व अभियान के उद्देश्यों और इसकी महत्वपूर्णता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बेटियों को शिक्षा, सुरक्षा और समानता के अवसर प्रदान करने के लिए समाज को प्रेरित किया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों और शिक्षकों ने भी भाग लिया और कार्यक्रम के उद्देश्यों को समझते हुए उसमें सक्रिय सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें सभी उपस्थित लोगों का उनके सहयोग और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया गया।

निर्विरोध चुने गए तेजनारायण सिंह प्रमुख एवं अश्वनी कुमार यादव उपप्रमुख

प्रात :किरण संवाददाता

रिविलगंज। तेज नारायण सिंह उर्फ गुड्डू सिंह ने रिविलगंज प्रखंड प्रमुख और अश्वनी कुमार यादव उपप्रमुख के पद पर निर्विरोध निर्वाचित हुए।शनिवार को एसडीओ कार्यालय में रिविलगंज प प्रमुख एवं उप प्रमुख पद के लिए हुए निर्वाचन में गुड्डू सिंह प्रमुख पद पर निर्विरोध निर्वाचित हो गये। वही उप प्रमुख पद पर आश्वनी कुमार निर्वाचित हुए। निर्वाचन बैठक में पूर्व प्रमुख डॉ राहुल राज एवं पूर्व उपप्रमुख राम बिहारी सिंह सहित चार समिति सदस्य नहीं आये जिससे तेज नारायण सिंह उर्फ गुड्डू सिंह का सफर और आसान हो गया। सदर अनुमंडल कार्यालय में शनिवार को हुए बैठक और फिर चुनाव में तेज नारायण का पक्ष दस बजे से सुबह से ही हावी रहा। सदन में तेज नारायण सिंह उर्फ गुड्डू सिंह के साथ अन्य छह पंचायत समिति सदस्य के जाने के बाद उनकी जीत लगभग तय माना जाने लगा। परिणाम भी वही निकला जिसका अंदाजा पहले लग चुका था। 22 वर्ष से एक ही परिवार का प्रमुख की कुर्सी पर कब्जा था। निर्वतमान पूर्व प्रमुख डा० राहुल राज सात साल एवं उनके पिताजी विपिन सिंह तीन बार प्रमुख पद पर रहे हैं। इस प्रकार बाईस साल बाद तेज नारायण सिंह उर्फ गुड्डू सिंह प्रखंड प्रमुख की कुर्सी पर कब्जा जमाया। प्रखंड प्रमुख पद की शपथ लेने के बाद तेज नारायण सिंह उर्फ गुड्डू सिंह ने बताया कि पूर्व सांसद प्रभुनाथ सिंह एवं पूर्व विधायक रणधीर सिंह और रोहित सिंह के आशीर्वाद से यह सम्भव हुआ। प्रखंड के विकास किया जाएगा।सभी सदस्यों के सहयोग के उन्होंने आभार जताया साथ ही सभी सदस्यों के सहयोग से प्रखंड में चहुंमुखी विकास किया जाएगा। उपप्रमुख पद के लिए सदन के बाहर घंटो चलते रहा हाई वोल्टेज ड्रामा, अंततःअश्वनी कुमार निर्विरोध निर्वाचित हुए। इनई पंचायत के पंसस आश्वनी कुमार एवं मुकरेड़ा पंचायत (भाग-05) के पंसस शिवजी मांझी दोनों ने उप प्रमुख पद के लिए उप प्रमुख पद के उम्मीदवारों के लिये टॉस कराया कराया गया। सहमति नहीं बनी और दोनों ने कर दी नामांकन। रिविलगंज प्रखंड के उप प्रमुख पद के लिए एसडीओ कार्यालय सभागार में चुनाव शुरू हुआ। लेकिन चुनाव के पहले जो हाई वोल्टेज ड्रामा चला वह सबके लिए असहज बनता गया। हालांकि अंततः अश्वनी कुमार यादव उप प्रमुख पद पर निर्विरोध निर्वाचित हो गए। उप प्रमुख के चुनाव के लिए दोपहर में 2:00 का लगभग समय निर्धारित था। लेकिन बाहर में प्रमुख और उनके छह समर्थकों के बीच उप प्रमुख पद के लिए किसके नाम का प्रस्ताव दिया जाए या किसी एक के पक्ष में चुनाव कराया जाए यह तय नहीं हो पा रहा था।

राजेंद्र कॉलेज में हुआ व्याख्यान, किया पौधरोपण

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। रविवार को राजेंद्र कॉलेज में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर गुरु शिष्य परंपरा पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार श्रीवास्तव ने किया । बतौर मुख्य वक्ता प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात, हम अपने राष्ट्र की अस्मिता का सिंहावलोकन करते हैं, तो अपनी संस्कृति एवम परंपरा में गुरु शिष्य परंपरा का विशिष्ट स्थान पाते हैं, जहां शिक्षक अपने शिष्य के अंदर की अंतर्निहित गुणों को पहचान कर, उसके व्यक्तित्व को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता हैं। इस द्वि प्रक्रिया में शिष्य को पूर्ण श्रद्धा एवम अनुशासित रहना प्रथम सीढ़ी हैं।उन्होंने कहा कि गुरु का तात्पर्य व्यक्ति को अंधकार से उजाले की ओर ले जाना होता है। गुरु कुम्हार की तरह होता है जो छात्रों को गढ़ता है । इसके लिए आवश्यक है कि छात्र गुरु के प्रति आस्था और विश्वास रखें। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. अनुपम कुमार सिंह ने किया। उसके बाद कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. देवेश, डॉ. कन्हैया प्रसाद और जया कुमारी पांडेय के नेतृत्व में माँ को प्रथम गुरु मानकर ह्यएक पेड़ माँ के नामह्ल कार्यक्रम के अंतर्गत वृक्षारोपण का कार्य किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. प्रशांत कुमार, डॉ. विशाल, डॉ. इकबाल जफर अंसारी, डॉ. ऋचा मिश्रा, डॉ. अलाउद्दीन खान, जीवाकर हैदर, डॉ. परेश कुमार समेत शिवम, सचिन, विकास, अरुणिमा, कविता, श्रुति, अनुप्रिया, तौहीद, ज्ञानेन्द्र आदि उपस्थित थे।

एटीएम के बंद रहने से परेशानी बढ़ी, बैंक मैनेजर पर ग्राहकों ने लगाए लापरवाही का आरोप

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। वाल्मीकिनगर के गोलचौक स्थित एसबीआई का एटीएम सेंटर बराबर बंद रहने के कारण एटीएम धारकों की परेशानी बढ़ गई है। ऐसे में वाल्मीकिनगर आए पर्यटकों को एटीएम से मिलने वाले कैश के लेनदेन के लिए भटकना पड़ रहा है। वहीं स्थानीय व्यवसायी गोलचौक निवासी कुंदन सिंह ने बताया कि जो रुपये पैसों से कारोबार किया जाता है इसके लिए एटीएम से तत्काल सुविधा ले ली जाती है लेकिन माह में करीब 20 दिन एटीएम बंद रहने से व्यवसाय संचालन में परेशानी बढ़ गई है।इसके लिए कुंदन सिंह ने स्थानीय ब्रांच मैनेजर पर लापरवाही का भी आरोप लगाया है। बतादें की इंडो नेपाल सीमा पर अवस्थित वाल्मीकिनगर में एसबीआई का एक मात्र एटीएम होने के कारण एटीएम धारकों को मिलने वाली सुविधा से बंचित रहना पड़ रहा है। दूसरी तरफ नेटवर्क की फैलियर स्थिति के कारण कैशलेस ट्रांजेक्शन भी नहीं हो पाई रही है।जिससे पर्यटकों के साथ साथ स्थानीय लोगों को भी भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है।

आषाढ़ व गुरु पूर्णिमा के अवसर पर महाआरती कार्यक्रम का आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। इंडो नेपाल सीमा पर अवस्थित संगम तट के बेलवा घाट परिसर में आषाढ़ पूर्णिमा एवं गुरु पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर 132 वीं नारायणी गंडकी महाआरती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बतादें कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि साधक बालक दास बाबा, विशिष्ट अतिथि ग्राम पंचायत राज जीमरी नौतनवां के मुखिया खूब लाल बड़घड़िया, निमार्ता एचेल थारू,समाजसेवी संगीत आनंद,राष्ट्रीय अध्यक्षा अंजु देवी,अभिनेता सोनू चौधरी, रोशन कुमार,स्वास्थ्य कर्मी कुमारी संगीता,सत्येंद्र सिंह एवं सुमन देवी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित करके किया। बतातें चलें कि आज का दिन भगवान विष्णु,मां लक्ष्मी और चंद्र देव की पूजा अर्चना के लिए विशेष माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि आषाढ़ पूर्णिमा को पवित्र नदी में स्नान करने से सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

महादलित महिला को नही मिला न्याय तो कई संगठनों ने मिलकर थाने का किया घेराव

प्रात :किरण संवाददाता

तरैया प्रखंड के देवरिया गांव निवासी शिवजानकी देवी के खाता से सीएसपी संचालक नितेश कुमार सिंह के द्वारा दो लाख रुपए की राशि गबन कर लेने के खिलाफ में तरैया थाना में कांड संख्या 224/24 दर्ज किया गया था ।एक माह बीतने के बाद भी थाना के द्वारा कोई कारवाई नही होने पर बहुजन समाज पार्टी के जिला प्रभारी अविनाश कुमार एवं भीम आर्मी के जिला अध्यक्ष के राजेंद्र रौशन ने सैकड़ों पुरुष,महिला कार्यकताओं के साथ तरैया थाना परिसर में शांति पूर्वक विरोध प्रदर्शन व घेराव किया।थानाध्यक्ष आशुतोष कुमार सिंह ने संगठन के सदस्यों से बातचीत करते हुए उक्त कांड में आरोपी के खिलाफ वारंट जारी होने एवं 15 दिन में गिरफ्तारी नहीं होने के बाद कुर्की जप्ती करने का आदेश लेने का आश्वासन दिया।उक्त आरोपी के खिलाफ दर्जनों खाताधारी ने थानाध्यक्ष को लिखित आवेदन दिया।थानाध्यक्ष ने पीड़ित महिला को आश्वासन दिया कि आरोपी को जल्द गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाएगा।उक्त प्रदर्शन में बसपा जिला प्रभारी डॉ अविनाश कुमार,बहुजन समाज पार्टी विधान सभा अध्यक्ष देवनाथ राम, प्रमोद कुमार पासवान,बसपा प्रखंड अध्यक्ष राजबलम राम, भीम आर्मी के जिलाध्यक्ष राजेंद्र रौशन, पवन कुमार पासवान, पीड़ित शिवजानकी देवी,पीड़ित अजय कुमार राम,जितेंद्र कुमार, पंकज कुमार राम,जिला सलाहकार सुबोध कुमार, रंजीत कुमार, विनोद राम सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मेडिकल कॉलेज का नाम महारानी जानकी कुंवर चिकित्सा महाविद्यालय करने को ले महापौर लिखा मुख्यमंत्री को भावुक पत्र

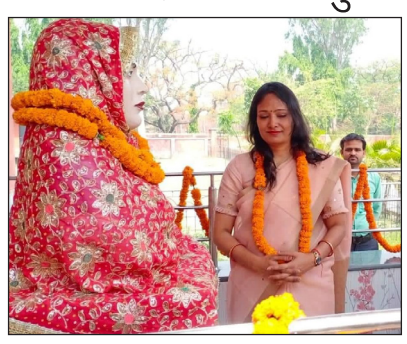

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया(कुमार अभिजितम) ।बेतिया नगर निगम महापौर गरिमा देवी सिकारिया ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पत्र लिख कर नगर के राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय का नामकरण महारानी जानकी कुंवर चिकित्सा महाविद्यालय करने की अपील की है एवं महापौर ने अपनी अनुशंसा को उक्त पत्र के रूप मे प्रेषित किया है। महापौर श्रीमती सिकारिया ने अपने भावपूर्ण पत्र में मुख्यमंत्री को निवेदन पूर्वक लिखा है कि आप स्वयं अवगत हैं कि बेतिया मे अंग्रेजी शासन का समर्थन नहीं करने के कारण बेतिया राजघराने को ब्रिटिश हुक्मरानों के कोप का शिकार होना पड़ा। एक षड्यंत्र के तहत 1897 में महज 27 वर्षीया महारानी जानकी कुंवर को बीमार घोषित करते हुए तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत ने महारानी के निःसंतान होने के कारण बेतिया राज को कोर्ट ऑफ वार्ड्स घोषित कर के निर्वासित कर दिया। तब से 84 वर्ष की लंबी आयु तक करीब 57 वर्षों तक बेतियाराज की महारानी को उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद स्थित अपने निजी आवास में निर्वासित रहते हुए जीवन व्यतित करना पड़ा था। श्रीमती सिकारिया ने माननीय मुख्यमंत्री को यह भी बताया है कि महारानी जानकी कुंवर जी का 27 नवंबर 1954 को इलाहाबाद के 07 अटैची रोड स्थित ,बेतिया राज के महल में देहावसान हो गया। वही अपने जीवन काल में ही अपनी तत्कालीन प्रजा की चिकित्सा के लिए यह अस्पताल बनवाया था। महापौर ने यह भी कहा है कि महारानी जानकी कुंवर सदर अस्पताल को मेडिकल कॉलेज बनाने का सपना लिए महारानी स्वर्ग सिधार गईं। उन्होंने प्रार्थना पूर्वक मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से कहा है कि आपके द्वारा महारानी के सपना के अनुरूप मेडिकल कॉलेज स्थापित करने का पुनीत कार्य किया गया है। बावजूद इसके करोड़ों का भूखंड बेतिया राज का होने और सदर अस्पताल महारानी के नाम पर स्थापित होने के बाद भी मेडिकल कॉलेज का नामकरण राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय कर दिया जाना न्यायोचित नहीं होने के साथ बेतिया के लाखों श्रद्धालुओं के मन मे महारानी जानकी कुंवर जी के प्रति श्रद्धा की भावनाओं को ठेस पहुंच रही है। श्रीमती सिकारिया ने अपने उक्त पत्र के अंत लिखा है कि आप लोकप्रिय मुख्यमंत्री जी से मेरा सादर निवेदन है कि हमारे आदरणीय अभिभावक और जिला प्रसिद्ध समाजसेवी सह वरीय चिकित्सा अधिकारी डॉ. एनएन शाही जी के अनुरोध के अनुरूप बेतिया के राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय का नामकरण महारानी जानकी कुंवर मेडिकल कॉलेज के रूप में स्वीकार करने की कृपा की जाय।

त्रिपल हत्या कांड के पीड़ित परिजनों से मिले लोजपा (रा) के प्रदेश उपाध्यक्ष व अन्य

प्रात :किरण संवाददाता

एकमा। प्रखंड के रसूलपुर पंचायत के धानाडीह गांव में विगत दिनों हुई पिता व दो पुत्रियों की हुई निर्मम हत्या को लेकर लोजपा (रामविलास) पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान के द्वारा एक कमिटी गठित किया गया । जहां उक्त कमेंटी के सदस्यों ने घटना स्थल पर पहुंच कर पीड़ित परिजनों से मिलकर गहरा दुख व्यक्त करते हुए घटना की कड़ी निंदा किया । कमेटी ने मोबाइल से पीड़ित परिजनों से केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान से फोन पर बातचीत कराया गया। साथ ही केंद्रीय मंत्री ने पीड़ित परिजनों को ढांढस बंधाते हुए कहा कि इस कांड में दोषियों को जल्द से जल्द सजा दिलाने का आश्वासन दिया । इसके पश्चात कमेटी के सदस्यों ने गांव वालों से भी मुलाकात कर इस दुःख की घड़ी में पीड़ित परिजनों का सहयोग करने के लिए अपील किया । इस टीम में प्रदेश उपाध्यक्ष संजय सिंह, प्रदेश चिकित्सा प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अजय यादव जिला अध्यक्ष दीपक सिंह ,संसदीय बोर्ड के जिला अध्यक्ष पूर्णेन्दु सिंह अरुण सिंह जिला उपाध्यक्ष रोशन सिंह भवानी दिग्विजय सिंह जिला महासचिव डॉ. नीरज दुबे आदि मुख्य रूप से शामिल थे ।

बगहा गंडक नदी में नहाने के दौरान बच्चे डूबे कई बच्चों ने अपनी जान बचाई दो बच्चे लापता

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। बगहा में फिर एक बार गंडक नदी में कई बच्चे डूब गए इनमें कइयों नें अपनी जान बचा ली है लेकिन दो बच्चे अभी भी लापता हैं। घटना के बाद इलाके में चित्कार और कोहराम मच गया है । दरअसल रविवार की छुट्टी के कारण कई बच्चे गंडक नदी में नहा रहे थे तभी नहाने के दौरान गहरे पानी में चले जाने के कारण यह हादसा हुआ है। हादसे में कई बच्चों ने तैर कर स्थानीय नाविक और गौतखोर के सहारे अपनी जान बचाई है जबकि दो बच्चे नदी में डूब गए हैं जिनकी तलाश जारी है। वहीं नगर परिषद के चेयरमैन पति पप्पू गुप्ता भी सूचना पाकर मौके पर पहुँचे हैं और स्थानीय ग्रामीणों की सहयोग से लापता बच्चों की खोज बीन में लोग जुटे हुए हैं । इधर सूचना के बाद मौके पर पहुंची एसडीआरएफ की टीम भी लापता बच्चों को ढूंढने की क्वायद में जुटी है, घटना शास्त्रीनगर स्थित बगहा एक ब्लॉक के पास गंडक नदी घाट की बताई जा रही है ।

कैबिनेट के निर्णय पर मुखिया संघ ने आक्रोश जाता किया प्रदर्शन, वापस नहीं लेने पर करेंगे आंदोलन

प्रात :किरण संवाददाता

परसाः-कैबिनेट के फैसले से असंतुष्ट मुखिया संघ ने रविवार को ग्रामीण बैंक परसा के पीछे सिकन्दर राय कॉम्प्लेक्स में बैठक कर योजनाओं का क्रियान्वयन टेंडर द्वारा कराए जाने के निर्णय पर आक्रोश व्यक्त किया।साथ ही दरोगा राय चौक पर पंचायत मैनुअल नियमावली के प्रति जला विरोध प्रदर्शन किया।मुखिया संघ अध्यक्ष सह चंदपुरा पंचायत मुखिया अभय कुमार उर्फ गुड्डू यादव की अध्यक्षता में हुई बैठक में उपस्थित अन्य पंचायत के मुखिया ने अपने विचार रखे।जनप्रतिनिधि के अधिकार में कटौती के खिलाफ सरकार की नीति व पंचायतीराज अधिनियम को कमजोर करने पर आक्रोश व्यक्त किया गया।बैठक में मुखिया संजीव कुमार सिंह,सुनील कुमार राम,मुखिया प्रतिनिधि अमित साह,रामनाथ बैठा,मो आशिफ असलम,राजेश राय,लक्ष्मण साह सहित कई लोग उपस्थित थे। मुखिया संघ ने कहा कि अपनी मांग के समर्थन में प्रखंड की सभी 13 ग्राम पंचायत के मुखिया एकजुट होकर आन्दोलन करेंगे।जिसमें बिहार सरकार के द्वारा पंचायती राज व्यवस्था को ध्वस्त किया गया।और पंचायत टेंडर प्रक्रिया को माध्यम से कार्य करने का निर्णय लिया गया।साथ ही मुखिया संघ ने चेताया कि अगर सरकार द्वारा बिहार मुखिया संघ की बात नहीं मानी तो 15 अगस्त के बाद सामूहिक इस्तीफा देने का निर्णय लिया जायेगा।ग्राम सभा से पारित निर्णय का पालन कराया जाए सरकार आदेश वापस लेकर महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के सपना साकार करे। ग्राम सभा से पारित निर्णय का अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए। मुख्यमंत्री सोलर स्ट्रीट लाइट योजना में असफल हो चुकी है इसे पुनः ग्राम पंचायत को सौंपा जाए। सभी पंचायत में लगाया गया सोलर स्ट्रीट लाइट खराब है तथा संवेदक को शिकायत करने पर कोई सुधि नहीं लेता है। नल जल योजना का कार्य पूरी तरह बाधित है। इसे पीएचईडी से हटाकर पंचायत को क्रियान्वयन का जिम्मा दिया जाए।

शिष्य कैसे बनें, यह गुरु-शिष्य परंपरा की सबसे बड़ी साधना

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा सदर। शिष्य कैसे बना जाय, यह गुरु-शिष्य परंपरा की सबसे बड़ी साधना है चूंकि शिष्य बनना सबसे कठिन होता है। मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, यह इसलिए कहा गया है क्योंकि देवता वही होता है जो सिर्फ देता है। ये तीनों सिर्फ और सिर्फ देते हैं इसलिए इन्हें हमारे प्राचीन ग्रन्थों में देवता कहा गया है। जयप्रकाश विश्वविद्यालय में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर गुरु-शिष्य परंपरा विषयक व्याख्यानमाला में व्याख्यान देते हुए वक्तागणों ने कहा। आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ और एनएसएस द्वारा रविवार को आयोजित इस व्याख्यानमाला को संबोधित करते हुए जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने अपने सरल एवं सारगर्भित व्याख्यान में कई दृष्टांतों को समाहित करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में जो प्रश्न उठाए गए हैं, उनका जबाब हमारे पुरातन गुरु-शिष्य परंपरा में है। उन्होंने अपने विषय भौतिक विज्ञान की चर्चा करते हुए गुरु की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भौतिक विज्ञान का गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत गुरुत्व की महत्ता को दशार्ता है। चंद्रमा से ज्यादा गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी में होता है, इसलिए चन्द्रमा पृथ्वी का चक्कर लगाता है जबकि सूर्य में पृथ्वी से ज्यादा गुरुत्वाकर्षण होता है इसलिए पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है। वृहस्पति सबसे भारी ग्रह है इसलिए उसे ह्यगुरुह्ल की संज्ञा दी गई है। कुलपति प्रो. बाजपेई जी ने कहा कि शिष्य बनने के लिए गीता का अध्ययन जरूर करना चाहिए क्योंकि इसमें इस विषयवस्तु का सटीक वर्णन किया गया है। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा कि आज जयप्रकाश विश्वविद्यालय के सभी अंगीभूत, संबद्ध और बीएड माहाविद्यालयों में यह कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, इसका उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। मुख्य वक्ता व अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ बालमुकुंद पाण्डेय जी ने अपने सारगर्भित व्याख्यान से बड़ी संख्या में उपस्थित प्राध्यापकों, शोधार्थियों व छात्र-छात्राओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उनके व्याख्यान के दौरान कई अवसरों पर लोग भावुक होते भी नजर आए। डॉ पाण्डेय ने अपने संबोधन की शुरूआत हनुमान चालीसा की चौपाई ह्यश्री गुरु चरण सरोज रज निज मन मुकुट सुधारह्ल से करते हुए इसकी बड़े सारगर्भित अंदाज में व्याख्या की।

भीखू चौधरी हत्याकांड का अभियुक्त पुलिस की गिरफ्त में भेजा गया न्यायिक हिरासत में

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। नौरंगिया थाने का चर्चित भीखू चौधरी हत्याकांड का अभियुक्त मुजरिम पुलिस के गिरफ्त में आ गया। थानाध्यक्ष अजय कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली कि भीखू चौधरी हत्याकांड के 7 अभियुक्तों में से एक उत्तरप्रदेश कुशीनगर हनुमानगंज थाना नवतार निवासी 55 वर्षीय सुभाष यादव बगहा डीएसपी कार्यालय के आसपास देखा गया है। सूचना मिलते ही घेराबंदी कर अभियुक्त सुभाष को गिरफ्तार कर लिया गया।थानाध्यक्ष अजय कुमार ने आगे बताया कि अभियुक्त सुभाष पर कांड संख्या 47/24के तहत धारा 302,201,34 आईपीसी दर्ज था ।अभियुक्त को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

संक्षिप्त खबरें

जमीनी विवाद में गोलीबारी, युवक को लगी गोली, एक गिरफ्तार

आरा। भोजपुर जिले में एक बार फिर से जमीन विवाद में एक युवक को गोली मार दी गई। गोली युवक के कनपटी के पास लगी है, जिसको इलाज के लिए आरा के बाबू बाजार स्थित निजी क्लीनिक में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि जगदीशपुर थाना क्षेत्र के कमर टोला का रहने वाला दिनेश पाल का अपने पटीदार श्रीराम भगत से रास्ते को लेकर काफी दिनों से विवाद चल रहा है। वहीं भोजपुर एसपी ने बताया कि सुबह लगभग 6:00 बजे के आसपास जगदीशपुर थाना को सूचना प्राप्त होती है कि जगदीशपुर थाना अंतर्गत कौरा ग्राम के रहने वाले दिनेश पाल को किसी ने गोली मार दी। सूचना प्राप्त होने पर पुलिस घटना स्थल पर पहुंचती है। और विधि संगत कार्रवाई करते हुए घायल को अस्पताल में इलाज के लिए एडमिट कराया जाता है। वहीं घायल दिनेश पाल ने बताया कि उनके पड़ोसी जितेंद्र पाल और उनके परिवार के साथ जमीन विवाद को लेकर झगड़ा चलता है। कुछ दिन पहले दोनों में झगड़ा हुआ था। इसी के कारण आज सुबह जब वह शौच करने के लिए घर से पूर्व खेत की तरफ गए थे। तभी एनएच 319 पर खड़े जितेंद्र पाल और एक व्यक्ति ने गोली मार दी। सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस ने इस घटना में सम्मिलित तीन अभियुक्तों में से एक मुख्य अभियुक्त जितेंद्र पाल को गिरफ्तार कर लिया है। घायल इलाजरत है।

फीस को लेकर होगा चरणबद्ध आंदोलन :अमर कीर्ति

कुर्था, अरवल। स्वामी वासुदेवाचार्य महाविद्यालय दरहेटा लारी में मनमानी फीस को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद इसका विरोध किया तो वहां के प्राचार्य महोदय ने छात्र छात्रों के ऊपर आवेश में आकर हाथ उठाया दिए, प्राचार्य ने कहा कि जिसके पास जाना है जाओ जो करना है करो यहां इतना ही फीस लगेगा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जिला संयोजक अमर कीर्ति ने कहा कि छात्र-छात्राओं के साथ शोषण नहीं तो क्या है अगर गरीब घर के बच्चे कहां पढ़ने जाएंगे, कहां की अपनी मांगों को रखना और उस विचार विमर्श करना क्या गलत है जो प्रधानाचार्य के द्वारा इस तरह की हरकत की गई यह कहां तक सही है विद्यार्थी परिषद इसके लिए चरणबद्ध आंदोलन करेगी।

पुलिस ने डीजल चोरी कर बेचने वाले एक फरार अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

शेरघाटी (गुरुआ) ने थाना क्षेत्र के गोपालपुर गांव के निकट एक होटल से पुलिस ने छापेमारी के दौरान भारी मात्रा में बीते 10 सितम्बर को लगभग 30 हजार लीटर डीजल तेल को बरामद किया था। वहीं इसमें संलिप्त आरोपियों के खिलाफ 968/23 में मुकदमा दर्ज किया गया था जिसमें सभी आरोपी फरार चल रहे थे, वहीं पुलिस ने कार्रवाई करते हुए फरार चल रहे एक आरोपी को गिरफ्तार किया है, थानाध्यक्ष अजीत कुमार ने बताया कि उक्त मामले के आरोपी सुरेंद्र प्रसाद धनरूआ निवासी को गिरफ्तार कर लिया गया है, केस के अनुसंधान करता मोहम्मद इमरान ने कहा कि उक्त धंधे में संलिप्त अन्य आरोपियों की पड़ताल की जा रही, सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी को रखा के लकी बार मोहल्ले से गिरफ्तार किया गया जिसे जेल भेज दिया गया।

चोरी के मोटरसाइकिल के साथ तीन गिरफ्तार

लहलादपुर: जनता बाजार थाने की पुलिस ने चोरी की दो मोटरसाइकिल के साथ तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इस संबंध में जनता बाजार थाने में प्राथमिकी दर्ज हुई है। जनता बाजार थाने के पुअनी दिलिप चौधरी ने दर्ज प्राथमिकी में कहा है कि वे हरपुर कोठी में प्लान ड्यूटी के दौरान वाहन चेकिंग कर रहे थे। तभी महराजगंज की तरफ से एक हीरो मोटरसाइकिल पर दो व्यक्ति और स्कूटी पर एक व्यक्ति सवार होकर महराजगंज से जनता बाजार के तरफ आ रहे थे। दोनों वाहन पर रजिस्ट्रेशन नंबर नहीं था। पुलिस ने दोनों वाहन को रोककर कागजात की जांच की तो किसी भी व्यक्ति ने वाहन से संबंधित सही कागजात प्रस्तुत नहीं किया।

छेड़खानी के मामले में प्राथमिकी दर्ज

लहलादपुर। जनता बाजार थाना क्षेत्र के तरवारा स्थित एक कोचिंग संचालक के विरुद्ध छेड़खानी के मामले में एक प्राथमिकी दर्ज कराया गया है। जिसमें सहाजितपुर थाना क्षेत्र के सिसई गांव निवासी मोनिका देवी ने उक्त कोचिंग संचालक व सिवान जिला के भगवानपुर हॉट थाना क्षेत्र के चकमुंद्रा गांव निवासी जीतेन्द्र यादव पर अपने पुत्री के साथ छेड़खानी का आरोप लगाया है। आवेदिका की पीड़िता पुत्री उसी कोचिंग में पढ़ने वाली छात्रा बतायी जाती है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

मुखिया के अधिकारों की कटौती को लेकर जनप्रतिनिधियों में आक्रोश

कोइलवर में मुखिया संघ ने मुख्यमंत्री का पुतला फूंका

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। पंचायतों में 15 लाख से कम की लागत की योजनाओं के लिए भी टेंडर कराने का फैसला नीतीश कैबिनेट ने लिया है। सरकार का मानना है कि इस फैसले से पंचायतों में अब मुखिया और वार्ड सदस्यों की मनमानी पर लगाम लग जाएगी। हालांकि पंचायतों की सरकार ऐसा नहीं मानती है और सरकार के इस निर्णय के विरोध में उतर आई है। कोइलवर प्रखण्ड के मुखिया संघ ने साफ कर दिया है कि उन्हें सरकार का यह फैसला मंजूर नहीं है। मुखिया संघ के प्रखण्ड अध्यक्ष सह कुल्हड़िया मुखिया विनय प्रताप सिंह और प्रखण्ड प्रमुख मनोज सिंह के संयुक्त अध्यक्षता में बैठक करते हुए सरकार के इस फैसले को उन्होंने काला कानून बताते हुए एनएच-922 पर मुख्यमंत्री का पुतला दहन किया। संघ के अध्यक्ष विनय प्रताप सिंह ने कहा कि मुखिया के अधिकार में कटौती पर संघ ने आक्रोश व्यक्त करते हुए इसे काला कानून की संज्ञा दिया। नये कानून के माध्यम से सरकार ग्राम पंचायत के अस्तित्व को समाप्त करना चाहती है। नये नियम के अनुसार मुखिया सीधे काम नहीं करा सकेंगे। निविदा के बाद संवेदक को कार्य का आवंटन मिलेगा। मुखिया सिर्फ कार्य के निगरानी करने तक सीमित रह जाएंगे। संघ इस काले निर्णय के खिलाफ आंदोलन के साथ जरूरत पड़ने पर सड़क से सदन तक पहुंचेंगे। प्रतिनिधियों ने बताया कि विधायक, सांसद निधि से निर्गत कार्य को निविदा द्वारा कराया जाए। पंचायत में लगाये गये सोलर लाइट सबसे बड़ा घोटाला है। जो लगाए जाने के साथ ही बुझ गयी जिसकी जांच हो। मौके पर मुखिया प्रतिनिधि रंजीत कुमार, मनोज कुमार सिंह, विनय प्रताप सिंह समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

जनतंत्र आवाज पार्टी का राज्य स्तरीय सम्मेलन राज किशोर शर्मा के अध्यक्षता मे संपन्न

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। जनतंत्र आवाज पार्टी का राज्य स्तरीय सम्मेलन आई एम ये हाल पटना पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष राज किशोर शर्मा के अध्यक्षता मे हुआ जिसमे बिहार के सभी जिलों के पार्टी कार्यकर्त्ता ने भाग लिया सम्मेलन मे कई दूसरे दल के लोग पार्टी मे शामिल हुये। आज के सम्मेलन का मुख्य बिषय देश मे बढ़ते भ्ष्टाचार्र बेरोजगारी महगाई और लोहार का आरक्षण पर चर्चा हुआ तटपश्चा बैठक को सम्बोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने लोकसभा चुनाव मे छः सीट पर चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी को बधाई और शुभकामनायें दी और कहा आगे भी मोर्चे पर डटे रहना है यह जनतंत्र आवाज पार्टी का राजनीती शुरूआत हो चूका है अब तेजी से 2025 विधान सभा चुनाव का तैयारी शुरू कर देना है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा देश का शासन ब्यवस्था असमाजिक लोगो के हाथ मे है जिसके कारण देश मे भ्ष्टाचार्र बेरोजगारी महगाई बढ़ा रहा है और लोग को कंगाल बनाया जा रहा जिसे असमाजिक लोगो के हाथ मे सत्ता बनी रहे जिससे निशनाबूद करने का आंदोलन चलेगा।

जनतंत्र आवाज पार्टी के राष्ट्रीय महा सचिव कुंदन शर्मा ने कहा राष्टपति ऑडर 1950 और 1976 संबिधान अनुच्छेद 342 मे दर्ज अंग्रेजी छङ्कॅ१ का हिंदी मे छेड़छाड़ कर 25 वर्ष से लोहार को अ ज जा आरक्षण से बंचित किया गया है अर्थात लोहार आरक्षण का लड़ाई जनतंत्र आवाज पार्टी लड़ेगी।

पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लव कुश विश्वकर्मा और राधेश्याम शर्मा ने कहा देश मे चलने वाले सभी सरकार सरकारी खजाना लूट जनता को कंगाल बना रही ह।

ने कहा विश्वकर्मा बंशीओ के बिकास के लिए भारत के सभी राज्य मे राज्य विश्वकर्मा आयोग और राष्ट्रीय विश्वकर्मा आयोग बने जिसमे सब कुछ विश्वकर्मा जातियाँ ही रहे और आयोग को कैबिनेट का दर्जा मिले।

शराब बेचने का किया विरोध तो हथियारबंद बदमाशों ने 2 को मारी गोली

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। नवादा थाना क्षेत्र के बहिरो गांव में शनिवार की देर शाम शराब बेचने का विरोध करने पर पेट्रोल पंप संचालक और उसके भतीजे को अपराधियों ने गोली मार दी। घट-ना को अंजाम देने के बाद अपराधी वहां से भाग निकले। घायलों में नवादा थाना क्षेत्र के बहिरो गांव निवासी अशोक सिंह का बेटा सह पेट्रोल पंप संचालक अभिषेक सिंह (25) और ओम प्रकाश सिंह का बेटा अर्जुन सिंह (19) शामिल है। घायल पेट्रोल पंप संचालक को गोली दाहिने साइड पीठ और पंजरी में मारी गई है। वहीं, उसके भतीजे को दाहिने साइड पंजरी में गोली लगी है। परिजन द्वारा उन्हें इलाज के लिए आरा के बाबू बाजार स्थित निजी अस्पताल लाया गया। जहां उनका इलाज कराया जा रहा है। वहीं घटना की सूचना मिलते ही सहायक पुलिस अधीक्षक परिचय कुमार और नवादा थानाध्यक्ष कमल जीत पुलिस बल के साथ आरा के बाबू बाजार स्थित निजी अस्पताल पहुंचे। घायलों से मिलकर घटना की पूरी जानकारी ली। इसके बाद पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। इस मामले में सहायक पुलिस अधीक्षक परिचय कुमार ने बताया कि देर शाम बहिरो में 2 युवकों को गोली लगी है। उन्होंने बताया कि शराब बेचने के विरोध करने पर ये विवाद हुआ है। एक पक्ष द्वारा वहां शराब बेचा जा रहा था। इसको लेकर दूसरे पक्ष द्वारा इसकी सूचना पुलिस को दी गई थी। इसके बाद पुलिस ने कार्रवाई भी की थी। इसी बात को लेकर दूसरे पक्ष द्वारा इसका विरोध किया गया कि पुलिस को सूचना क्यों दी गई। इसी बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच विवाद हुआ और उसी में गोली चली है। इसमें दोनों युवकों को गोली लगी है। वहीं, परिचय कुमार ने कहा कि पुलिस अपनी कार्रवाई कर रही है। इसमें जो भी अभियुक्त होंगे उनकी गिरफ्तारी को लेकर लगातार छापेमारी भी कर रहे है। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। इधर, घायल पेट्रोल पंप संचालक अभिषेक सिंह ने बताया कि गांव में ही कुछ लोग उन लोगों के घर के आगे देसी शराब बेचते हैं।

गंगा ग्राम के सभी प्रखंड में विशेष अभियान के तहत पौधारोपण अभियान चलाया गया

प्रात: किरण संवाददाता

आरा। जिला गंगा समिति भोजपुर के द्वारा गंगा ग्राम के सभी प्रखंड में विशेष अभियान के तहत पौधारोपण अभियान चलाया जा रहा है। जो 14 जुलाई से गंगा ग्राम प्रखंडों में शुरू हुआ था, उसी अभियान के तहत आज दूसरी बार सभी प्रखंड में 5000, पौधे उपलब्ध कराए गए है। जिला परियोजना अधिकारी अमित कुमार ने बताया कि इस अभियान के तहत पहली बार में सभी प्रखंडों में 5000 पौधे उपलब्ध कराए गए है। जिसमें मूल रूप से फलदार और छायादार पौधे दिए गए थे। इस अभियान के तहत निर्णय लिया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक वृक्ष देकर एक पौधा मां के नाम कार्यक्रम को सफल बनाना है। यह पौधे स्कूल कॉलेज और गंगा ग्राम के सार्वजनिक स्थलों पर लगाए जाएंगे। पर्यावरण संरक्षण एवं प्रकृति का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधारोपण आवश्यक है। पेड़-पौधे मां की तरह हमारा पालन-पोषण कर हमें नवजीवन प्रदान करते हैं कि हमें शुद्ध प्राण वायु, फल-फूल व कीमती औषधियाँ प्रदान करते हैं और पशु-पक्षियों के लिए आश्रयदाता हैं। उन्होंने स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ वातावरण बनाए रखने और धरा को हरा-भरा बनाए रखने का हमारी मदद करते है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने सदस्यता अभियान को लेकर पोस्टर विमोचन किया

प्रात: किरण संवाददाता

अरवल। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अरवल जिला इकाई के द्वारा आगामी सदस्यता अभियान को लेकर पोस्टर विमोचन किया गया, जिसमें नगर अध्यक्ष राजा कुमार ने बताया कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बिहार प्रांत के द्वारा सदस्यता अभियान 22 जुलाई से 20 अगस्त तक चलाया जाएगा सदस्यता अभियान तीन चर-णों में चलाया जाएगा । सबसे पहले चरण में स्कूली सदस्यता 22 जुलाई से 30 जुलाई तक चलाया जाएगा इस सदस्यता में अरवल जिले के पांच प्रखंड के सभी हाई स्कूल के कक्षा नवमी से 12वीं तक के छात्रों को सदस्य बनाना है दूसरे चरण में महा-विद्यालय सदस्यता 1 अगस्त से 10 अगस्त तक कॉलेज कैंपस में चलाया जाएगा इस सदस्यता अभियान में कॉलेज से छात्रों को सदस्य बनाया जाएगा तथा तीसरे चरण में अन्य महाविद्यालय एवं निजी शिक्षण कोचिंग संस्थानों में 11 अगस्त से 20 अगस्त तक सदस्यता अभियान चलाया जाएगा इस सदस्यता अभियान में निजी कॉलेज अन्य महाविद्यालय कोचिंग सेंटर के छात्रों को सदस्य बनाया जाएगा सदस्यता अभियान में जिला सदस्यता प्रमुख विकास कुमार ने बताया कि अरवल जिले के सभी नगर इकाई कॉलेज इकाई विस्तार केंद्र के कार्यकताओं को विस्तृत रूप से सदस्यता अभियान करने को लेकर जानकारी और ट्रेनिंग दी गई है इस बार अरवल जिले का सदस्यता अभियान का लक्ष्य 5000 है जिसको कार्यकताओं के परिश्रम से पूरा किया जाएगा । साथ साथ जिला संयोजक अमर कीर्ति ने बताया कि, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने व्यापक शैक्षिक सुधारों के लिए निरंतर संघर्ष किया है।अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसने देश को एक ऐसा छात्र संगठन दिया है जो वर्षो के अथक परिश्रम और समर्पण से बना है।

अपराधियों के हौसले बुलंद, मूंग लदे ट्रक को अपधारियो ने लूटा

प्रात: किरण संवाददाता

रोहतास (बिहार)। खबर रोहतास जिला के डेहरी से है। जहां ड्राइवर-खलासी को नशा खिलाकर अपराधियों ने एक ट्रक पर लदा मूंग को लूट लिया। पुलिस ने खाली ट्रक को फिलहाल बरामद कर लिया है। वही बेहोशी के हालात में ड्राइवर को सासाराम के सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बारे में बताया जाता है कि गया से एक ट्रक पर 501 बोरा मूंग लादकर दिल्ली ले जाया जा रहा था। लेकिन डेहरी के मुफस्सिल थाना के सुअरा के पास बीते रात ट्रक ड्राइवर ट्रक को सड़क किनारे खड़ा करके सो रहा था। इस दौरान एक छोटी गाड़ी पर सवार होकर चार अपराधी हथियार के साथ पहुंचे तथा ट्रक में सो रहे ड्राइवर रौशन कुमार तथा खलासी अरविंद कुमार को बंधक बना लिया। हथियार के बल पर जबरन दोनों को नशीली दवाएं खिलाई गई। इसके बाद ट्रक को लेकर यह लोग अकोढीगोला - राजपुर की ओर भागे। बताया जाता है कि ट्रक ड्राइवर तथा खलासी को इन लोगों ने अकोढीगोला के पास कहीं सड़क किनारे फेंक दिया तथा ट्रक को किसी जगह पर खाली कर दिया एवं खाली ट्रक को राजपुर के पास सड़क किनारे छोड़कर भाग गए।

स्थानीय लोगों ने ट्रक के बेहोश ड्राइवर तथा खलासी को अकोढीगोला के पीएचसी में भर्ती कराया। बाद में ट्रक के खलासी को जब होश आया तो उसने तमाम आपबीती बताई। इसके बाद पुलिस ने राजपुर से ट्रक भी बरामद कर लिया। लेकिन ट्रक पर लदा मूंग लूट लिया गया। बता दे की पचास- पचास किलो की 501 बोरी मूंग ट्रक पर लदी थी। जिसका कीमत लगभग 19 लाख बताई जा रहा है। इस घटना के बाद पुलिस महकमों में खलबली मच गई है। पुलिस की छानबीन शुरू हो गई है। लेकिन अभी तक ट्रक के ड्राइवर गया के नयागांव निवासी रौशन कुमार को होश नहीं आया है। पुलिस तमाम बिंदुओं पर जांच कर रही है।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा माँझी में गुरु गोष्ठी का किया गया आयोजन

माँझी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की माँझी प्रखंड इकाई द्वारा रविवार को मांझी के ताजपुर स्थित ठाकुरबाड़ी परिसर में गुरु गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संघ के प्रखंड प्रमुख अमिताभ ओझा ने अपने सम्बोधन में कहा कि संघ हमेशा से समाज के उत्थान में प्रयासरत है। इसका परिणाम है कि देश दुनिया के लोग आरएसएस को अनुशासन का पर्याय मानते है। उन्होंने कहा कि संघ मुख्य रूप से छह पर्वो को ही मनाता है। इसमें से एक गुरु पूर्णिमा भी प्रमुख है। जिला शारीरिक शिक्षण प्रमुख संतोष कुमार सुमन ने कहा कि संघ अंतराष्ट्रीय स्तर पर जन कल्याण का कार्य करता है। संघ मानव कल्याण को ध्यान में रख कर सभी को अनुशासित रखता है। आज के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गुरु शिष्य की परम्परा को बरकरार रखना है। कार्यक्रम में खंड शारीरिक शिक्षण प्रमुख कैलाश महतो, प्रिंस कुमार, पूर्व उपप्रमुख राम कृष्ण सिंह, प्रो जनार्दन सिंह,मंडल अध्यक्ष डॉ सीडी सिंह, अधिवक्ता अजय सिंह, धनंजय दुबे,धर्मेंद्र कुमार तथा मुन्ना दुबे आदि अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

मुखिया संघ ने सरकार के आदेश प्रति को जलाकर किया विरोध

प्रदेश मुखिया संघ के आदेश पर प्रखंडो में मुखिया ने सरकार के आदेश प्रति जलाया

प्रात: किरण संवाददाता

तरैया। प्रखंड के तेरहों पंचायत के मुखिया ने बिहार सरकार के त्रिस्तरीय पंचायतों के योजनाओं में नए नियम से विकास के योजनाओं को संविदा/टेंडर के माध्यम से कराने के आदेश के खिलाफ में तरैया प्रखंड के सभी मुखियागण ने पचभिंडा पंचायत के मुखिया प्रेमा देवी के आवास पर आदेश के प्रति को जलाकर विरोध किया।मुखिया संघ के अध्यक्ष ने कहा की टेंडर के माध्यम से पंचायतों में सोलर स्ट्रीट लाइट लग रहा है जो अभी तक पूर्ण भी नही हुआ है।

सोलर लाइट लगने के दूसरे दिन ही बंद होना,टेंडर के माध्यम से पुल पुलिया का निर्माण होने के पश्चात गिर जाना ऐसा प्रतीत होता है कि पंचायत के कार्यो को नही होने देने के नियत से ऐसा नियम जारी किया गया है।सभी मुखियागण ने एक स्वर में कहा कि सरकार तत्काल प्रभाव से इस नियम को वापस नही लेती है तो चरण बद्ध तरीके से आंदोलन करेगी।आमजनों से मुखिया को दूर रखने के लिए ऐसे नियम सरकार के द्वारा लाया जा रहा है जिससे सभी मुखिया त्रस्त है।उक्त मौके पर तरैया मुखिया संघ के अध्यक्ष मुकेश कुमार यादव,विनोद सिंह,सुशील कुमार सिंह,तारकेश्वर कुमार सिंह,ओम प्रकाश राम, अमित कुमार सिंह,नंद किशोर साह,प्रेमा देवी,मुखिया प्रतिनिधि दिलीप कुमार सिंह,धनवीर कुमार सिंह बिक्कु,शैलेंद्र राम, बीरबहादुर राय,अनिल कुमार यादव,हरेंद्र सहनी सहित अन्य उपस्थित थे।

भगवान हनुमान की प्रतिमा का अनावरण

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। दाऊदनगर प्रखंड अंतर्गत चौरी ग्राम के सातआना ढि-बरा पर स्थित देवी मंदिर के प्रांगण में शिवलिंग, भगवान हनुमान, माता काली जी, गणेश भगवान प्रतिमा का स्थापना एवं अनावरण किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष सह सासाराम लोक-सभा प्रभारी संजय मेहता ने भगवान की प्रतिमा का अनावरण किया। रूबी कुमारी पति अरविंद कुशवाहा इनकी दोनों किडनी खराब थे। डायलिसिस पर जी रही थी। कोलकाता के महिमा सुपर स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल जीवन और मौत से लड़ रही थी परंतु मां काली इनकी सपना में बोले कि तुम बचोगे इस उपलब्धि में मां काली, श्री गणेश, भोले शंकर, बजरंगबली मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा एवं स्थापना कराया गया इस अवसर पर ग्रामीण श्रद्धालुओं द्वारा 24 घंटे का अखंड का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में चौरी पंचायत के सरपंच अनिल विश्वकर्मा, डॉ विनोद कुमार,अरविंद कुमार, गुड्डू कुमार, धर्मेंद्र कुमार, शंकर कुमार, वीरेंद्र मेहता, बिंदु कुमार, नवनीत कुमार, प्रशांत कुमार, कपिल मेहता,ललन मेहता, रमाकांत मेहता, रामानुज मेह-ता, बद्री नारायण मेहता, बिहार मेहता, महेंद्र पूर्व सैनिक, जितवाहन मेहता इत्यादि सौकडो श्रद्धालु मौजूद रहे।

डोरीगंज थाना के चालक ने की आत्महत्या, पुलिस जांच में जुटी

डोरीगंज। डोरीगंज थाने में नियुक्त सरकारी चालक चंदन कुमार जो ग्राम दतौली थाना इंद्रपुरी जिला रोहतास के कामेश्वर सिंह का पुत्र बताया गया है जो थाना क्षेत्र के भैरोपुर चौक के बोलबम मेडिकल हॉल में बने मक-ान में किराए पर लगभग एक साल से रहता था बीती रात (शनिवार) लगभग 11बजे थाना से अपने रूम पर गया , इस घटना की सुचना सुबह थानाध्यक्ष राहुल रंजन को तब लगी जब वह सुबह अपने ड्यूटी पर नहीं पहुंचा तो थाने के अधिकारी के द्वारा मृतक चालक के मोबाइल पर फोन किया गया तो फोन नहीं उठा तो मौके पर पहुंचे अधिकारी एवं पुलिस ने उसके बंद कमरे के बाहर से आवाज लगाई लेकिन अंदर से आवाज नहीं आई तो अधिकारियों ने डोरीगंज थानाध्यक्ष राहुल रंजन को इसकी सूचना दी सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष राहुल रंजन ने बंद कमरे के ताले को तोड़वाया तो देखा कि चालक चंदन कुमार अपने गमछे से गले में फंदा लगा सेलिंग में लगी कंडी में झुलता पाया गया। थानाध्यक्ष ने इस घटनाक्रम की सुचना अपने वरिय अधिकारी को दी सुचना पाकर मौके को दल बल के साथ पहुंचे सदर एस डी पी ओ राज किशोर सिंह और मामले की जांच करते हुए उन्होंने बताया कि चालक के द्वारा अपने बंद कमरे में आत्महत्या कर ली है। और आगे विशेष जांच की जा रही है। पुलिस चालक की शव पोस्टमार्टम हेतु छपरा सदर अस्पताल भेज दिया गया।

कार्तिक पूर्णिमा पर मुस्लिम समुदाय के सदस्यों ने शिव मंदिर की सफाई

औरंगाबाद। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष के पूर्णिमा को आषाढ़ी पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा व गुरु पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है। सावन महीने में साफ सफाई का महत्व होता है। पैगाम ए इंसानियत मुस्लिम समुदाय के लोगों ने सब्जी मंडी कारगिल चौक स्थित शिव मंदिर में सफाई की गई। नेतृत्व समाजसेवी मो. शाहनवाज रहमान उर्फ सल्लू खान ने किया। जहां लोग धर्म के नाम पर एक दूसरे से लड़ते रहते हैं।एक दूसरे का खून भी बहा देते हैं, यहां छठ पर्व की इतना मान्यता है कि हिन्दू मुस्लिम सभी मिलकर इसे मनाते हैं। इस पर्व में साफ सफाई का खास ध्यान रखा जाता है और इसमें पिछले सालों से मुस्लिम समुदाय हिंदुओं का साथ दे रहें हैं। मुस्लिम समुदाय के लोग झाड़ू लगाते शिव मंदिर में नजर आए। सावन मास में जलाभिषेक व रुद्राभिषेक का विशेष महत्व है। भगवान शंकर यूं तो आराधना से प्रसन्न होते हैं, लेकिन सावन मास में जला-भिषेक व रुद्राभिषेक का बड़ा महत्व है। वेद मंत्रों के साथ भगवान शंकर को जलधारा अर्पित करना साधक के आध्यात्मिक जीवन के लिए महा औषधि के समान है। पांच तत्वों में जल तत्व बहुत महत्वपूर्ण है। पुर-ाणों में शिव के अभिषेक का विशेष महत्व है। जल में भगवान विष्णु का वास है। जल का एक नाम नार भी है। इसलिए भगवान विष्णु को नारायण भी कहते हैं। जल से ही धरती का ताप दूर होता है। जो भक्त श्रद्धालु भगवान शिव को जल चढ़ाते हैं उनके रोग-शोक दुःख दरिद्र सभी नष्ट हो जाते हैं। भगवान शंकर को महादेव इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह देव, दानव, यक्ष, किन्नर, नाग, मनुष्य, सभी द्वारा पूजे जाते हैं। श्रावण मास में भोले को जल चढ़ाने से विशेष फल की प्राप्ति होती हैं। मो. आरजू, छोटे खान, डब्लू पांडे सहित शिव मंदिर के सदस्य ने मुस्लिम समुदाय के सल्लू खान को बधाई दिया। कहा कि सल्लू खान दोनों धर्म के लोगों को साथ लेकर जाने का कार्य करते हैं।

वेदव्यास जयंती धूमधाम से मनाई गई

प्रात: किरण संवाददाता

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद के तत्वाधान में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर वेदव्यास जयंती धूमधाम से मनाई गई।सर्वप्रथम वेदव्यास के पवित्र चित्र पर उपस्थित लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित की। तत्पश्चात, वेदव्यास के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला ।कार्यक्रम की अध्यक्षता मुखिया प्रतिनिधि प्रदीप कुमार सिंह ने किया। संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने कहा कि वेदव्यास महाभारत काल के युग पुरुष के रूप में पूजित हैं।उन्होंने गुरु शिष्य की परंपरा को जीवंतता प्रदान करने का प्रयास किया था। तत्कालीन व्यास पीठ की मान्यता उन्हीं के नाम पर उद्घोषित है वर्तमान परिदृश्य में व्यास पीठ पर बैठे गुरु सर्वोपरि होते हैं। उनका स्थान देवत्व को प्राप्त है।वेदव्यास ने संपूर्ण मानव सभ्यता को गुरु की अंतःस्थल में बसने वाले ब्रह्म के स्वरूप से आमजन को प्रकाशित करने का कार्य किया था। वेद व्यास ने महाभारत ग्रंथ की रचना में विशेष सहयोग प्रदान की थी। वहीं वेद वेदांत,दर्शन,योग सहित विभिन्न काव्यों का समीक्षा किया था। जयंती के मौके पर सुजीत कुमार सिंह,राणा सुनील,वार्ड सदस्य राजू प्रसाद गुप्ता, गुप्तेश्वर प्रसाद गुप्ता,स्वच्छता पर्यवेक्षक नंद जी यादव, राहुल कुमार,पवन कुमार सिंह सहित अन्य उपस्थित थे।

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अखंड जप एवं वृक्षारोपण का आयोजन

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर के मुख्य बाजार स्थित समाजसेवी चंद्रशेखर सिंह उर्फ ललन बाबू के आवास पर जिला गायत्री परिवार ट्रस्ट की आनुषंगिक इकाई श्री राम प्रज्ञा मंडल,श्री राम महिला मंडल एवं श्रीराम युवा मंडल के संयुक्त तत्वावधान में गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाई गई।

जिला गायत्री परिवार के सहायक ट्रस्टी नवनीत कुमार ने कहा कि गुरु पूर्णिमा के मौके पर 12 घंटे का अखंड जाप का आयोजन किया गया वहीं वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत प्रज्ञा मंडल के मैदान में एक दर्जन से अधिक फलदार वृक्ष लगाए गए।साथ ही साथ फलदार वृक्षों का वितरण में किया गया।तीन पाली में श्रद्धालु भक्तों द्वारा हवन कराया गया।मौके पर अभय कुमार,गोलू कुमार,अमित कुमार, विशाल कुमार,शुभम कुमार, नितीश कुमार,अनिकेत कश्यप, हंसराज,विशाल,देवेश,आनंदी कुमार, रंजीत कुमार, राहुल कुमार लक्ष्य कुमार संतोष कुमार लालू जी दिनेश जी महिला मंडल के सदस्य राखी कुमारी, खुशी कुमारी अंशु कुमारी अनीता देवी सुरभि कुमारी सहित अन्य उपस्थित थे।

गायत्री शक्तिपीठ के प्रांगण में गुरु पूर्णिमा धूमधाम सुनाई गई

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित अनुग्रह नारायण रोड स्टेशन के समीप गायत्री शक्तिपीठ के प्रांगण में गुरु पूर्णिमा महोत्सव के निमित गुरु पर्व पूजा एवं तीन कुंडीय गायत्री महायज्ञ धूमधाम से मनाई गई। सर्वप्रथम योग्य आचार्यो के सान्निध्य में विधि विधान पूर्वक गायत्री परिवार के संस्थापक वेद मूर्ति पूज्य गुरु-देव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं गुरु माता भगवती देवी शर्मा की पूजा अर्चना की गई। श्रद्धालुओं द्वारा हवन के पश्चात वेद मंत्रोच्चार से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। गुरु की महिमा का बखान करते हुए कहा गया कि सृष्टि में गुरु का स्थान सर्वोपरि है।गुरु ही जीवन को उत्कर्ष पर पहुंचा सकते हैं ।कार्यक्रम के मौके पर गायत्री शक्तिपीठ के संस्थापक ब्रजकिशोर प्रसाद,अनुग्रह नारायण रोड रेलवे स्टेशन के प्रबंधक अरविंद शर्मा, व्यवस्थापक राम ध्यान प्रसाद एवं जितेंद्र पासवान ,पंकज कुमार,कुंदन कुमार,अशोक प्रसाद,जयप्रकाश,अनीता देवी, रीना देवी,रीता देवी,राहुल गुप्ता सत्यम कुमार,सुरेंद्र साहू,मंटू कुमार सिंह ,कौशल कुमार,प्रेमचंद प्रसाद सहित अन्य उपस्थिति थे।

शहनाज के साथ डेटिंग की अफवाहों पर राघव जुयाल ने तोड़ी चुप्पी

अभिनेता राघव जुयाल टीवी जगत का नामी चेहरा हैं। टीवी के अलावा वह कई फिल्मों में भी नजर आ चुके हैं। इन दिनों वह अपनी हालिया रिलीज फिल्म किल को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं। फिल्म में अपने किरदार के लिए राघव खूब वाहवाही लूट रहे हैं। इससे पहले वह बीते साल सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान में नजर आए थे। तभी से अफवाहें हैं कि वह इस फिल्म की अपनी को-स्टार शहनाज गिल को डेट कर रहे हैं। हाल ही में अभिनेता ने निजी जीवन के बारे में बात करते हुए कहा कि यह मुझे बहुत प्रभावित करता है। राघव जुयाल और शहनाज कौर गिल कई बार ये साफ कर चुके हैं कि वह दोनों अच्छे दोस्त हैं। मगर फैंस अक्सर अनुमान लगाते हैं कि वे रिलेशनशिप में हैं। राघव ने हाल ही में एक बातचीत के दौरान अपने निजी जीवन पर बात करते हुए कहा, मैंने अभिनेता बनने के लिए बहुत मेहनत की है। मैं रातों-रात स्टार नहीं बन गया। मैं ऐसी सुर्खियों की वजह से स्टार नहीं बना हूं। मेरे बारे में मेरी कला और मेरे हुनर की वजह से बात की जाती है।

अभिनेता ने आगे कहा, मैं सुर्खियों में आने के लिए कभी किसी के नाम का इस्तेमाल नहीं करूंगा। मैं चाहता हूं कि मेरी निजी जिंदगी की बजाय मेरी एक्टिंग, मेरी प्रतिभा और मेरी कला ही बोले। मैं पिछले 14 सालों से इस पर काम कर रहा हूं और मैं हमेशा ऐसा ही करता रहूंगा। गौरतलब है 2023 में सलमान खान में किसी का भाई किसी की जान के प्रमोशन के दौरान शहनाज और राघव की डेटिंग की अफवाहों को हवा दी थी। अभिनेता ने कहा, कुछ महीनों में मेरी तीन फिल्में रिलीज होने वाली हैं और मैं बस इतना ही कहूंगा कि मैं अपने काम से शादीशुदा हूं। मैं अभी सिंगल रहना चाहता हूं और मेरे पास रिलेशनशिप में आने का कोई प्लान या समय नहीं है। राघव जुयाल हाल ही में लक्ष्य लालवानी के साथ किल में नजर आए हैं। ये फिल्म 5 जुलाई को रिलीज हुई है।

राधिका ने साझा किया सरफिरा में अक्षय के साथ काम करने का अनुभव

बॉलीवुड अभिनेत्री राधिका मदान अपनी हाल ही में रिलीज हुई अपनी फिल्म सरफिरा को लेकर चर्चा में बनी हुई हैं। फिल्म में वे अक्षय कुमार के साथ नजर आईं। फिल्म की रिलीज से पहले अक्षय ने राधिका के अभिनय की तारीफ की थी। वहीं, अब फिल्म में अपने किरदार के बारे में राधिका ने भी खुलकर बात की। राधिका ने इस दौरान अपने अभिनय की यात्रा के अलावा अक्षय कुमार के साथ काम करने का अपना अनुभव भी साझा किया। राधिका मदान ने अपनी भूमिका और फिल्म पर बात करते हुए अभिनय के प्रति अपने जुनून को व्यक्त किया। उन्होंने इस बात का खुलासा किया कि कैसे इस फिल्म ने उन्हें अपने किरदार के माध्यम से सपनों को पूरा करने की अनुमति दी। अभिनेत्री के लिए अभिनय अनदेखे अनुभवों को तलाशने का एक तरीका बन गया है। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि जो सपने अधूरे रह गए थे, मैं उन्हें अपने किरदारों के माध्यम से पूरा कर सकती हूं। उन्होंने आगे कहा, मैंने अभिनय के जरिए अपने कई सपने पूरी किए हैं, जैसे मैं कॉलेज नहीं गई। मैंने 17-18 साल की उम्र में काम करना शुरू कर दिया था। मैंने कॉलेज पूरा नहीं किया, इसलिए जब मैं इंग्लिश मीडियम फिल्म कर रही थी तो मैंने वह सपना भी पूरा किया। अभिनेत्री ने यह भी बताया कि सरफिरा में अपनी भूमिका की तैयारी के लिए उन्होंने मराठी बोली में महारत हासिल करने के लिए व्यापक प्रशिक्षण लिया। उन्होंने कहा कि हमने दो से तीन महीने तक मराठी में मराठी कक्षाएं लीं। मैंने मराठी गाने सुने, उनकी बॉडी लैंग्वेज सीखी। अपनी भूमिका से अपने जुड़ाव के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, रानी एक किरदार के रूप में बहुत ही उग्र, प्रेरित और स्वतंत्र है। उसके इन गुणों ने मुझे आकर्षित किया। मैं एक अभिनेत्री बन गई, क्योंकि मैं एक जीवन से आसानी से ऊब जाती हूं, मैं कुछ ऐसा करना चाहती थी, जो मुझे बहुत चुनौती दे। अपने सह-कलाकार अक्षय कुमार के बारे में राधिका ने सेट पर उनके स्वाभाव और समर्पण की प्रशंसा करते हुए कहा, वे पूरी तरह से पेशेवर हैं और मुझे उनके बारे में यह गुण पसंद है। हमने स्क्रीन पर शानदार केमिस्ट्री शेयर की।

इंडियाना जोन्स-शैली के किरदार में नजर आएंगे राजीव खंडेलवाल

आदित्य सरपोतदार का सीजन आ गया है। पिछले महीने उन्होंने अपनी हॉरर कॉमेडी मुंज्या से बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचा दिया था। पिछले हफ़्ते उन्होंने इसी जॉनर की एक और फिल्म ककुड़ा को ओटीटी पर पेश किया था। और अब, यह पता चला है कि उन्होंने अपनी अगली फिल्म पर काम शुरू कर दिया है और इसमें राजीव खंडेलवाल मुख्य भूमिका में हैं। बातचीत के दौरान, डैशिंग एक्टर ने खुलासा किया कि उन्हें प्रतिभाशाली फिल्म निर्माता की वेब सीरीज़ मिल गई है, जिसका प्रीमियर डिज्नी+ हॉटस्टार पर होगा। यह फिलहाल बिना शीर्षक वाली है और मराठी उपन्यास प्रतिपशचंद्र का रूपांतरण है। राजीव खंडेलवाल ने इस इंटरव्यू में आदित्य सरपोतदार के साथ काम करने को लेकर अपनी उत्सुकता साझा की, ऐसे लोग हैं जो स्क्रीन पर आपका दूसरा पक्ष लाना चाहते हैं। आदित्य उनमें से एक हैं। इस सीरीज़ में, वह हमसे ज़्यादा परफ़ॉर्म करेंगे क्योंकि यह सब कहानी कहने के बारे में है। मैं उनसे कहता रहता हूँ, तुम्हारे पास मुंज्या और काकुड़ा था। अब, इसे मुंज्या जितना बड़ा बनाओ। जून में एक अन्य साक्षात्कार में राजीव खंडेलवाल ने शो के बारे में अधिक जानकारी साझा की, यह एक बहुत ही दिलचस्प सीरीज़ है। मैं इसके सबसे नज़दीकी समानांतर इंडियाना जोन्स के बारे में सोच सकता हूँ।

शुभमन गिल से शादी की अफवाहों पर बोलीं रिद्धिमा

टीवी एक्ट्रेस रिद्धिमा पंडित इन दिनों अपनी शादी की खबरों को लेकर चर्चा में हैं। उनका नाम क्रिकेटर शुभमन गिल से जोड़ा जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि एक्ट्रेस दिसंबर 2024 में अपने से 9 साल छोटे शुभमन गिल के साथ शादी करने जा रही हैं। इन खबरों पर रिद्धिमा ने अब एक इंटरव्यू में सफाई दी है। साथ ही उन्होंने शुभमन को क्यूट भी कहा है। फिल्मी ज्ञान को दिए इंटरव्यू में रिद्धिमा ने कहा, पहली बात तो ये है कि मैं शुभमन को जानती तक नहीं हूं। वो एक बेहतरीन खिलाड़ी हैं लेकिन मैं उन्हें पर्सनली जानती नहीं हूं। जब मैं कभी उन्हें मिलूंगी तो मुझे पक्का पता है कि हम हंसेंगे इस बारे में बात करके। वो बेहद क्यूट हैं लेकिन फिलहाल ऐसी कोई बात नहीं है।

पहले भी सफाई दे चुकी हैं रिद्धिमा

कुछ महीने पहले भी रिद्धिमा ने शुभमन के साथ अपनी शादी की खबरों का सोशल मीडिया पर खंडन कर दिया था। उन्होंने एक पोस्ट शेयर करके कहा था- मेरी सुबह की शुरुआत बहुत सारे जर्नलिस्ट के कॉल से हुई। सभी को मेरी होने वाली शादी के बारे में जानना था। लेकिन कौन सी शादी? किसके साथ? अगर मेरे जीवन में ऐसा कुछ हो रहा है। मैं शादी के बारे में सोच रही हूं तो इसकी अनाउंसमेंट खुद सामने से आकर करूंगी। फिलहाल इस खबर में कोई सच्चाई नहीं है।

ईशा तलवार ने इंडस्ट्री में कास्टिंग की खोली पोल

ईशा तलवार हाल ही में मिर्जापुर 3 को लेकर सुर्खियां बटोर रही हैं। सीरीज में ईशा तलवार ने माधुरी भाभी का किरदार निभाया है। अब हाल ही में, ईशा ने इंडस्ट्री में कास्टिंग को लेकर हैरान करने वाला खुलासा किया है। ईशा ने कहा कि आज के समय में फिल्मों में टैलेंट कोई मायने नहीं रखता है। ईशा ने कहा कि अगर आपके पास ज्यादा फॉलोवर्स हैं तो आपको भूमिका मिलेगा। ईशा ने आगे बताया कि आपका चुनाव मेहनत और टैलेंट के दम पर नहीं बल्कि 15 सेकेंड की रील्स के को देखकर होगा।

ड्रीम गर्ल 2 के बाद फिर राज शांडिल्य के साथ काम करेंगे आयुष्मान खुराना

करण जौहर के साथ अभी तक बिना शीर्षक वाली जासूसी कॉमेडी और दिनेश विजान के साथ वैम्पायर्स ऑफ विजयनगर की शूटिंग पूरी करने के बाद आयुष्मान खुराना राज शांडिल्य की अगली फिल्म की शूटिंग शुरू करेंगे। 2019 में, आयुष्मान खुराना ने पहली बार राज शांडिल्य के साथ मिलकर एक बेहतरीन कॉमिक एंटरटेनर, ड्रीम गर्ल बनाई और यह फिल्म हिट साबित हुई, जो अभिनेता की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई। 4 साल बाद, फिल्म को एक फ्रैंचाइज़ी में बदल दिया गया और सीक्वल भी बड़े पर्दे पर एक बड़ी हिट साबित हुआ। दो बैक-टू-बैक सफ़लताओं के साथ, आयुष्मान और राज के बीच एक तालमेल विकसित हुआ है। प्राप्त समाचारों के अनुसार अब यह जोड़ी अपने 3रे सहयोग के लिए बातचीत कर रहे हैं। राज ने एक मजेदार पारिवारिक कॉमेडी लिखी है और आयुष्मान ने इस फिल्म में काम करने में अपनी रुचि दिखाई है। इस मामले से जुड़े एक सूत्र ने बताया, यह फिल्म एक स्टैंडअलोन कॉमेडी फिल्म है, न कि ड्रीम गर्ल 3। राज एक हटके कॉमिक एंटरटेनर लिख रहे हैं और आयुष्मान फिल्म के मूल विचार से प्रभावित हैं। एक महीने में फिल्म की कहानी पूरी हो जाएगी, उसके बाद कहानी सुनाई जाएगी। राज फिलहाल विक्की विद्या का वो वाला वीडियो में व्यस्त हैं, वहीं आयुष्मान करण जौहर और गुनीत मोंगा द्वारा निर्मित अभी तक बिना शीर्षक वाली कॉमेडी फिल्म की शूटिंग कर रहे हैं। इसके बाद वह अक्टूबर में दिनेश विजान के लिए वैम्पायर्स ऑफ विजय नगर में काम करेंगे। सूत्र ने कहा, शूटिंग की टाइमलाइन को लेकर दोनों ही टैलेंट एकमत हैं। अगर सब कुछ योजना के मुताबिक हुआ, तो अभी तक बिना शीर्षक वाली कॉमिक कैपर मार्च-2024 तक फ्लोर पर आ जाएगी, जब वे अपनी मौजूदा प्रतिबद्धताओं को पूरा कर लेंगे। अभी तक कथानक का विवरण गुप्त रखा गया है, लेकिन यह एक अनोखी कॉमेडी है, जो पारिवारिक दर्शकों को पसंद आएगी।

पापा नहीं चाहते थे कि मैं जॉब छोड़कर फिल्म लाइन में आऊं

मसान फिल्म से एक्टिंग करियर शुरू करने वाले विक्की कौशल इन दिनों बैड न्यूज फिल्म को लेकर चर्चा में हैं। बातचीत में विक्की ने बताया कि उनके पिता नहीं चाहते थे कि वो फिल्म इंडस्ट्री ज्वॉइन करें पर एक्टर को 9 से 5 वाली जॉब में घुटन होती थी।

आपकी फिल्म के गाने तौबा तौबा को काफी पसंद किया जा रहा है, मगर कई लोगों ने सोशल मीडिया पर आपको ये भी कह दिया कि शादी (कटरीना कैफ से) हो जाने के बाद आप इस गाने में इतने करीब क्यों जा रहे हैं? सोशल मीडिया के पहलू को कैसे देखते हैं?

-हम काम ही ऑडियंस के लिए करते हैं। हम कलाकार काम ही इसलिए करते हैं कि हमें लेकर राय बने। लोग हमारे बारे में चर्चा करें। अब कई बार लोगों को हमारी चीज अच्छी लगती है, तो कई बार बुरी, तो वो चर्चा तो होगी ही। आप सोशल मीडिया पर हमेशा सकारात्मक प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं कर सकते। मैं इस तरह के रिएक्शन को गंभीरता से नहीं लेता। हमारा रिश्ता भी तो दर्शक के साथ उसी तरह का है। हमने जब अपने करियर की शुरुआत की, तो हम यही चाहते थे कि ऑडियंस हमें इस तरह से अपनाए कि हमसे बातचीत करनी शुरू कर दे। अब वो कर रहे हैं। मेरे लिए तो ऑडियंस राजा है। वो किंग मेकर है।

हीरो होने के नाते शूटिंग पर अंतरंग दृश्यों में आप अपनी जिम्मेदारी ज्यादा मानते हैं? आपको अपनी हीरोइन को भी सहज महसूस करवाना होता है?

ऐसे समय में सेट पर संवेदनशील माहौल तो होता ही है। मगर ऐसा भी साइंस नहीं होता कि रॉकेट उड़ाना है। अब सेट पर होता तो वो एक सीन वर्क है, जहां हम किरदारों, इमोशंस और अभिनय के जरिए एक दृश्य क्रिएट करते हैं। इस बात का बेहद खयाल रखना पड़ता है कि कोई भी असहज न हो। न आप, न आपकी साथी कलाकार।

आपने तो इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर ली थी, मगर फिर वो कौन-सा टर्निंग पॉइंट था, जब आपने अभिनेता बनने का फैसला किया?

मेरे करियर का टर्निंग पॉइंट तब आया, जब एक मल्टिनैशनल कंपनी में हमें फील्ड ट्रिप के लिए ले गए थे। हमें वहां बताया गया कि जब आप कॉलेज से निकलोगे और काम करोगे, तो आपका वर्क कल्चर ऐसा होगा। मैं जब अपने बैच के साथ वहां गया, तो मुझे अहसास हुआ कि मैं यहां खुश नहीं रह सकता। ये दुनिया मेरे लिए नहीं है और न ही मैं इस दुनिया के लिए हूं। मुझे वहां घुटन-सी होने लगी थी। मैं जान गया था कि मैं जॉब नहीं कर सकता। मैं स्कूल, कॉलेज और सोसायटी में डांस और ड्रामा में बहुत भाग लिया करता था और तब मुझे अहसास होता कि सबसे ज्यादा खुशी मुझे वहीं मिल रही है। सच कहूं, तो उस जॉब लेटर से पहले मैं तो बस धारा के साथ बह रहा था। दूसरों की देखा-देखी में मैं भी पोस्ट ग्रेजुएशन करने की बात करता था। मगर फिर मैंने तय किया कि मुझे बस अभिनय के क्षेत्र में आगे बढ़ना है।

आपकी पिछली फिल्म सैम बहादुर में आपके काम की जमकर तारीफ हुई, मगर बॉक्स ऑफिस पर वो कमाल नहीं देखने मिला?

ऐसा नहीं है। फिर भी बॉक्स ऑफिस पर 95 करोड़ कमा ही लिए फिल्म ने। वर्ल्ड वाइड 100 करोड़ क्रॉस किया। मैंने फिल्म के लिए कड़ी मेहनत की थी। उरी के बाद जब भी मैं आर्मी बेस्ड फिल्में करता हूं, तो मुझे बहुत खुशी होती है, क्योंकि आर्मी से इंटरैक्ट करने का मौका मिलता है। फिल्म को करने के पीछे मेरा उद्देश्य यही होता है कि मैं आर्मी को सचाई से दिखाऊं, हां निर्माता का पैसा कवर हो जाए, इसके अलावा कमाई को लेकर ज्यादा नहीं सोचता।

शाहरुख, सलमान और आमिर को एक साथ फिल्म में देखना चाहती हैं करीना कपूर

करीना कपूर खान को आखिरी बार 'क्रू' फिल्म में देखा गया था, वह कई अन्य परियोजनाओं पर भी काम कर रही हैं। हाल ही में एक साक्षात्कार में जब करीना से पूछा गया कि वह किस खान शाहरुख खान, आमिर खान या सलमान खान के साथ काम करना चाहेंगी। इस पर उन्होंने कहा कि वह इन तीनों के साथ काम कर चुकी हैं। अभिनेत्री ने आगे कहा कि वह इन तीनों को एक साथ किसी फिल्म में देखना चाहती हैं। करीना से जब निर्देशकों के बारे में पूछा गया जिनके साथ वह काम करना चाहती हैं तो उन्होंने मेघना गुलजार और जोया अख्तर का नाम लिया।

राष्ट्रीय दैनिक प्रातःकिरण

नई दिल्ली, सोमवार, 22 जुलाई, 2024

पहली बार बोनस शेयर देने जा रही यह कंपनी

नई दिल्ली, एजेंसी। वीएसटी इंडस्ट्रीज के शेयरों में जबरदस्त तेजी आई है। वीएसटी इंडस्ट्रीज के शेयर शुक्रवार को 17 पर्सेंट से अधिक की तेजी के साथ 4850 रुपये पर पहुंच गए हैं। कंपनी के शेयर अपने 52 हफ्ते के नए हाई पर हैं। कंपनी के शेयरों में यह तूफानी तेजी एक बड़े ऐलान के बाद आई है।

इंफोसिस करेगी बंपर पदों पर भर्ती

नई दिल्ली, एजेंसी। देश और दुनिया की दिग्गज आईटी कंपनी इन्फोसिस से अच्छी खबर है। कंपनी ने कहा है कि वह वित्तीय वर्ष 2025 में 20,000 तक फ्रेश ग्रेजुएट की भर्ती करेगी। इस अनाउंसमेंट के बाद हाल ही में और आने वाले कॉलेज ग्रेजुएट्स को आईटी जॉब ऑफर में कमी के बाद उम्मीद जगी है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण बनाएंगी अनोखा रिकॉर्ड

इस बार बजट सत्र 22 जुलाई से शुरू होगा और 12 अगस्त तक चलेगा

23 जुलाई को संसद में बजट पेश किया जाएगा

नई दिल्ली, एजेंसी। सोमवार से बजट सत्र शुरू हो रहा है। यह बजट सत्र 12 अगस्त तक चलेगा। इसमें 19 बैठकें होंगी। मंगलवार यानी 23 जुलाई को बजट पेश किया जाएगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण जब बजट पेश करेंगी तो वह एक अनोखा रिकॉर्ड अपने नाम कर चुकी होंगी। यानी यह बजट काफी खास होगा। आजादी के बाद यह पहली बार होगा जब यह रिकॉर्ड बनेगा। वहीं दूसरी ओर 20 जून से वित्त मंत्री ट्रेड यूनियनों, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्रों, एमएसएमई, अर्थशास्त्रियों और अन्य के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत कर रही हैं। इन बैठकों का उद्देश्य प्रमुख बजटीय चिंताओं पर इनपुट एकत्र करना था।

हमारे सहयोगी इकनॉमिक टाइम्स के अनुसार वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 22 जुलाई से शुरू हो रहे संसद के मानसून सत्र के साथ अपना सातवां केंद्रीय बजट पेश करके इतिहास रच देंगी। वह लगातार सात बजट पेश करने वाली पहली वित्त मंत्री बन जाएंगी। इससे पहले मोरारजी देसाई ने छह बजट पेश करने का रिकॉर्ड बनाया था। सीतारमण जब अपना बजट पेश करेंगी तो वह मोरारजी देसाई का रिकॉर्ड तोड़ देंगी। देसाई ने साल 1959 से 1964 तक वित्त मंत्री के रूप में कार्य किया और पांच पूर्ण बजट और एक अंतरिम बजट पेश किया था।

इस बार खास होगा बजट

बजट 2024 को पिछले पूर्ण केंद्रीय बजटों की तरह ही कागज रहित रूप में पेश किया जाएगा। आम चुनावों से पहले 1 फरवरी को 2024 के लिए अंतरिम केंद्रीय बजट पेश किया गया था। वित्त मंत्रालय ने बजट तैयारियों के हिस्से के रूप में विभिन्न आर्थिक हितधारकों के साथ विचार-विमर्श के कई दौर पूरे कर लिए हैं।

रोजगार पैदा करने पर फोकस

वित्त मंत्री के साथ बातचीत में अर्थशास्त्रियों ने पूंजीगत व्यय को बढ़ावा देने और राजकोषीय घाटे को कम करने जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला। भारतीय उद्योग परिसंघ के उद्योग प्रतिनिधियों ने आगामी बजट में पूंजीगत व्यय बढ़ाने की वकालत की। मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि अर्थशास्त्रियों के समूह ने मंत्रालय को सुझाव दिया कि आगामी बजट में राजकोषीय घाटे को कम करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। साथ ही रोजगार वृद्धि पैदा करने की आवश्यकता पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।

6 विधेयक हो सकते हैं पेश

बजट सत्र में केंद्र सरकार विमान अधिनियम और जम्मू-कश्मीर के बजट के लिए संसद की मंजूरी सहित छह विधेयक पेश करने की योजना बना रही है। अन्य विधेयकों में वित्त विधेयक, आपदा प्रबंधन कानून, भारतीय वायुयान विधायक 2024, बॉयलर विधेयक और कॉफी (संवर्धन और विकास) विधेयक और रबर (संवर्धन और विकास) विधेयक शामिल हैं।

संक्षिप्त समाचार

अलाना ग्राहकों तक पहुंच बढ़ाने के लिए तैयार

भोपाल । विशिष्ट रूप से होठों की देखभाल से जुड़ा ब्रांड, अलाना आगामी अमेज़न प्राइम डे 2024 के दौरान अपनी बिक्री, ब्रांड विज़िबिलिटी और ग्राहकों तक पहुंच बढ़ाने के लिए तैयार है, जो भारत में 20 और 21 जुलाई को आयोजित होने वाला है। राशि बहल मेहरा को अपने होंठों के पिगमेंटेशन को ठीक करने के लिए बाज़ार में एक कारगर लिप केयर उत्पाद की तलाश थी। लेकिन ऐसे उत्पाद बाज़ार में उपलब्ध न होने से निराश होकर उन्होंने खुद असरदार उत्पाद तैयार करने की ठानी। कई साल के समर्पित शोध और त्वचा विशेषज्ञों के साथ सहयोग से अलाना ब्रांड तैयार हुआ, जो भारत का पहला विशिष्ट तौर पर लिप केयर (होठों की देखभाल से जुड़ा) ब्रांड है। राशि को अमेज़न से मदद मिली, जिसने उसे अपने व्यवसाय को डिजिटल बनाने और बड़ी तादाद में ग्राहकों तक पहुंचने में मदद की।राशि को शुरुआत में चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन अमेज़न ने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से बिक्री के लिए एक सुविधाजनक मंच प्रदान किया। उनकी यात्रा शानदार रही। अमेज़न के साथ जुड़ने में आसानी के कारण 2016 में अलाना की ई-कॉमर्स क्षेत्र की इस प्रमुख कंपनी के साथ साझेदारी की शुरुआत हुई, जिससे यह ब्रांड कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से ग्राहकों तक पहुंच सका।अमेज़न के लॉन्चपैड कार्यक्रम के अंग के रूप में, अलाना को अमेज़न के ग्राहक पर विशेष ध्यान देने रखने के दृष्टिकोण से लाभ हुआ, जिससे प्लेटफॉर्म पर बड़ी तादाद में ग्राहक आते हैं। इस साझेदारी ने अलाना को घरेलू और वैश्विक स्तर पर अपनी पहुंच का विस्तार करने और अच्छी क्वालिटी वाले लिप केयर उत्पाद चाहने वाले ग्राहकों से जुड़ने में मदद की। इसका उल्लेखनीय असर हुआ और कुछ ही महीनों में अलाना की मासिक बिक्री 2 लाख रुपये से बढ़कर 6 लाख रुपये हो गई।

पहले दिन ही आईपीओ पर दांव लगाने की दिखी होड़

नई दिल्ली, एजेंसी। संस्टार आईपीओ प्राइमरी मार्केट में खुल गया है। कंपनी के आईपीओ का साइज 510.15 करोड़ रुपये का है। कंपनी का आईपीओ पहले दिन पूरा सब्सक्राइब हो गया था। ग्रे मार्केट में भी संस्टार आईपीओ का प्रदर्शन शानदार है। आइए डीटेल्स में जानते हैं इस आईपीओ के विषय में - संस्टार आईपीओ 19 जुलाई को खुला था। निवेशकों के पास 23 जुलाई 2024 तक खुला था। कंपनी की तरफ से शेयरों का अलॉटमेंट 24 जुलाई को किया जाएगा। वहीं, बीएसई और एनएसई में लिस्टिंग 26 जुलाई 2024 को होगी। बता दें, इस आईपीओ का प्राइस बैंड 90 रुपये से 95 रुपये प्रति शेयर तय किया गया है। कंपनी ने 150 शेयरों का एक लॉट बनाया गया है। जिस वजह से रिटेल निवेशकों को कम से कम 14,250 रुपये का दांव लगाया जाएगा। बता दें, कंपनी 4.18 करोड़ फ्रेश शेयर जारी करेगी। वहीं, ऑफर फॉर सेल के तहत कंपनी 1.19 करोड़ शेयर जारी करेगी। संस्टार आईपीओ को पहले दिन ही 4.23 गुना सब्सक्रिप्शन 19 जुलाई को मिला था। इस रिटेल कैटगरी में इस दिन 4.19 गुना सब्सक्राइब किया गया था। वहीं, नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स कैटगरी में 9.89 गुना और क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स कैटगरी में 0.05 गुना सब्सक्रिप्शन मिला था।

यात्रियों को पूरा किराया और वाउचर देगा एयर इंडिया, तकनीकी खराबी के बाद रूस में लैंड हुआ था विमान

नई दिल्ली, एजेंसी। एयर इंडिया की तरफ से जारी पत्र में उल्लेख किया गया है, सैन फ्रांसिस्को की यात्रा के दौरान आपको हुई असुविधा के लिए कृपया हमारी ईमानदारी से क्षमा-याचना स्वीकार करें। हम पूरी तरह से समझते हैं कि पिछले 24 घंटे कठिन थे और इस दौरान हम आपके धैर्य के लिए कृतज्ञ हैं। आपकी सुरक्षा हमारे लिए हमेशा सर्वोच्च प्राथमिकता रही और हमारे पायलटों ने क्रास्नोयार्स्क अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे [केजेए], रूस पर एहतियाती लैंडिंग करने का निर्णय लिया।

एयर इंडिया को ऐसे यात्रा अनुभव के लिए पछतावा है

एयरलाइन ने यह भी कहा कि उनकी प्राथमिकता यात्रियों को जल्द से जल्द सैन फ्रांसिस्को पहुंचाना था और इसके लिए उन्होंने संबंधित अधिकारियों के सहयोग से राहत उड़ान भेजी। एयर इंडिया की तरफ से पत्र में लिखा गया, हालांकि हम आपके द्वारा झेले गए अनुभव को मिटा नहीं सकते, लेकिन अपने पछतावे को व्यक्त करने के लिए, हम आपकी यात्रा का पूरा किराया वापस कर देंगे और आपको एयर इंडिया पर भविष्य की यात्रा के लिए एक वाउचर प्रदान करेंगे। बता दें कि एयर इंडिया की सैन फ्रांसिस्को जाने वाली फ्लाइट के नई दिल्ली से उड़ान भरने के लगभग 30 घंटे बाद, यह तकनीकी कारणों से रूस के क्रास्नोयार्स्क अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर डायवर्ट होने के बाद अमेरिकी शहर के हवाई अड्डे पर सुरक्षित रूप से उतरी। नई दिल्ली से सैन फ्रांसिस्को जाने वाली फ्लाइट ॅढ्ढ-183 को 18 जुलाई को तकनीकी कारणों से रूस के क्रास्नोयार्स्क अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर डायवर्ट किया गया था। वहीं शनिवार को अपने अंतिम अपडेट में, एयर इंडिया ने घोषणा की कि फ्लाइट, जिसे अब ॅढ्ढ 1179 के रूप में अपडेट किया गया है, सैन फ्रांसिस्को में सुरक्षित रूप से पहुंच गई। यात्रियों और चालक दल को उतार दिया गया और आगे की प्रक्रियाओं के लिए टर्मिनल बिल्डिंग में ले जाया गया। चूंकि एयर इंडिया के पास क्रास्नोयार्स्क अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर अपना स्टाफ नहीं था, इसलिए उन्होंने यात्रियों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए तीसरे पक्ष के समर्थन की व्यवस्था की।

शेयर बाजारों की दिशा आम बजट तथा वैश्विक रुख से तय होगी

नई दिल्ली, एजेंसी। इस सप्ताह स्थानीय शेयर बाजारों की दिशा आम बजट, कंपनियों के तिमाही नतीजों तथा वैश्विक रुख से तय होगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। विश्लेषकों ने कहा कि इसके अलावा विदेशी निवेशकों की गतिविधियां, डॉलर के मुकाबले रुपये का उतार-चढ़ाव तथा ब्रेंट कच्चे तेल के दाम भी बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेंगे।

क्या बोल रहे हैं एक्सपर्ट्स?

स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक प्रवेश गौड़ ने कहा, बाजार के लिए अगला सबसे महत्वपूर्ण कारक 23 जुलाई, 2024 को पेश होने वाला आम बजट है। बजट में वृद्धि को बढ़ावा देने वाली नीतियों के जारी रहने की उम्मीद है। कई अन्य कारक भी बाजार की दिशा को प्रभावित करेंगे। इनमें कंपनियों के चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही के नतीजे, घरेलू और वैश्विक आर्थिक आंकड़े और व्यापक रूप से वैश्विक बाजार का रुख शामिल है। उन्होंने कहा कि विदेशी और घरेलू संस्थागत निवेशकों (एफआईआई और डीआईआई) की गतिविधियां और कच्चे तेल की कीमतें बाजार की दिशा के लिए महत्वपूर्ण रहेंगी।

इस सप्ताह कई बड़ी कंपनियों मसलन बजाज फाइनेंस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एक्सिस बैंक, बजाज फिनसर्व, लार्सन एंड टुब्रो, डीएलएफ, टेक महिंद्रा और नेस्ले अपने तिमाही नतीजों की घोषणा करेंगी। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, बाजार की दिशा आगामी बजट से तय होगी।

मोतीलाल ओसवाल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के खुदरा शोध प्रमुख सिद्धार्थ खेमका ने कहा कि बाजार की आगे की दिशा के लिए आम बजट महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही तिमाही नतीजों का सत्र रफ्तार पकड़ने जा रह है, जिससे बाजार में कुछ शेयर विशेष गतिविधियां देखने को मिल सकती हैं। सोमवार को सभी की निगाह एचडीएफसी बैंक के शेयर पर रहेगी। जून, 2024 को समाप्त तिमाही में एचडीएफसी बैंक का एकीकृत शुद्ध लाभ 33.17 प्रतिशत बढ़कर 16,474.85 करोड़ रुपये रहा है।

बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 85.31 अंक या 0.10 प्रतिशत चढ़ गया। वहीं नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 28.75 अंक या 0.11 प्रतिशत के लाभ में रहा। सेंसेक्स शुक्रवार को 81,587.76 के अपने नए सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गया। उसी दिन निफ्टी भी 24,854.80 अंक के अपने नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचा।

65 पर जा सकता है उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक का शेयर, देगा मुनाफा

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर आप किसी क्वालिटी शेयरों में दांव लगाने की सोच रहे तो आपके लिए काम की खबर है। आप उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक के शेयर पर दांव लगा सकते हैं। घरेलू ब्रोकरेज के मुताबिक आने वाले दिनों में इस शेयर में तेजी आ सकती है। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक को 65 रुपये के टारगेट प्राइस के साथ खरीदने की सलाह दी है। उज्जीवन स्मॉल फाइनेंस बैंक का मौजूदा बाजार प्राइस 43.45 रुपये है।

एचडीएफसी बैंक का जून तिमाही का शुद्ध लाभ 33 प्रतिशत बढ़ा, 16,474 करोड़ रुपये पर पहुंचा आंकड़ा

नई दिल्ली, एजेंसी। एचडीएफसी बैंक का एकीकृत शुद्ध लाभ चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-जून तिमाही में 33.17 प्रतिशत बढ़कर 16,474.85 करोड़ रुपये हो गया है। बीते वित्त वर्ष की समान तिमाही में बैंक का शुद्ध लाभ 12,370 करोड़ रुपये रहा था। एचडीएफसी बैंक ने शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि जून तिमाही मे एकल आधार पर उसका शुद्ध लाभ बढ़कर 16,174 करोड़ रुपये था। हालांकि, पूर्ववर्ती मार्च तिमाही के 16,511 करोड़ रुपये से यह कम है। बैंक की कुल आमदनी जून तिमाही में बढ़कर 83,701 करोड़ रुपये रही है, जो बीते वित्त वर्ष की समान तिमाही में 57,816 करोड़ रुपये थी।

सोना बेचा है तो है चुकाना होगा इनकम टैक्स

नई दिल्ली, एजेंसी। इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने में अभी कुछ ही दिन बचे हैं। 31 जुलाई आखिरी तारीख है। अगर आपने पिछले साल यानी 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 के बीच सोना या चांदी बेची है, तो उसे अपने आइटीआर में दिखाना होगा। अगर टैक्स देनदारी बनती है तो उसे चुकाना भी पड़ेगा। दरअसल, सोना, चांदी आदि जैसी धातु को बेचने पर जो मुनाफा होता है, वह टैक्स के दायरे में आता है। इन पर टैक्स कितना चुकाना होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने खरीदे गए सोना या चांदी को कितने समय बाद बेचा है। इस समय काफी लोग फिजिकल गोल्ड के अलावा डिजिटल गोल्ड और पेपर गोल्ड में भी निवेश करते हैं। यहां पेपर गोल्ड से मतलब है कि ऐसी सरकारी स्कीम जिनमें फिजिकल सोना नहीं खरीदना पड़ता। इसमें गोल्ड म्यूचुअल फंड, सॉवरेन बॉन्ड आदि शामिल हैं। साथ ही डिजिटल गोल्ड से मतलब है कि ऑनलाइन ऐप जैसे गूगलपे, पेटीएम, फोनपे आदि जैसे प्लेटफॉर्म से खरीदना। इनका फायदा होता है कि आप यहां से 100 रुपये का भी गोल्ड खरीद सकते हैं। जब आप इसे बेचेंगे तो मुनाफा इनकम टैक्स के दायरे में आएगा। हालांकि सॉवरेन बॉन्ड स्कीम में मैच्योरिटी पर इनकम टैक्स नहीं देना होता है। यह 8 साल की होती है। काफी लोगों को लगता है कि सोना या चांदी बेचने पर जो रकम मिलेगी, उस रकम पर टैक्स चुकाना होगा। ऐसा नहीं है। बता दें कि इन्हें बेचने पर आपको जो फायदा होगा ।

ओला इलेक्ट्रिक ने अपने एस1 पोर्ट फोलियो पर आकर्षक डील्स पेश कीं

मुंबई, एजेंसी। ओला इलेक्ट्रिक अपने ओला एस1 स्कूटरों की खरीद पर 25,000 रुपये तक के आकर्षक बेनेफिट्स प्रदान कर रहा है। 22 जुलाई तक लागू इन ऑफरों में एस1 एक्स. पर 10,000 रुपये और एस1 प्रो एवं एस1 एयर पर 5,000 रुपये का फ्लैट डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके अलावा कंपनी चुनिंदा क्रेडिट कार्ड ईएमआई पर ग्राहकों को 5,000 रुपये तक का अतिरिक्त डिस्काउंट भी दे रही है। इन ऑफरों के अलावा ग्राहकों को ईएमपीएस 2024 के अंतर्गत 10,000 रुपये की सब्सिडी भी मिलेगी। इन आकर्षक ऑफरों का लाभ उठाने के लिए ग्राहकों को कीमतें बढ़ने से पहले ओला इलेक्ट्रिक स्कूटर खरीदकर उसे रजिस्टर कराना होगा।

ओला इलेक्ट्रिक एक विशाल एस1 पोर्टफोलियो पेश करता है, जिसमें आकर्षक मूल्य में छः उत्पाद हैं, जो विभिन्न रेंज की जरूरत वाले ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करते हैं। हाल ही में कंपनी ने मास-मार्केट सेगमेंट में अपना एस1 एक्स पोर्टफोलियो उतारा है।

तीन बैटरी कॉन्फिगुरेशन (2 किलोवॉटघंटा, 3 किलोवॉटघंटा, और 4 किलोवॉटघंटा) के साथ इन स्कूटरों का मूल्य क्रमशः 74,999 रुपये; 85,999 रुपये और 97,499 रुपये है। साथ ही इसके प्रीमियम स्कूटरों में एस1 प्रो, एस1 एयर, और एस1 एक्स. का मूल्य क्रमशः 1,28,999 रुपये, 1,01,499 रुपये और 84,999 रुपये है। ओला इलेक्ट्रिक अपने उत्पादों की संपूर्ण श्रृंखला पर बिना किसी अतिरिक्त लागत के 8 साल/80,000 किलोमीटर की एक्सटेंडेड बैटरी वॉरंटी प्रदान करता है। ओला इलेक्ट्रिक का मानना है कि इस कदम से इलेक्ट्रिक वाहनों की उम्र बढ़ेगी, और इलेक्ट्रिक वाहन अपनाने में आने वाली एक बड़ी बाधा का समाधान हो सकेगा। ग्राहक एड-ऑन वॉरंटी लेकर 1,00,000 किलोमीटर तक की दूरी को केवल 4,999 रुपये देकर और 1,25,000 किलोमीटर तक की दूरी को केवल 12,999 रुपये देकर वॉरंटी के अंतर्गत ला सकते हैं। इसके अलावा, केवल 2,999 रुपये के ओला केयर. सब्सक्रिप्शन में फ्री सर्विस, जैसे प्रतिवर्ष विस्तृत चेक-अप, सर्विस पिक एवं ड्रॉप सेवाएं, कंज्यूमेबल्स, और थेफ्ट एवं रोडसाइड असिस्टेंस शामिल हैं।

आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी के वार्षिक दीक्षांत समारोह में 334 स्नातकों ने हासिल की उपाधि

जयपुर , एजेंसी। देश में अग्रणी स्वास्थ्य प्रबंधन अनुसंधान विश्वविद्यालय आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी ने जयपुर, राजस्थान के अपने परिसर में आज वार्षिक दीक्षांत समारोह का आयोजन किया। इस अवसर पर 334 छात्रों को उपाधि प्रदान की गई। दीक्षांत समारोह की मुख्य अतिथि सुश्री स्वाति दलाल, मैनेजिंग डायरेक्टर, एबॉट इंडिया लिमिटेड और विशिष्ट अतिथि डॉ. महनाज़ वाहेदी, साइंटिस्ट, रिसर्च कैपेसिटी स्ट्रेंथनिंग टीडीआर, ट्रॉपिकल रोगों में रिसर्च और ट्रेनिंग के लिए विशेष कार्यक्रम, विश्व स्वास्थ्य संगठन, जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड ने विद्यार्थियों को उनकी डिग्री प्रदान की। इस गरिमापूर्ण दीक्षांत समारोह में आईआईएचएमआर विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन श्री सुदर्शन जैन और आईआईएचएमआर विश्वविद्यालय के प्रेसिडेंट डॉ. पी आर सोडानी भी शामिल हुए। इस ऐतिहासिक समारोह में हॉस्पिटल और हेल्थ मैनेजमेंट, फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट, और डेवलपमेंट मैनेजमेंट में पीएच डी और एमबीए कार्यक्रमों के स्नातक समूहों को डिग्री प्रदान की गई। कुल 8 छात्रों को पीएच डी की उपाधि, 208 छात्रों को एमबीए (हॉस्पिटल और हेल्थ मैनेजमेंट), 105 छात्रों को एमबीए (फार्मास्युटिकल मैनेजमेंट) और 13 छात्रों को एमबीए (डेवलपमेंट मैनेजमेंट) की डिग्री प्रदान की गई।स्वागत भाषण देते हुए और विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए आईआईएचएमआर यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट डॉ. पी आर सोडानी ने कहा, ''मैं ग्रेजुएशन पूरा करने वाले सभी छात्रों को हार्दिक बधाई देता हूं।

जेएसडब्ल्यू इन्फ्रास्ट्रक्चर ने विकास को बढ़ावा देने के लिए पोर्ट कनेक्टिविटी परियोजना का अधिग्रहण किया

मुंबई, एजेंसी। जेएसडब्ल्यू इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड (कंपनी), जो जेएसडब्ल्यू समूह का हिस्सा है और भारत की दूसरी सबसे बड़ी निजी वाणिज्यिक बंदरगाह ऑपरेटर है, ने आज एक विकासाधीन स्लरी पाइपलाइन परियोजना की खरीद की घोषणा की। कंपनी के बोर्ड ने जेएसडब्ल्यू स्टील की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी जेएसडब्ल्यू उत्कल स्टील लिमिटेड से 30 मिलियन टन प्रति वर्ष की विकासाधीन स्लरी पाइपलाइन परियोजना के अधिग्रहण और लौह अयस्क के परिवहन के लिए पाइपलाइन का उपयोग करने के लिए 20 साल की लंबी अवधि के टेक-ऑर-पे समझौते में प्रवेश करने को मंजूरी दे दी है।

यह परियोजना ओडिशा राज्य के नुआगांव से जगतसिंहपुर तक चलने वाली 302 किलोमीटर लंबी स्लरी पाइपलाइन के लिए है और यह सीधे ओडिशा में बनने वाले जटाधार बंदरगाह से जुड़ेगी। परियोजना के 122 किलोमीटर हिस्से पर काम पहले ही पूरा हो चुका है। परियोजना 2027 की शुरुआत में पूरी होने वाली है और अप्रैल 2027 में वाणिज्यिक संचालन शुरू होने की उम्मीद है।

JSW Infrastructure

एक स्वतंत्र मूल्यांकन विशेषज्ञ फर्म ने वर्तमान में विकसित की जा रही स्लरी पाइपलाइन के लिए हस्तांतरण मूल्य निर्धारित किया है। यह लगभग 1,700 करोड़ रुपये है, जिसमें (1) 31 मई 2024 तक किए गए व्यय का उचित मूल्य; और (2) 31 मई 2024 के बाद वास्तविक हस्तांतरण तिथि तक अनुमानित लागतें शामिल हैं।

पोर्ट कनेक्टिविटी परियोजना, कंपनी की विकास रणनीति के अनुरूप है, जो मजबूत वार्षिक नकदी प्रवाह और आकर्षक मध्य-किशोर परियोजना आईआरआर (आंतरिक रिटर्न दर) प्रदान करती है। इसके अलावा, यह परियोजना भूमिगत लौह अयस्क के परिवहन के लिए एक स्थायी समाधान प्रदान करती है

आईपीएल मेगा ऑक्शन

बीसीसीआई और आईपीएल फ्रेंचाइजियों की जुलाई के अंत में होगी बैठक, इन 4 मुद्दों पर होगी चर्चा

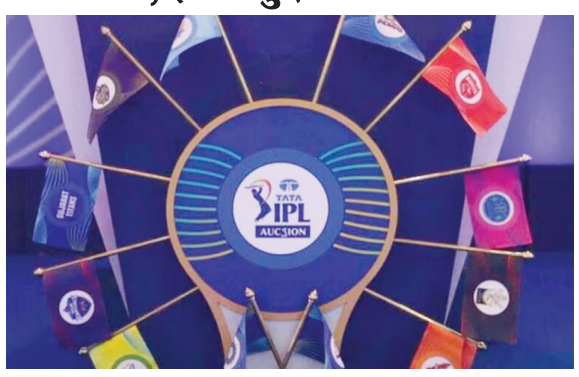

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के साथ इंडियन प्रीमियर लीग फ्रेंचाइजियों की मेगा ऑक्शन को लेकर बैठक इस महीने के अंत में होगी। बीसीसीआई ने मालिकों से 30 या 31 जुलाई को होने वाली बैठक के लिए उपलब्ध रहने को कहा है। हालांकि बैठक दोनों में के किस तारीख को होगी इसकी पुष्टि नहीं हुई है। बैठक मुंबई में बीसीसीआई कार्यालय में होने की उम्मीद है। आम तौर पर ऐसी बैठकें किसी पांच सितारा होटल में होती हैं,लेकिन बीसीसीआई मालिकों को वानखेड़े स्टेडियम परिसर के अंदर अपने नए नवीनीकृत कार्यालय में बुलाना चाहता है।

खिलाड़ियों का रिटेंशन –बैठक का मुख्य एजेंडा खिलाड़ियों की रिटेनशन होगी। किसी फ्रैंचाइजी के लिए अनुमत रिटेंशन की संख्या पर राय बंटी हुई हैं। कुछ फ्रेंचाइजियों का तर्क है कि निरंतरता आवश्यक है, क्योंकि अधिकांश फ्रैंचाइजी अब 17 वर्षों से अधिक समय से अस्तित्व में हैं और रिटेंशन की संख्या आठ तक होनी चाहिए। यह तर्क दिया जा रहा है कि प्रशंसक जुड़ाव और ब्रांड बिल्डिंग के लिए उन्हें अपनी टीमों को उन खिलाड़ियों के इर्द-गिर्द बनाने की जरूरत है, जिनसे जोड़कर फ्रैंचाइजी की छवि देखी जाती है।

राइट टू मैच – इसके विपरीत कुछ फ्रैंचाइजियों ने बीसीसीआई को सूचित किया है कि रिटेंशन की संख्या कम से कम होनी चाहिए। इस बात पर भी बहस चल रही है कि मेगा ऑक्न में राइट टू मैच विकल्प होना चाहिए या नहीं।

सैलेरी कैप और रिटेंशन वैल्यू – सैलेरी कैप पर भी चर्चा होगी, जो अगले तीन साल के साइकल के पहले वर्ष में लगभग 120 करोड़ रुपये होने की उम्मीद है। इसके बाद प्रत्येक खिलाड़ी के रिटेंशन वैल्यू पर भी चर्चा हो सकती है। पहले टॉप रिटेंशन को सैलरी के तौर पर सैलरी कैप का लगभग 16-17 प्रतिशत (90 करोड़ रुपये की सैलरी कैप में 15 करोड़ रुपये) था।

टॉप रिटेंशन को 20 करोड़ रुपये की सैलेरी मिलेगी – यदि इसमें बदलाव नहीं होता है तो इस बार टॉप रिटेंशन वाले खिलाड़ी का वेतन लगभग 20 करोड़ रुपये या उससे थोड़ा अधिक हो सकता है। हालांकि, यह अभी भी अटकलें ही हैं। बीसीसीआई से अपेक्षा की जा रही है कि वह रिटेन किए गए खिलाड़ियों के वेतन तय करने का फार्मूला बताए।

राहुल और पंत आईपीएल में छोड़ सकते है अपनी टीम की कप्तानी

नईदिल्ली, एजेंसी। मेगा आक्शन से पहले कई टीमें बड़ा बदलाव करते हुए नजर आ सकती है. जिसकी दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपर जायंट्स की टीम का नाम भी शामिल है. इन दोनों टीमों का प्रदर्शन पिछले आईपीएल सीजन में काफी खराब रहा था. जिसकी वजह से दोनों ही टीमें अपने कप्तान को बदलने के बारे में सोच रही है. कई रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है की केएल राहुल अगले सीजन में आरसीबी की कप्तानी करते हुए नजर आ सकते है तो वही दिल्ली कैपिटल्स के कप्तान ऋषभ पंत चेन्नई सुपर किंग्स का हिस्सा बन सकते है. आईपीएल सीजन 2024 में हैदराबाद के खिलाफ हार के बाद लखनऊ सुपर जायंट्स के मालिक संजीव गोयनका और केएल राहुल के बीच का एक वीडियो वायरल हुआ था. जिसमें दोनों के बीच काफी बहस हुई थी और तब से उनके टीम से अलग होने की खबरें चल रही है. मगर उसके बाद संजीव गोयनका ने केएल राहुल को अपने घर पर खाने के लिए बुलाया था. जिसके बाद ऐसे दावे हो रहे थे की दोनों के बीच सब कुछ ठीक हो गया है ।

जब लात पड़ने वाली हो..., शमी ने संन्यास को लेकर एमएस धोनी की कही इन दो बातों को किया याद

नई दिल्ली, एजेंसी। एमएस धोनी क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कब करेंगे? यह एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब अभी भी दिया जाना बाकी है। इस विकेटकीपर बल्लेबाज ने 2020 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट करियर को अलविदा कह दिया था, लेकिन वह एक खिलाड़ी के रूप में आईपीएल में खेलना जारी रखे हुए हैं। धोनी आईपीएल 2024 में खेले, लेकिन लीग राउंड से चेन्नई सुपर किंग्स के बाहर होने के बाद भी अपने रिटायरमेंट योजनाओं के बारे में कोई संकेत नहीं दिए। हालांकि, मोहम्मद शमी ने एक इंटरव्यू के दौरान माही के रिटायरमेंट प्लान को लेकर बातचीत की है। उन्होंने खुलासा किया है कि धोनी ने उन्हें संन्यास कब लेना चाहिए, इस बारे में दो बातें कही थीं।

उन्होंने कहा, आप लोग उनके भविष्य पर सवालिया निशान लगा रहे हैं। वह व्यक्ति खुद रिटायरमेंट के सवाल पर कहता है- देखा जाएगा। शमी ने कहा, मैंने

माही भाई से बात की थी कि किसी खिलाड़ी को कब संन्यास लेना चाहिए? उन्होंने कहा- पहला जब आप खुद क्रिकेट से बोर हो जाते हो और दूसरा जब आपको अहसास हो कि आपको टीम से बाहर कर दिया जाएगा। शमी ने कहा- लेकिन पहली और महत्वपूर्ण बात यह है कि जब आप खेल का आनंद लेना बंद कर देते हैं, तो यह संकेत है कि आपका समय आ गया है। बेहतर होगा कि आप रिटायर होने के लिए सबसे अच्छा पल चुनें। क्योंकि यदि आपमें किसी प्रारूप को बनाए रखने की क्षमता नहीं है तो आपका शरीर आपको संकेत देने लगता है। यही वह समय है जब एकखिलाड़ी को रिटायरमेंट पर फैसला लेना चाहिए।

धोनी को सर्वकालिक महान विकेटकीपर-बल्लेबाजों में से एक माना जाता है। खेल के तीनों अंतरराष्ट्रीय प्रारूपों में धोनी ने 44.96 की औसत से 17,266 रन बनाए, जिसमें 16 शतक और 108 अर्धशतक शामिल हैं। 224 रन उनका व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ स्कोर है। एक कप्तान के रूप में धोनी ने भारत को नंबर एक टेस्ट रैंकिंग दिलाई। साथ ही आईसीसी टी20 विश्व कप 2007, आईसीसी वनडे विश्व कप 2011 और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2013 में भी चैंपियन बनाया। इसी के साथ वह सभी प्रमुख आईसीसी व्हाइट बॉल टूर्नामेंट जीतने वाले एकमात्र कप्तान बन गए। धोनी के लिए वनडे सर्वश्रेष्ठ प्रारूप रहा है। उन्होंने 350 मैचों की 297 पारियों में 50.57 की औसत से 10,773 रन बनाए हैं, जिसमें 10 शतक और 73 अर्धशतक शामिल हैं। उनका बेस्ट स्कोर नाबाद 183 रन है।

सीएसके के कप्तान के रूप में धोनी ने फ्रेंचाइजी को पांच आईपीएल खिताब दिलाए। टूर्नामेंट के 2024 संस्करण में वह ऋतुराज गायकवाड़ की कप्तानी में खेले, लेकिन टीम प्लेऑफ में जगह बनाने में विफल रही। सीएसके की टीम नेट-रन-रेट के मामले में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से पीछे रहकर प्लेऑफ में जगह बनाने से चूक गई थी। टीम सात जीत और सात हार के साथ पांचवें स्थान पर रही। 2024 आईपीएल में धोनी ने 11 पारियों में 53.66 की औसत और 220.54 के स्ट्राइक रेट से 161 रन बनाए। नाबाद 37 उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर था। उन्होंने संस्करण में 14 चौके और 13 छक्के लगाए।

पेरिस ओलंपिक

16 खेलों पर सरकार ने खर्च किए 407 करोड़ रुपए, पेरिस में 95 मेडल पर दांव लगाएंगे भारतीय खिलाड़ी

नईदिल्ली, एजेंसी। पेरिस ओलंपिक 2024 शुरुआत में एक हफ्ते से कम समय बचा है। फ्रांस की राजधानी में 10 हजार से ज्यादा एथलीट्स खेल के सबसे बड़े मंच पर उतरेंगे। भारत की ओर से 117 एथलीट्स का दल पेरिस जाएगा। भारत 16 खेलों के 69 इवेंट्स में चुनौती पेश करेगा। देश 95 मेडल के लिए दावेदारी पेश करेगा। भारत ने टोक्यो में हुए पिछले ओलंपिक खेलों में सात मेडल हासिल किए थे जो कि उसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन था। कोरोना के कारण 2021 में हुए इन खेलों के बाद साई ने पेरिस ओलंपिक साइकिल में काफी खर्च किए। भारत सरकार ने इन खेलों के लिए कुल मिलाकर 407 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। भारत इस बार मेडल्स की संख्या के दहाई आंकड़े तक पहुंचने की उम्मीद कर रहा है।

आर्चरी – भारत ने आर्चरी के खिलाड़ियों पर कुल मिलाकर 39.18 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। इसमें पांच टॉप्स के खिलाड़ी वहीं 13 डेवेलपमेंट तीरंदाज थे। भारत की ओर से तीन पुरुष और तीन महिला एथलीट हिस्सा लेंगे।

एथलेटिक्स – भारत का 28 खिलाड़ियों का एथलेटक्स दल ओलंपिक में जाने वाला है। बीते तीन साल में एथलेटिक्स पर 96.08 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। यह पैसा 36 नेशनल कैंप और 85 विदेशी दौरों पर खर्च किए गए हैं।

बैडमिंटन – भारत की ओर से सात खिलाड़ियों का दल पेरिस ओलंपिक जाएगा। सरकार की ओर से बैंडमिंटन खेल पर बीते तीन सालों में 72.03 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। यह पैसा 25 खिलाड़ियों पर खर्च हुआ जिसमें 10 टॉप्स शटलर और 15 डेवलेपमेंट शटलर पर खर्च हुए हैं।

बॉक्सिंग – साई की ओर से बॉक्सिंग पर इस ओलंपिक साइकिल में 60.93 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। भारत के बॉक्सिंग दल में दो पुरुष और चार महिला बॉक्सर शामिल हैं। यह पैसा कुल मिलाकर 29 खिलाड़ियों पर खर्च हुए जिसमें 9 टॉप्स और 20 डेवलेपमेंट बॉक्सर हैं।

शूटिंग –भारत इस बार ओलंपिक में अपना सबसे बड़ा ओलंपिक दल भेजने वाला है। भारत की ओर से 21 निशानेबाज इन खेलों में हिस्सा लेंगे। ओलंपिक में शूटिंग के हर इवेंट में भारतीय खिलाड़ी नजर आएंगे। साई ने ओलंपिक के लिए 45 खिलाड़ियों पर 60.42 करोड़ रुपए खर्च किए हैं।

वेटलिफ्टिंग – भारत की ओर से इस बार भी वेटलिफ्टिंग में केवल एक ही खिलाड़ी देश का प्रतिनिधित्व करती हुई नजर आएगी। पिछले ओलंपिक में मीराबाई चानू ने सिल्वर मेडल जीता था जिसके बाद साई ने इस खेल पर 27 करोड़ रुपए खर्च किए। यह 27 करोड़ रुपए दो टॉप्स और छह डेवलेपमेंट लिफ्टर्स पर खर्च हुए।

रेसलिंग – भारत ने ओलंपिक साइकिल में कुल मिलाकर 37.80 करोड़ रुपए खर्च किए। उन्होंने 25 खिलाड़ियों के लिए नेशनल कैंप और विदेशी कैंप आयोजित किए। 25 पहलवानों को इसका फायदा मिला। भारत की ओर से छह पहलवान इन ओलंपिक खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

टेबल टेनिस – टेबल टेनिस में इस बार भारत इतिहास रचने वाला है। यह पहला मौका है जब भारत टीम इवेंट में हिस्सा लेगा। टीम इवेंट में क्वालिफाई करने के कारण भारत को सिंगल्स वर्ग में भी दो-दो कोटा हासिल हुए हैं। भारत की ओर से तीन पुरुष और तीन महिला खिलाड़ी ओलंपिक जाएंगे। साई ने टेबल टेनिस खेल पर 12.92 करोड़ रुपए खर्च किए हैं।

हॉकी – हॉकी में इस बार केवल पुरुष टीम पेरिस ओलंपिक जाएगी। टॉप्स के तहत पुरुष टीम पर 41.30 करोड़ रुपए खर्च किए हैं। यह पैसा 76 नेशनल कैंप और 36 विदेशी दौरों पर खर्च हुआ। भारत की पुरुष टीम ने टोक्यो ओलंपिक में ब्रॉन्ज मेडल हासिल किया था। इस बार उनसे मेडल का रंग बदलने की उम्मीद है।

भारतीय टीम के पूर्व बैटिंग कोच बोले- हार्दिक पंड्या के साथ हुई नाइंसाफी, दिक्कत देने वाला यू-टर्न

नईदिल्ली, एजेंसी। टी20 वर्ल्ड कप चैंपियन बनने बाद क्रिकेट के सबसे छोटे प्रारूप से रोहित शर्मा ने संन्यास ले लिया था। हार्दिक पंड्या उनके उत्तराधिकारी बनने के प्रबल दावेदार थे, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सूर्यकुमार यादव को इस फॉर्मेट में भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया। सूर्यकुमार यादव को कप्तान बनाए जाने पर भारतीय टीम के पूर्व बैटिंग कोच संजय बांगर ने हैरानी जताई है। उन्होंने कहा है कि पंड्या के साथ नाइंसाफी हुई। चयनकर्ताओं का यू-टर्न दिक्कत देने वाला है। बांगर ने कहा, जहां तक हार्दिक के टी20 टीम का कप्तान न बनने की बात है तो मैं थोड़ा हैरान हूं क्योंकि पिछले टी20 वर्ल्ड कप से पहले भी ऐसा लग रहा था कि अगर रोहित कप्तान नहीं बनते और हार्दिक उस समय चोटिल नहीं होते तो हार्दिक ही कप्तान होते। भारतीय टीम ने उस दिशा में जाना शुरू कर दिया था।

अचानक यू-टर्न लेना थोड़ा दिक्कत वाला – बांगर ने कहा, चयनकर्ताओं ने भी वह रास्ता खोज लिया था। मुझे अचानक यह यू-टर्न लेना थोड़ा दिक्कत देने वाला लगा। हमने पढ़ा है कि चयन समिति के अध्यक्ष और कोच ने हार्दिक पंड्या से बात की है। एक खिलाड़ी के तौर पर आप हमेशा यह समझते हैं कि चयनकर्ता क्या करने की कोशिश कर रहे हैं, नया कोच क्या करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन मुझे लगता है कि हार्दिक इस बात से बहुत दुखी होंगे कि उन्हें टी20 कप्तानी के लिए नहीं चुना जा रहा है।

हार्दिक के साथ थोड़ा अन्याय हुआ – सूर्यकुमार यादव को कप्तान बनाए जाने को लेकर बांगर ने कहा, ऐसा नहीं है कि सूर्यकुमार यादव ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेलने से पहले घरेलू क्रिकेट कम खेला है। इसलिए उनके पास बहुत अनुभव है, मुझे लगता है कि उन्होंने घरेलू क्रिकेट में भी मुंबई का नेतृत्व किया है और खिलाड़ियों से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करवाना जानते हैं। इसलिए सूर्यकुमार को कप्तान बनाए जाने में कुछ भी गलत नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि वह अच्छा काम करेंगे, लेकिन मुझे अभी भी लगता है कि हार्दिक के साथ थोड़ा अन्याय हुआ है।

चैंपियंस ट्रॉफी

हम उनके बिना खेलेंगे, हसन अली ने भारत के पाकिस्तान न आने पर प्रतिक्रिया दी

नईदिल्ली, एजेंसी। भारत के 2025 चैंपियंस ट्रॉफी के लिए पाकिस्तान दौरे पर न जाने की खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए स्टार पाकिस्तानी तेज गेंदबाज हसन अली ने कहा कि अगर आईसीसी टूर्नामेंट पाकिस्तान में आयोजित किया जाना है, तो इसे भारत की भागीदारी के बिना भी योजना के अनुसार ही आयोजित किया जाना चाहिए। पाकिस्तान आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के 2025 संस्करण की मेजबानी करने के लिए तैयार है, जो 19 फरवरी को कराची में शुरू होने वाला 8 टीमों का टूर्नामेंट है। लाहौर के गद्दाफी स्टेडियम में 9 मार्च को फाइनल की मेजबानी की जानी है। टूर्नामेंट के मैचों की मेजबानी के लिए पाकिस्तान में तीन स्थानों को चुना गया है जो आखिरी बार 2017 में आयोजित किए गए थे।

हसन अली ने समा टीवी पर कहा, अगर हम खेलने के लिए भारत जा रहे हैं, तो उन्हें भी पाकिस्तान आना चाहिए। कई लोगों ने अनगिनत बार कहा है कि खेलों को राजनीति से दूर रहना चाहिए। लेकिन अगर आप इसे दूसरे नजरिए से देखें, तो कई भारतीय खिलाड़ियों ने साक्षात्कारों में कहा है कि वे पाकिस्तान में खेलना चाहते हैं। तो, इसका मतलब यह नहीं है कि टीम नहीं आना चाहती; वे निश्चित रूप से आना चाहते हैं। लेकिन जाहिर है, उनके पास विचार करने के लिए अपनी नीतियां, देश और बोर्ड हैं।

हसन ने आगे जोर देते हुए कहा, जैसा कि हमारे (पीसीबी) अध्यक्ष पहले ही कह चुके हैं, अगर चैंपियंस ट्रॉफी पाकिस्तान में होने वाली है, तो यह पाकिस्तान में ही होगी। अगर भारत नहीं आना चाहता है, तो हम उनके बिना खेलेंगे। पाकिस्तान में क्रिकेट खेला जाना चाहिए और अगर भारत भाग नहीं लेना चाहता है तो इसका मतलब यह नहीं है कि क्रिकेट खत्म हो गया है। भारत के अलावा कई अन्य टीमें भी हैं।

रिपोर्ट्स के मुताबिक राजनीतिक तनाव के कारण भारतीय क्रिकेट टीम आगामी टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान की यात्रा नहीं कर सकती है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद से अपने मैचों को श्रीलंका या दुबई में स्थानांतरित करने का अनुरोध करने पर विचार कर रहा है। श्रीलंका और संयुक्त अरब अमीरात को आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए बैकअप स्थल के रूप में प्रमुख उम्मीदवार माना जा रहा है। भारत ने तनावपूर्ण राजनीतिक संबंधों के कारण 2008 एशिया कप के बाद से पाकिस्तान में कोई द्विपक्षीय श्रृंखला नहीं खेली है। दोनों टीमों के बीच आखिरी श्रृंखला दिसंबर 2012 से जनवरी 2013 तक भारत में आयोजित की गई थी। तब से, दोनों टीमें आईसीसी टूर्नामेंट्स और एशिया कप में ही खेली हैं। पाकिस्तान ने 2017 में आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी जीती, जबकि भारत ने 2013 में खिताब जीता इसके अलावा उन्होंने 2002 में श्रीलंका के साथ ट्रॉफी साझा की थी।

पेरिस ओलंपिक्स 2024

ओलिंपिक के खेल गांव में इंडिया की एंट्री, रोइंग के साथ ही आर्चरी के खिलाड़ी पहुंचे

नई दिल्ली, एजेंसी। पेरिस ओलिंपिक्स के लिए भारत के दल प्रमुख गगन नारंग ने शनिवार को बताया कि आर्चरी और रोइंग दल खेल गांव पहुंच गया है और खिलाड़ी खेलों के इस महासमर में अपना अभियान शुरू करने के लिए उत्सुक हैं। आर्चरी और रोइंग दल ने शुक्रवार को पेरिस खेल गांव में प्रवेश किया और अपनी अंतिम तैयारियों में जुटी भारतीय पुरुष हॉकी टीम नीदरलैंड्स से शनिवार को खेल गांव पहुंचेगी।

लंदन ओलिंपिक्स 2012 के कांस्य पदक विजेता निशानेबाज नारंग ने कहा, मैं गुरुवार रात को पेरिस पहुंचा और मैंने भारतीय दल के लिए खेल गांव के अंदर इंतजामों का जायजा लिया। आर्चरी और रोइंग पहुंचने वाली पहली भारतीय टीमें थीं। खिलाड़ी धीरे धीरे खेल गांव में सहज हो रहे हैं। उन्होंने बताया कि भारतीय खिलाड़ी काफी रोमांचित हैं और उत्साह से भरे हैं। चार बार के ओलिंपियन नारंग ने कहा, काफी उत्साह का माहौल है और खिलाड़ी भी स्पर्धाओं के एरीना में कुछ गेम टाइम चाहते हैं। हम सुनिश्चित करना चाहते हैं कि खिलाड़ियों को अपनी स्पर्धाएं शुरु करने से पहले वो सबकुछ मिले जिनकी उन्हें जरूरत है। भारत के 117 खिलाड़ी पेरिस ओलिंपिक्स में 20 स्पर्धाओं में हिस्सा लेंगे। इस अनुभवी खिलाड़ी ने कहा, मेरे लिए यह देखना गर्व का पल है कि भारतीय दल में पदक के दावेदार बढ़ रहे हैं। हमारे दल का प्रत्येक खिलाड़ी दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों की बराबरी करने ही नहीं बल्कि उन्हें पछाड़कर देश को गौरवान्वित करने में सक्षम है।

पेरिस में बेटी की कमी खलेगी-दीपिका

पेरिस पहुंची दीपिका कुमारी को अपनी 19 महीने की बेटी की कमी खल रही है, लेकिन इस भारतीय तीरंदाज के लिए ओलिंपिक्स पदक के सपने को पूरा करने के सामने यह बहुत छोटा सा त्याग है। दीपिका चौथी बार ओलिंपिक्स में हिस्सा ले रही हैं लेकिन उन्हें अब भी इन खेलों में अपने पहले पदक का इंतजार है। दीपिका ने कहा, अपनी बेटी से दूर होने के दर्द को बयां करना मुश्किल है लेकिन यह उस चीज को हासिल करने के बारे में भी है जिसके लिए हम इतने वर्षों से लगातार मेहनत कर रहे हैं। दीपिका ओलिंपिक्स की तैयारियों के लिए लगभग दो महीने तक बेटी से दूर रहीं। पेरिस के लिए उड़ान भरने से पहले पुणे के सेना खेल संस्थान में वह कुछ समय के लिए अपने पति तीरंदाज अतनु दास और अपनी बेटी के साथ रहीं। दीपिका ने कहा, मुझे उसकी काफी कमी खलती है, लेकिन इसमें कुछ नहीं कर सकते है। वह किसी के साथ भी जल्दी घुलमिल जाती है और वह अतनु और मेरे ससुराल के लोगों के साथ अच्छी तरह से घुलमिल गई है।

आर्चरी कोच का एक्रीडिटेशन नहीं

पेरिस खेलों के लिए एक्रीडिटेशन (मान्यता कार्ड) नहीं मिलने से नाराज भारत के कोरियाई आर्चरी कोच बाएक वूंग की ने शनिवार को कहा कि 30 अगस्त को उनका अनुबंध खत्म हो जाएगा जिसके बाद वह इस पद पर जारी नहीं रहेंगे। साथ ही उन्होंने भारतीय ओलिंपिक संघ (आईओए) के खराब प्रशासन की आलोचना की। मार्सिले में भारतीय टीम की तैयारी की देखरेख के बाद फ्रांस की राजधानी पहुंचे वूंग की ने कहा कि उन्हें महत्वपूर्ण समय पर ओलिंपिक्स कोचिंग की भूमिका से हटा दिया गया और अब वह वापसी की टिकट बुक किए जाने के बाद भारत लौटेंगे। 61 वर्षीय कोच ने कहा, मैं एक कोरियाई कोच हूं और मैंने पेरिस के लिए भारतीय तीरंदाजों की तैयारी के लिए अनुबंध किया था। लेकिन ऐसे महत्वपूर्ण समय पर मुझे कोचिंग की भूमिका से हटा दिया गया और मेरे उड़ान कार्यक्रम ने मुझे घर लौटने की जानकारी दी। वह पेरिस के एक होटल में ठहरे हुए हैं और ओलिंपिक्स के लिए अपने एक्रीडिटेशन का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मेरा अनुबंध 30 अगस्त तक है और मैंने ओलिंपिक्स के लिए ही इस करार पर हस्ताक्षर किए थे। अब मैं सोनीपत पहुंचने के बाद कोरिया जाने की औपचारिकताओं के लिए तैयारी की योजना बना रहा हूं। वूंग की ने स्पष्ट करते हुए कहा कि वह अपने अनुबंध को आगे नहीं बढ़ाएंगे।

वूंग से भारी रहता पलड़ा

भारत पेरिस के लिए 235 सदस्यों का दल भेज रहा है। इसमें 117 ऐथलीट हैं जबकि 68 कोच और 50 सपोर्ट स्टाफ। घुड़सवारी और वेटलिफ्टिंग में एक-एक ऐथलीट पर तीन-तीन कोच को भेजा जा रहा है, जबकि छह ऐथलीटों वाले आर्चरी के दल के साथ दो ही कोच हैं। यहां सिर्फ एक और कोच की संख्या बढ़ जाती तो इन खेलों की शुरुआत के पहले यह विवाद नहीं उठता।

संक्षिप्त समाचार

पेपर लीक में आया बड़ा अपडेट, एसओजी ने 50 हजार का इनामी दौसा से पकड़ा

जयपुर , एजेंसी। राजस्थान में पेपर लीक मामले में एसओजी ने 50 हजार के इनामी रिंकू शर्मा को दौसा से गिरफ्तार किया है। रिंकू शर्मा पेपर लीक माफिया हर्षवर्धन मीणा का राइट हैंड कहे जाते है। एसओजी को कई राज हाथ लगने की उम्मीद है। जिसके चलते एसओजी ने आरोपी को कोर्ट में पेश किया, जहां से मजिस्ट्रेट ने पेपर लीक आरोपी को 4 दिन की रिमांड पर सौंपा है। बता दें कि दौसा के लवकुश नगर का रहने वाला रिंकू शर्मा लंबे समय से पेपरलीक मामले में एसओजी की गिरफ्त से फरार चल रहा था। फरार आरोपी पर एसओजी ने 50 हजार रुपए का इनाम भी घोषित कर रखा था। उल्लेखनी है कि इस पूरे मामले में एसओजी ने पेपर लिक माफिया हर्षवर्धन मीणा को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। आरोपी रिंकू शर्मा का नाम भी पेपर लीक में सामने आया था, लेकिन पेपर लीक माफिया पटवारी की गिरफ्तारी के बाद गिरफ्तारी के डर से रिंकू शर्मा फरार हो गया था। एसओजी की ओर से लगातार फरार आरोपी रिंकू शर्मा की तलाश की जा रही थी। इसके लिए एसओजी ने दौसा में कई बार आरोपी के ठिकानों पर दबिश भी दी थी, लेकिन रिंकू शर्मा एसओजी के हाथ नहीं लगा था। इस दौरान एसओजी ने आरोपी की गिरफ्तारी को लेकर उस पर 50 हजार का इनाम घोषित कर दिया था।

कुंड में समाया नाले का पानी, दूषित जल पीने से 3 लोगों की मौत; 10 बीमार

उदयपुर , एजेंसी। राजस्थान में उदयपुर जिले की गिर्वा तहसील में आदिवासी बहुल पोपल्टी गांव में दूषित पानी पीने से तीन लोगों की मौत एवं 10 से अधिक के बीमार होने का मामला सामने आया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पोपल्टी गांव में नाले में बनाई गई खुले कुंड में से लोग पीने के पानी का उपयोग करते है। अभी मॉनसून की बारिश के बाद नाले का पानी खुले कुंड में घुस गया जिससे यह पानी दुषित हो गया था। क्षेत्र में पेयजल की व्यवस्था नहीं होने से ग्रामीण इसी कुंड के पानी का उपयोग कर रह थे। बताया गया है कि इसके कारण से पिछले तीन दिनों में दो बच्चों एवं एक महिला की उल्टी दस्त से मौत हो गई तथा 11 लोगों को समीप के नाई सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर उपचार किया जा रहा है। इसमें गंभीर रूप से बीमार दो लोगों को शनिवार को उदयपुर के एम बी चिकित्सालय में भर्ती कराया गया है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डा शंकर लाल बामनिया ने बताया कि सूचना पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की टीम ने गांव का दौरा घर.घर सर्वे किया गया। चिकित्सा विभाग की टीम ने सभी को दवाईयां सुलभ कराई तथा लोगों के स्वास्थ्य की अन्य तरह की जांच की जा रही है। एक मीडिया रिपोर्ट में उदयपुर के सीएमएचओ डॉक्टर शंकर बामनिया के हवाले से बताया गया है कि बीमार लोगों को जिंक और ओआरएस दिया जा रहा है। इसके अलावा पेट दर्द और उल्टी रोकने की दवा भी उन्हें दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, डॉक्टर बमानिया ने यह भी जानकारी दी है कि यहां के गांव वाले जिस पानी को पीते हैं उस जगह से पानी के सैंपल लिए गए हैं। इसके अलावा बीमार लोगों के भी नमूने लिए गए हैं। इन सैंपलो को लैब में जांच के लिए भी भेज दिया गया है। यह भी कहा जा रहा है कि इस गांव के लोग कई सालों से इस कुंड का पानी पीते आए हैं।

ताजनगरी को सितंबर से मिलेगा एक और वंदेभारत ट्रेन का तोहफा

आगरा, एजेंसी। ताजनगरी आगरा को एक सितंबर से एक और वंदेभारत एक्सप्रेस का तोहफा मिल सकता है। रेलवे जयपुर से उदयपुर के बीच चलने वाली वंदेभारत ट्रेन को सप्ताह में तीन दिन आगरा फोर्ट से चलाएगा। ट्रेन उदयपुर-आगरा फोर्ट के बीच कोटा होकर सप्ताह में तीन दिन चलेगी। रेलवे के सूत्रों का कहना है कि एक सितंबर से ट्रेन सप्ताह में तीन दिन आगरा से चलना शुरू हो जाएगी। अभी यह ट्रेन उदयपुर से जयपुर के बीच में चलती है। उदयपुर-जयपुर वंदेभारत एक्सप्रेस ट्रेन के रूट में रेलवे आंशिक बदलाव करने जा रहा है। ट्रेन का अंतिम स्टॉप सप्ताह में तीन दिन जयपुर की जगह आगरा होगा। ट्रेन चलाने की तैयारी रेलवे ने लगभग पूरी कर ली है। रेलवे की योजना 1 सितंबर से यह ट्रेन कोटा होकर चलाने की है।

आपको अधिकार नहीं; बीच बैठक में अजीत पवार ने चाचा को चुप कराया, 2 घंटे तक खामोश रहे एनसीपी चीफ

पुणे , एजेंसी। पुणे शहर में जिला योजना एवं विकास समिति की बैठक हो रही थी। इस बैठक में जिला संरक्षक मंत्री होने के नाते अजीत पवार भी मौजूद थे। उन्होंने बैठक की अध्यक्षता की। इस दौरान उन्होंने अपने चाचा और एनसीपी (एसपी) अध्यक्ष शरद पवार से साफ कहा कि उन्हें सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है। इसके बाद वरिष्ठ पवार अगले दो घंटे तक चुप रहे। बैठक में एनसीपी के दोनों गुटों के नेताओं के बीच तीखी नोकझोंक भी हुई।

अजीत पवार द्वारा डीपीडीसी में अपने चाचा के बोलने के अधिकार पर सवाल उठाने से उनकी बेटी और बारामती की सांसद सुप्रिया सुले नाराज हो गईं। बैठक के कुछ देर बाद सुले ने इंडियन एक्सप्रेस से कहा, आज की डीपीडीसी बैठक से बहुत कुछ सीखने को मिला। शरद पवार जिला संरक्षक मंत्री अजीत पवार के आने से पांच मिनट पहले बैठक में पहुंचे। जब अजीत पवार आए तो प्रोटोकॉल के अनुसार शरद अपनी कुर्सी से उठ गए। यह पुरानी दुनिया की राजनीति का एक वास्तविक उदाहरण था, जिसके लिए महाराष्ट्र प्रसिद्ध है।

सुले ने आगे कहा कि जब शरद ने सवाल पूछे तो अजीत पवार ने उन्हें नियम दिखाने का प्रयास किया। सुले ने कहा, उन्होंने कहा कि सांसद केवल आमंत्रित सदस्य हैं और उन्हें सवाल नहीं पूछने चाहिए। उन्होंने इस संबंध में एक सरकारी प्रस्ताव का हवाला देने की कोशिश की। मैं 18 साल से सांसद हूं। सभी सांसदों और विधायकों ने हमेशा डीपीडीसी की बैठकों में सवाल उठाए हैं। इतने सालों बाद अचानक यह नियम पुस्तिका क्यों सामने आई है वह भी शरद पवार पर नियम पुस्तिका

फेंकना, जो 83 साल के हैं और जो न केवल महाराष्ट्र में बल्कि भारत में भी सबसे बड़े नेता हैं। सुले ने कहा कि अजीत पवार इस बात पर जोर देते रहे कि सांसद विशेष आमंत्रित सदस्य हैं। उन्होंने सरकारी राजपत्र अधिसूचना की एक प्रति दिखाते हुए कहा, नियम यह स्पष्ट करते हैं। आप कानून द्वारा विशेष आमंत्रित सदस्य हैं। कानून आपको भाग लेने का अधिकार भी देता है। सुले ने कहा कि शनिवार को डीपीडीसी की बैठक में जो कुछ भी हुआ, वह महाराष्ट्र की राजनीति की संस्कृति में पहली बार हुआ। यह देखना दुखद है।

आपको बता दें कि डीपीडीसी की बैठक में पुणे के सांसद और विधायक मौजूद थे और अजीत पवार अध्यक्षता कर रहे थे। शरद पवार ने अजीत पर तीन सवाल दागे। शरद ने अजीत की ओर देखे बिना और अजीत से तीन कुर्सियां दूर बैठे हुए बारामती में पेयजल प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में जानना चाहा। शरद पवार ने कहा, बारामती शहर में आपूर्ति किया जाने वाला पेयजल प्रदूषित है। अगर हम इसमें हाथ डालें तो काले रंग का पानी दिखाई देगा। इस संबंध में कार्रवाई करें। अपने जवाब में अजीत पवार ने कहा, कुछ उद्योग बारामती को प्रदूषित कर रहे हैं। प्रदूषण बोर्ड को उन्हें नोटिस भेजने के लिए कहा गया है। अगर हम उद्योग बंद कर देंगे तो इससे किसानों के लिए समस्या पैदा होगी। सुले और शिरुर के सांसद अमोल कोल्हे ने सवाल पूछना शुरू किया और जानना चाहा कि सांसदों को विकास निधि क्यों आवंटित नहीं की जा रही है। अजीत पवार ने सीधे उनके सवालों का जवाब देने से इनकार कर दिया। जिला कलेक्टर सुहास दिवासे ने उनके सवालों का जवाब दिया। हालांकि बैठक के बाद अजीत पवार ने सुले की तारीफ की।

अजीत पवार ने कहा, आज की बैठक में सुप्रिया सुले ने एक अच्छा सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री को महाराष्ट्र के लोकसभा सांसदों की एक बैठक बुलानी चाहिए ताकि उनके निर्वाचन क्षेत्रों के मुद्दों को समझा जा सके।

40 की मौत, 329 करोड़ का नुकसान; हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश से तबाही

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश में भारी बारिश के चलते करीब 329 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ है जबकि 40 लोगों की मौत हो गई है। राज्य के इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर ने इस बारे में जानकारी देते हुए बताया है कि 27 जून को राज्य में मॉनसून की शुरुआत के बाद से अब तक यानि 27 जुलाई तक 40 लोगों की मौत हो गई है। इस बीच सिरमौर जिले के पावंटा साहिब में गिरिपार इलाके में भारी बारिश हुई है। यहां पर भारी बारिश के बाद बाढ़ आ गई और बेटी को बचाते-बचाते पिता की मौत हो गई। बाद में फ्लैश फ्लड में पिता बह गया और उसकी लाश 10 किमी दूर टौंस नदी में मिली।

फिलहाल, पुलिस ने लाश को कब्जे में ले लिया है। बाढ़ के पानी में लाश के चेहरे का कुछ हिस्सा गायब हो गया है। सिरमौर पुलिस ने लाश मिलने की पुष्टि की है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, सिरमौर जिले के पांवटा साहिब विधानसभा क्षेत्र में गिरिपार की डांडा पंचायत का यह मामला है। दरअसल, भारी बारिश से रेतुआ गांव में अचानक बाढ़ आई और 48 साल का शख्स बह गया। घटना के दौरान शख्स की बेटी साथ थी और किसी तरह पिता ने बेटी को बचा लिया। पिता की पहचान अमन सिंह पुत्र तेलुराम, डांडा, कालाअंब के रूप में हुई है। पिता यह देखने के लिए घर से निकला था कि कहीं बारिश की वजह से घर और गौशाला को खतरा तो नहीं है।

फिलहाल, अमन सिंह का शव 10 किमी दूर टौंस नदी से बरामद किया गया है। पुरुवाला थाने के एसएचओ ने बताया कि पुलिस टीम ने शव को कब्जे में लिया है। उन्होंने बताया की भारी बारिश के बाद इलाके में अचानक बाढ़ आया था। पूरे मामले के बाद लोगों में दहशत और रोष है। लोगों का कहना है कि इस क्षेत्र में बीते कुछ महीनों से अंधाधुंध पेड़ कटान हो रहा है।

दुकानों और ढाबों पर नेमप्लेट लगाने यूपी सरकार के फैसले को लेकर सियासत गर्म

जिन्ना बन गए हैं ओवैसी, कांवड़ यात्रा नेमप्लेट पर विवाद के बीच बीजेपी का पलटवार

हैदराबाद, एजेंसी। कांवड़ यात्रा रूट पर पड़ने वाली दुकानों और ढाबों पर नेमप्लेट लगाने यूपी सरकार के फैसले को लेकर सियासत गर्म है। विपक्षी दल और मुस्लिम संगठन इसे भेदभावपूर्ण बता रहे हैं। एआईएमआईएम चीफ असदुद्दीन ओवैसी ने कहा यह भारत में मुस्लिमों के खिलाफ घृणा को दिखाता है। ओवैसी ने सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर कहा, उत्तर प्रदेश के कांवड़ रूट में डर का माहौल है। यह भारतीय मुसलमानों के प्रति घृणा की असलियत है। इस तरह का माहौल बनाने की जिम्मेदारी राजनीतिक दलों की है। इस काम में तथाकथित सेक्युलर पार्टियां भी शामिल हैं।

ओवैसी ने एक अंडे की रेहड़ी की तस्वीर भी शेयर की। पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी चीफ सुकांता मजूमदार ने कहा कि विपक्ष लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा कि इसी तरह का नोटिफिकेशन समाजवादी पार्टी की सरकार में भी जारी किया गया था। उन्होंने कहा, ओवैसी पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना की भूमिका निभा रहे हैं।

मजूमदार ने कहा, विपक्ष झूठ बोलकर लोगों को गुमराह कर रहा है। इसी तरह का नोटिफिकेशन मुलायम सिंह यादव की सरकार में भी जारी किया गया था। अखिलेश यादव की सरकार ने भी इस तरह के नियम बनाए थे। यह एक रूटीन काम है। कानून के मुताबिक जिसके नाम पर रजिस्ट्रेशन है उसका नाम जरूरी है। जो हिंदू नॉन वेज खाते हैं वे मुस्लिमों की दुकानों पर जाते हैं। पश्चिम बंगाल में हम ऐसी बहुत सारी दुकानों पर जाते हैं जिनके मालिक मुसलमान हैं। विपक्ष लोगों को बांटने की कोशिश कर रहा है और असदुद्दीन ओवैसी जिन्ना की भूमिका निभा रहे हैं।

वहीं राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा कि इस तरह के अजेंडे केवल देश को बांटने का काम करेंगे। उन्होंने कहा, यूपी में कांवड़ यात्रा रूट पर रेहड़ी वालों को भी मालिक के नाम की नेमप्लेट लगानी होगी। क्या यही विकसित भारत का रास्ता है इस तरह के अजेंडे से देश बंटेगा। जमायत उलेमा ए हिंद चीफ मौलाना अर्शद मदनी ने कहा कि यह सांप्रदायिक फैसला है और इससे देश विरोधी तत्वों को मौका मिल जाएगा।

पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती ने कहा कि अब बीजेपी का अगला टारगेट दलित होने वाले हैं। उन्होंने कहा, पहले बीजेपी ने मुस्लिमों के अधिकारों के साथ छेड़छाड़ की। इसके बाद वे दलितों और पिछड़ों पर हमला करेंगे क्योंकि वे एक अलग सिस्टम बनाना चाहते हैं। उत्तर प्रदेश में किया गया फैसला संविधान के खिलाफ है। यूपी सरकार के इस फैसले को लेकर शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने भी हमला बोलो और कहा कि बीजेपी को इससे कोई फायदा नहीं होगा।

केन्या में सनकी सीरियल किलर ने 42 महिलाओं की बेरहमी से की हत्या, थाने के पास फेंकी लाशें

नैरोबी, एजेंसी। केन्या की राजधानी नैरोबी में एक सनकी सीरियल किलर के घर से हैरान करने वाली चीजें मिली हैं। वहीं सीरियल किलर का कबूलनामा भी बेहद डरावना है। पुलिस के मुताबिक कॉलिन्स जुमैसी खालुशा को लोग पिशाच कहते हैं। 33 साल के आरोपी ने अब तक कम से कम 42 महिलाओं की हत्या की है जिसमें उसकी पत्नी भी शामिल है। वह हत्या के बाद महिलाओं के शव की दुर्दशा कर देता था और फिर उसे नाइलॉन की बोरी में पैक कर देता था। आरोपी नैरोबी में ही एक पुलिस थाने के पास स्लम में जाकर इन लाशों को फेंक देता था। तलाशी के दौरान उसके घर से बांका, रबर के दस्ताने, सेलोटेप और लाइलॉन के बोरे मिले।

केन्या में इन दिनों लिंग आधारित हिंसा और राजनीतिक उथल-पुथल के बीच यह केस सामने आया है। ऐसे में विपक्षी दलों का यह भी कहना है कि सरकार प्रमुख मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए इस मामले को तूल दे रही है। दरअसल नैरोबी के एक स्लम में जब 9 कंकाल पाए गए तब मामले की छानबीन शुरू हुई। यहां स्थानीय लोग कूड़ा फेंका करते थे। उस में खालुशा शवों को

फेंक जाता था। इसके बाद पास ही रहने वाले खालुशा ने स्वीकार किया कि वह महिलाओं को लालच देता है और फिर हत्या करके फेंक देता है।

कोर्ट में बताया गया कि खालुशा ने अपना जुर्म कबूल किया है। उसने 2022 से अब तक 42 महिलाओं की हत्या की जिसमें उसकी पत्नी भी शामिल है। खालुशा के घर से पुलिस को कई सारे मोबाइल फोन, आई कार्ड, नाइलॉन के बोरे मिले। खालुशा की शिकार हुई महिलाओं में 26 साल की जोसेफीन ओविनो भी थीं। एक दिन उन्हें एक फोन आया और इसके बाद वह लापता हो गईं। उनकी बहन पेरिस केया ने उनको ढूंढना शुरू किया और फिर पता चला कि कूड़े के ढेर पर उनका शव पाया गया।

फॉरेंसिक जांच में पता चला कि ज्यादातर शवों के धड़ मौजूद थे लेकिन सिर गायब थे। केवल एक पूरा शवपाया गया था। किसी भी शव पर गोलियों के निशान नहीं थे। एक का गला दबाकर मारा गयाथा। अब केन्या की पुलिसी की भी जमकर आलोचना हो रही है। लोगों का कहना है कि इतने दिनों मे पुलिस एक भी लापता महिला की तलाश नहीं कर पाई और ना ही उसे सीरियल किलर के बारे में पता चला। वहीं जहां शव फेंके जाते थे वह जगह पुलिस स्टेशन के ही पा है।

बता दें कि केन्या पहले से ही आर्थिक और राजनीतिक समस्या से जूझ रहा है। लोग भ्रष्टाचार और कर बढ़ाने को लेकर सरकार के खिलाफ सड़क पर उतर चुके हैं। ऐसे में कहा जा रहा है कि प्रशासन खालुशा के केस के जरिए लोगों का ध्यान बांटना चाहता है। खालुशा के वकील ने कोर्ट में कहा कि उसकी मानसिक स्थिति और स्वास्थ्य पर गौर करना चाहिए। कोर्ट ने खालुशा के हिरासत की अवधि बढ़ा दी है।

न्यूयॉर्क में स्काई डाइविंग के दौरान प्लेन क्रैश, पायलट की मौत

न्यूयॉर्क , एजेंसी। न्यूयॉर्क के नियाग्रा काउंटी में स्काईडाइविंग के दौरान विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। संघीय उड्डयन प्रशासन ने एक बयान में कहा कि स्काईडाइविंग के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सिंगल-इंजन सेसना 208बी विमान न्यूयॉर्क के यंगस्टाउन के पास लेक रोड के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

गोताखोरों को छोड़ने के बाद वापसी में हुआ हादसा: सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, घटना के बाद न्यूयॉर्क के अधिकारियों ने शनिवार को जांच शुरू की। दरअसल, स्काईडाइव द फॉल्स स्काईडाइविंग केंद्र से विमान ने सभी गोताखोरों को छोड़ दिया था और वापस उतरने की ओर बढ़ रहा था, तभी यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

पायलट की हुई मौत: एफएए के प्रवक्ता टैमी एल. जोन्स ने कहा कि विमान में एकमात्र व्यक्ति पायलट था, जो दुर्घटना में मारा गया। उसने दुर्घटना से पहले पैराशूट खोलने की कोशिश की थी। हालांकि, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है कि दुर्घटना से पहले विमान में कितने गोताखोर सवार थे, नियाग्रा काउंटी के शेरिफ माइकल फिलिसेटी ने शनिवार को एक समाचार सम्मेलन में कहा। बाद में, दुर्घटना स्थल के आसपास कथित तौर पर आग भी लग गई।

फिलिसेटी ने कहा कि प्रारंभिक प्रतिक्रिया दल को ÷उस समय एक महत्वपूर्ण आग÷ बुझानी पड़ी। शेरिफ ने विमान दुर्घटना को ÷एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना÷ कहा और कहा कि स्थानीय और संघीय कानून प्रवर्तन भागीदार यह पता लगाने के लिए काम कर रहे हैं कि दुर्घटना का कारण क्या था।

मलेशिया के नए सम्राट सुल्तान इब्राहिम की तोपों की सलामी के साथ की ताजपोशी

कुआलालंपुर, एजेंसी। मलेशिया के नए अरबपति सम्राट सुल्तान इब्राहिम इस्कंदर की शनिवार को परंपरा के अनुरूप तोपों की सलामी समेत पूरे धूमधाम के साथ ताजपोशी की गई। उन्होंने पांच साल के कार्यकाल के दौरान निष्पक्ष रूप से शासन करने का संकल्प लिया। वह एक अद्वितीय 'परिवर्तनशील राजशाही प्रणाली के तहत काम करेंगे। सुल्तान इब्राहिम (65) ने 31 जनवरी को शपथ ली थी। यहां के 'नेशनल पैलेस में आयोजित एक भव्य समारोह में 20 जुलाई को सुल्तान इब्राहिम इस्कंदर का औपचारिक रूप से मलेशिया के 17वें सम्राट के रूप में राज्याभिषेक किया गया।

नौ जातीय मलय राज्य के शासक देश की 'परिवर्तनशील राजशाही के तहत पांच साल के लिए मलेशिया के सम्राट बनते हैं,

जिसकी शुरुआत 1957 में मलेशिया को ब्रिटेन से आजादी मिलने के बाद हुई थी। मलेशिया में 13 राज्य हैं लेकिन केवल नौ में शाही परिवार हैं, कुछ राज्यों की जड़ें सदियों पुराने मलय साम्राज्य से जुड़ी हैं जो अंग्रेजों द्वारा एक साथ लाए जाने तक स्वतंत्र राज्य थे। काले और सुनहरे रंग की पारंपरिक औपचारिक पोशाक और टोपी पहने सुल्तान इब्राहिम और रानी रजा जरीथ सोफिया को सिंहासन पर आसीन होने से पहले सैन्य सलामी दी गई। अन्य शाही परिवारों के प्रमुख, ब्रुनेई के सुल्तान हसनल बोलकिया और बहरीन के सुल्तान हमद ईसा अल खलीफा सिंहासन के बगल में एक मंच पर बैठे थे।

ताजपोशी की रस्म की शुरुआत में सुल्तान को कुरान की एक प्रति भेंट की गई जिसको उन्होंने चूम लिया। नये सम्राट को शक्ति का प्रतीक एक 'सोने का खंजर प्राप्त हुआ। प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम ने अपनी सरकार की निष्ठा का संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि शाही संस्था राष्ट्र की ताकत का एक स्तंभ है। इसके बाद उन्होंने सुल्तान इब्राहिम को मलेशिया का नया सम्राट घोषित किया। सुल्तान इब्राहिम ने अपने राज्याभिषेक भाषण में कहा, ''ईश्वर की इच्छा से, मैं अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक और ईमानदारी से पालन करूंगा और निष्पक्ष शासन करूंगा। उन्होंने अनवर की सरकार से लोगों की आजीविका में सुधार और देश के विकास को बढ़ावा देने के प्रयास तेज करने का भी आग्रह किया। सुल्तान के शपथ लेने के बाद हॉल में मौजूद मेहमानों ने तीन बार 'सम्राट अमर रहें के नारे लगाए। सिंगापुर की सीमा से लगे दक्षिणी जोहोर राज्य के सुल्तान इब्राहिम देश के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक हैं, जिनका व्यापार टेलीकॉम से लेकर रियल एस्टेट तक फैला हुआ है। नये सम्राट शानदार कारों और मोटरबाइक के अपने संग्रह के लिए जाने जाते हैं और उनके पास खुद की एक छोटी सी निजी सेना (आधुनिक मलेशिया में शामिल होने पर उनके राज्य को यह रियायत दी गई थी) है। सुल्तान मलेशियाई राजनीति के बारे में मुखर रहे हैं और उन्होंने भ्रष्टाचार और नस्ली भेदभाव के बारे में भी बात की है।

हवाई हमले में मारी गई महिला के गर्भ से जन्मा जिंदा बच्चा, मासूम को बिन मां के काटना होगा जीवन

दीर अल-बलाह, एजेंसी। इजराइल की ओर से मध्य गाजा के शरणार्थी शिविरों पर शनिवार रात किये गये तीन हवाई हमलों में कम से कम 13 लोग मारे गए, लेकिन हमले में जान गंवाने वाली एक फलस्तीनी महिला के गर्भ में पल रहे बच्चे का चिकित्सकों के प्रयास से सकुशल जन्म हो सका। फलस्तीन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने हमले में 13 लोगों की मौत की पुष्टि की है। इस बीच काहिरा में इजराइल और हमास के बीच संघर्ष विराम वार्ता में प्रगति होती दिख रही है। शवों को पास के अल-अक्सा शहीद अस्पताल में ले जाने वाली फलस्तीन की एम्बुलेंस टीम के अनुसार, नुसीरात शरणार्थी शिविर और ब्यूरिज शरणार्थी शिविर के मृतकों में तीन बच्चे और एक महिला शामिल थी। पत्रकारों ने अस्पताल में 13 लाशों की गिनती की। युद्ध से तबाह गाजा में हताहतों की अद्यतन संख्या के बाद आशा का एक दुर्लभ क्षण तब आया, जब बृहस्पतिवार देर शाम नुसीरात में हवाई हमले की चपेट में आए एक घर में रहने वाली गर्भवती फलस्तीनी महिला के दम तोड़ने के बाद उसके गर्भ से चिकित्सा दल ने एक जीवित बच्चे को बरामद किया। हमले के दौरान विस्फोट में गर्भवती महिला ओला-अल-कुर्द (25) ने छह अन्य लोगों के साथ दम तोड़ दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129